धर्म्म पुस्तकके इतिहास।

दूसरा भाग।

नये नियमका इतिहास।

SECOND EDITION.



RANCHI

PRINTED AND PUBLISHED BY THE REV. C. MEHL AT THE

G. E. L. MISSION PRESS.

1907.

5000 Copies.

बहुत चौकसे पढ़िये ।

नया नियम ।

(लूक १)

१, योहन बपतिस्मा देनेहारेके जन्मका संदेश ।

१. ग. योहनके माता पिता । यहूदा देशके राजा हेरोदके दिनोंमें जकरिया नाम एक याजक था । उसकी पत्नीका नाम एलिशबा था । वे ईश्वरके सन्मुख धर्म्मी थे । परन्तु उनका कोई लड़का न था, और वे दोनों बूढ़े थे । एक दिन जब जकरिया याजकका काम करता था, तब उसको मन्दिरमें जाके धूप जलाना पड़ा । और धूप जलानेके समय सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती थी ॥

२. ग. गब्रिएलका जकरियाको संदेश पहुंचाना । तब परमेश्वरका एक दूत उसको दिखाई दिया । जकरिया उसे देखके डर गया । पर दूतने कहा, "हे जकरिया मत डर, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है । और तेरी स्त्री एलिशबा पुत्र जनेगी । तू उसका नाम योहन रखना । तुझे आनन्द और आल्हाद होगा । और बहुत लोग उसके जन्मसे आनन्दित होंगे । क्योंकि वह परमेश्वरके सन्मुख बड़ा होगा और अपनी माताके गर्भहीसे पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होगा । वह इसरायलके सन्तानोंमेंसे बहुतोंको परमेश्वर उनके ईश्वरकी ओर फिरावेगा और उसके (प्रभुके) आगे एलीयाके आत्मा और सामर्थ्यसे जायगा, इस लिये कि प्रभुके लिये एक सजे हुए लोगका तैयार करे ॥

३. ग. जकरियाके संदेहका दंड । जकरियाने दूतसे कहा, "यह मैं किस रीतिसे जानूं" ? दूतने उत्तर दिया कि "मैं गब्रिएल हूं, जो ईश्वरके सामने खड़ा रहता हूं । और मैं तुझे यह सुसमाचार सुनानेको भेजा गया हूं । देख जिस दिनलों यह सब पूरा न हो जाय, उस दिनलों तू गूंगा हो रहेगा, क्योंकि तूने मेरी बातोंपर बिश्वास न किया" ।—लोग जकरियाकी बाट देखके अचम्भा करते थे, कि उसने मन्दिरमें बिलम्ब किया । जब वह बाहर आया

तब बोल न सका और उन्होंसे सैन करने लगा। तब उन्होंने मालूम किया, कि उसने मन्दिरमें कोई दर्शन पाया है॥

मार्क ९, २३. जो तू विश्वास कर सके। विश्वास करनेहारेके लिये सब कुछ हो सक्ता है।
अक्षुपर आज्ञा छोड़ो इत्यादि। साखी. ६७, २। १ भाखा। २. बिनती॥

---

२. यीशु ख्रीष्टके जन्मका संदेश।

(लूक १ और मत्ती १.)

१, ग. गब्रिएलका मरियमको नमस्कार करना। उसके पीछेके ६ वें महीनेमें ईश्वरने गब्रिएल दूतको गलील देशके नासरत नगरमें एक कुंवारीके पास भेजा। उस कुंवारीका नाम मरियम था। और उसकी मंगनी यूसफ नाम दाऊदके घरानेके एक पुरुषसे हुई थी। दूतने घरमें प्रवेश करके उससे कहा, "हे अनुग्रहीत कल्याण, परमेश्वर तेरे संग है। स्त्रियोंमें तू धन्य है"। मरियम इस वचनसे घबरा गई और सोचने लगी कि "यह कैसा नमस्कार है"॥

२, ग. गब्रिएलका मरियमको संदेश देना। तब दूतने उससे कहा, "हे मरियम, मत डर, क्योंकि ईश्वरका अनुग्रह तुझपर है। तू पुत्र जनेगी और उसका नाम यीशु (बचानेवाला, मुक्तिदाता) रखना। वह महान होगा और सर्वप्रधानका पुत्र कहावेगा। परमेश्वर ईश्वर उसके पिता दाऊदका सिंहासन उसको देगा। वह याकूबके घराने-पर सदा राज्य करेगा। और उसके राज्यका अन्त न होगा"। मरियमने कहा, "यह किस रीतिसे होगा, क्योंकि मैं बिवाहित नहीं हूं"? दूतने उत्तर दिया कि "पवित्र आत्मा तुझपर आवेगा, और सर्वप्रधानकी शक्ति तुझपर छाया करेगी, इस लिये वह पवित्र बालक ईश्वरका पुत्र कहावेगा"। मरियमने कहा, "देखिये, मैं परमेश्वरकी दासी हूं मुझे आपके वचनके अनुसार होवे"। और दूत उसके पाससे चला गया—एक दूतने स्वप्नमें यूसफको दर्शन देके कहा, "हे यूसफ, तू अपनी स्त्री मरियमको अपने यहां लानेसे मत डर, क्योंकि उसको जो गर्भ रहा है, सो पवित्र आत्मासे है। वह पुत्र

जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगोंको उनके पापोंसे बचावेगा" ॥

ग. प्रेरित ४, १२ किसी दूसरेसे त्राण नहीं है, क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है, जो मनुष्योंके बीचमें दिया गया है, जिससे हम त्राण पाना होगा ।
मैं कैसे तुझ भेटूं इत्यादि-साखी. १२, १ । २. निर्णय । ३ बिन्ती ।

३, ग. मरियमका इलिशबाके पास पाहुन होना । उन दिनोंमें मरियम उठके जकरियाके घरमें गई और इलिशबाको नमस्कार किया, तब इलिशबाने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके बड़े शब्दसे कहा, "तू स्त्रियोंमें धन्य है । यह मुझे कहांसे हुआ, कि मेरे प्रभुकी माता मेरे पास आवे । हे बिश्वास करनेहारी तू धन्य है" ॥

४, ग. मरियमका स्तुति गीत । तब मरियमने कहा, "मेरा प्राण परमेश्वरकी महिमा करता है । और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वरसे आनन्दित हुआ है, क्योंकि उसने अपनी दासीकी दीनताईपर दृष्टि किई है । सर्वशक्तिमानने मेरे लिये महान कार्य्योंको किया है । उसका नाम पवित्र है । उसकी दया उन्होंपर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ीसे पीढ़ीलों नित्य रहती है । उसने जैसे हमारे पितरोंसे कहा, तैसे अपनी दया स्मरण करके अपने सेवक इसराएलका उपकार किया है" । मरियम ३ मासके अटकल इलिशबाके पास रही और फिर अपने घरको लौटी ॥

ग. गीत १०३, १ + २ हे मेरे प्राण, परमेश्वरको धन्य कह और सब, जो मुझमें है, उसके पवित्र नामको । हे मेरे प्राण, परमेश्वरको धन्य कह और उसके सारे उपकारोंको न भूल ।
अब मन और मुख और हाथ इत्यादि-साखी. ९, १ + ३ । ३. आज्ञा ॥

२, योहन बपतिस्मा देनेहारेका जन्म ।

(लूक १.)

१, ख. योहनका जन्म और नाम पाना । उसके पीछे इलिशबाका पुत्र जनी । और उसके पड़ोसियों और कुटुम्बोंने यह सुनके, कि परमेश्वरने उसपर बड़ी दया किई है, उसके संग आनन्द किया । और उन्होंने उसके पिताके नामके अनुसार उसका नाम जकरिया रखने चाहा । परन्तु उसकी माताने कहा,

"सो नहीं, परन्तु उसका नाम योहन रखा जायगा"। उन्होंने कहा, "आपके कुटुम्बोंमेंसे कोई नहीं है, जो इस नामसे कहावता है"। और उसके पितासे सैन किया, कि "आप क्या चाहते हैं, कि उसका नाम रखा जाय"? उसने पटिया मंगाके यह लिखा कि "उसका नाम योहन है"। इससे वे सब अचम्भित हुए॥

२, ख. जकरियाका स्तुति गीत। तब जकरियाका मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई। और वह पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके यह भविष्यद्वाणी बोला कि "परमेश्वर इसराएलका ईश्वर धन्य होवे, कि उसने अपने लोगोंपर दृष्टि कर उन्होंका उद्धार किया है। और जैसा उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे, जो आदिसे होते आये हैं, कहा, तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊदके घरानेमें एक त्राणके सींगको, अर्थात एक बचानेहारेको प्रगट किया है। और तू हे बालक, सर्व्वप्रधानका भविष्यद्वक्ता कहावेगा, क्योंकि तू परमेश्वरके आगे जायगा, कि उसके पन्थ बनावे"। — योहन बढ़ा और आत्मामें बलवन्त होता गया और इसराएली लोगोंपर प्रगट होनेके दिनलों जंगली स्थानोंमें रहा॥

ख. गीत ३३, ४. परमेश्वरका वचन ठीक है, और उसका सारा कार्य्य सच्चाईके साथ किया गया।
प्रशंसा स्तुति महिमा इत्यादि साखी. २, २। ३. आज्ञा।

ग. मलाखी ३, १. देख मैं अपने दूतको भेजूंगा, और वह मेरे आगे मार्गको सिद्ध करेगा। और प्रभु, जिसे तुम खोजते हो, अचानक अपने मन्दिरमें आवेगा, अर्थात वाचाका दूत, जिससे तुम प्रसन्न हो।
मैं कैसे तुझे भेंटूं इत्यादि-साखी. १२, १। २. बिन्ती।

४. त्राणकर्त्ताका जन्म।

(लूक २.)

क. जन्मका समय और स्थान। उन दिनोंमें अगस्त महाराजाकी ...म आज्ञा हुई, कि उसके राज्यके सब लोगोंके नाम लिखे जावें। और ...लोग नाम लिखानेको अपने २ नगरको गये। यूसफ भी अपनी दुलहिन ...रयमके संग नाम लिखानेको नासरत नगरसे यहूदियाके बैतलहम नाम

दाऊदके नगरको गया, इस लिये कि वे दाऊदके वंशके थे । उनके वहां रहते सुदिन पूरा हुआ । और मरियम अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसको कपड़ेमें लपेटके चरनीमें रखा, क्योंकि उनके लिये सरायमें जगह न थी ॥

२ क. स्वर्ग दूतोंका गड़ेरियोंको त्राणकर्त्ताके जन्मका संदेश देना । उस देशमें कितने गड़ेरिये थे, जो खेतमें रहते थे और रातको अपने झुंडका पहरा देते थे । और देखो, परमेश्वरका एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और परमेश्वरका तेज उनकी चारों ओर चमका । और वे बहुत डर गये । दूतने उनसे कहा, "मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्दका सुसमाचार सुनाता हूं, जिससे सब लोगोंको आनन्द होगा, कि आज दाऊदके नगरमें तुम्हारे लिये एक त्राणकर्त्ता, अर्थात खृष्ट प्रभु जन्मा है । और तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालकको कपड़ेमें लपेटे हुए और चरनीमें पड़े हुए पाओगे" ॥

३, क. स्वर्ग-दूतोंका स्तुति गीत । तब अचांचक स्वर्गीय सेनामेंसे बहुतेरे उस दूतके संग प्रगट हुए और ईश्वरकी स्तुति करते हुए बोले, "सबसे ऊंचे स्थानमें ईश्वरका गुणानुवाद, और पृथिवीपर शान्ति होवे, मनुष्योंपर प्रसन्नता है" ॥

४, क. गड़ेरिये चरनीके पास । ज्योंही दूतगण उन्होंके पाससे स्वर्गको गये, त्योंही गड़ेरियोंने आपसमें कहा, "आओ, हम बैतलहमको जाके यह बात, जो हुई है, जिसे परमेश्वरने हमोंको बताया है, देखें" । और उन्होंने शीघ्र जाके मरियम और यूसफको और बालकको चरनीमें पड़े हुए पाया । इन्हें देखके उन्होंने वह बात, जो इस बालकके विषयमें उन्होंसे कही गई थी, प्रचार किई । और सब सुननेहारे उन बातोंसे, जो गड़ेरियोंने उनसे कहीं, अचम्भित हुए । परन्तु मरियमने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा और उन्हें सोचती रही । और गड़ेरिये सब बातको सुनके और देखके ईश्वरका गुणानुवाद और स्तुति करते हुए लौट गये ॥

क. योहन ३, १६. ईश्वरने जगतको ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया । कि जो कोई उसपर विश्वास करे, सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे ॥
जो स्वर्गपरसे मैं आता हूं इत्यादि-साखी. १५, १-१२ । ३. आज्ञा ।

ख. १ तिम: १, १५. यह वचन विश्वास योग्य और सर्वथा ग्रहण योग्य है कि खीष्ट यीशु पापियोंको बचानेके लिये जगतमें आया ।
पाप आदि विश्वासियों इत्यादि-बातों. १९, १-४ । २. निर्णय ।

ग. यश: ९, ५+६. हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमको एक पुत्र दिया गया । और प्रभुता उसके कांधेपर है । और उसका नाम आश्चर्य्य मंत्री, सर्व्वशक्तिमान, सनातनका पिता, कुशलका प्रधान कहलाता है । उसके राज्यकी बढ़ती और कुशलका अन्त न होगा । जिसका तो वर्णन हुआ इत्यादि-बातों. १६, १-४ । २. विनती ॥

---

५. यीशु बालकका ईश्वरके आगे धरा जाना ।

(लूक २.)

१, ख. यीशु बालकका नाम पाना और मन्दिरमें पहुंचाया जाना । जब आठ दिन पूरे होनेसे बालकका खतना करना हुआ तब उसका नाम यीशु रखा गया, कि यह नाम उसके गर्भमें पड़नेके आगे दूतसे रखा गया था । — फिर ४० दिन पूरे होनेसे यूसफ और मरियम बालकको यिरूशलीममें ले गये, कि उसे परमेश्वरके आगे धरें ॥

२, ख. शीमियोनका धन्यवाद । तब देखो यिरूशलीममें शीमियोन नाम एक मनुष्य था, जो धर्म्मी और भक्त था और इसराएलकी शान्तिकी बाट जोहता था । और पवित्र आत्मा उसपर था । पवित्र आत्मासे उसको प्रतिज्ञा दिई गई थी कि "जबलों तू परमेश्वरके अभिषिक्त जनको न देखे, तबलों मृत्युको न देखेगा" । वह आत्माकी शिक्षासे मन्दिरमें आया । और जब यूसफ और मरियम यीशुको भीतर लाये, तब शीमियोनने उसको अपनी गोदमें लेके ईश्वरका धन्यवाद कर कहा, "हे प्रभु अभी तू अपने वचनके अनुसार अपने दासको कुशलसे बिदा करता है, क्योंकि मेरी आंखोंने तेरे त्राणकर्त्ताको देखा है, जिसे तूने सब देशोंके लोगोंके सन्मुख तैयार किया है, कि वह अन्यदेशियोंको प्रकाश करनेको ज्योति और तेरे इसराएली लोगका तेज होवे" । यूसफ और मरियम इन बातोंसे, जो यीशुके विषयमें कही गईं, अचम्भा करते थे ॥

३, ख. शीमियोनकी भविष्यद्वाणी । और शीमियोनने मरियमको आशीष देके उससे कहा, "देख, यह तो इसराएलमें बहुतोंके गिरने

१ बरस खीष्टसे पीछे ।

और गिर उठनेका कारण होगा, और एक चिन्ह, जिसके विरोधमें बातें किई जायेंगीं। हां तेरा निज प्राणभी खड्गसे वारपार छिदैगा। इससे बहुत हृदयोंके विचार प्रगट किये जायेंगे"।

४, ख. हन्ना भविष्यद्वक्त्री। वहां हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्त्री भी थी, जो बरस चौरासी एककी विधवा थी। वह मन्दिरसे बाहर न जाती थी, परन्तु उपवास और प्रार्थनासे रात दिन सेवा करती थी। उसने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वरका धन्यमाना और यिरूशलीममें, जो लोग उद्धारकी बाट देखते थे, उन सभोंसे यीशुके विषयमें बात किई॥

५, ख.* घरको लौटना। जब यूसफ और मरियम व्यवस्थाके अनुसार सब कुछ कर चुके, तब अपने घरको लौटे। और बालक बढ़ा, आत्मामें बलवन्त और बुद्धिसे परिपूर्ण होता गया। और ईश्वरका अनुग्रह उसपर था॥

ख. रोमी ८, १४. जितने लोग ईश्वरके आत्माके चलाये चलते हैं, वेही ईश्वरके पुत्र हैं।
दान जो उत्तम पावन आत्मा इत्यादि-साखी ६४, ३। २ + ३. निर्णय।

ग. फिलिपी २, ५-७ तुम्हेंामें यही मन होवे, जो खीष्ट यीशुमें भी था, जिसने ईश्वरके रूपमें होके ईश्वरके तुल्य होना डकैती न समझा, परन्तु अपने तईं हीन करके दासका रूप धारण किया और मनुष्योंके समान बना।
वह जगमें उतरा जो सदा इत्यादि-साखी. १८, ३॥

---

६. ज्योतिषी लोग।

(मत्ती २.)

१, क. ज्योतिषियोंका यिरूशलीममें पहुंचना। जब यीशुका जन्म हुआ, तब देखो, पूर्व्वसे कितने ज्योतिषी यिरूशलीममें आये और बोले, "यहूदियोंका राजा, जिसका जन्म हुआ है, कहां है? हमने पूर्व्वमें उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आये हैं"। यह सुनके हेरोद राजा और उसके साथ सारे यिरूशलीमके निवासी घबरा गये। और हेरोदने सब प्रधान याजकों और अध्यापकोंको एकट्ठे कर उनसे पूछा, "खीष्ट कहां जन्मेगा"? उन्होंने उससे कहा, "यहूदियाके बैतलहम नगरमें, क्योंकि भविष्यद्वक्ताके द्वारा यों लिखा गया है (मिका ५, २), कि हे यहूदा देशके बैतलहम, तू किसी

रीतिसे यहूदाकी राजधानियोंमें सबसे छोटा नहीं है, क्योंकि तुझ-मेंसे एक अधिपति निकलेगा, जो मेरे इस्राएली लोगका चरवाहा होगा"। तब हेरोदने ज्योतिषियोंको चुपकेसे बुलाके उन्हें यत्नसे पूछा, कि तारा किस समय दिखाई दिया। और उसने यह कहके उन्हें बैतलहम भेजा, कि "जाके उस बालकके विषयमें यत्नसे बूझो, और जब उसे पाओ तब मुझे संदेश देओ, कि मैं भी आके उसको प्रणाम करूं"॥



२, क. ज्योतिषियोंका बालकको प्रणाम करना। वे राजाकी सुनके चले गये। और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व्वमें देखा था, सो उनके आगे २ चला, यहांलों कि जहां बालक था, उस स्थानके ऊपर पहुंचके ठहर गया। तब वे अत्यन्त आनन्दित हुए। और घरमें पहुंचके उन्होंने बालकको उसकी माता मरियमके संग देखा, दण्डवत कर उसे प्रणाम किया, और अपनी सम्पत्ति खोलके उसको सोना, लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई। और स्वप्नमें ईश्वरसे यह आज्ञा पाके, कि हेरोदके पास फिर मत जाओ, वे दूसरे मार्गसे अपने देश-को चले गये॥

३, क. मिसरको भागना। उनके जानेके पीछे देखो, परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमें यूसफको दर्शन दे कहा, "उठ, बालक और उसकी माताको लेके

मिसर देशको भाग जा, और जबलों मैं तुझे न कहूं, तबलों वहीं रह, क्योंकि हेरोद नाश करनेके लिये बालकको ढूंढ़ेगा"। वह उठ रातहीको बालक और उसकी माताको लेके मिसरको चला गया ॥



४, क. हेरोद्का बैतलहमके बालकोंको घात करना। जब हेरोदने देखा, कि ज्योतिषियोंने मुझे ठग दिया है, तब अति क्रोधित हुआ और लोगोंको भेजके बैतलहममें और उसके सारे सिवानोंमेंके सब बालकोंको, जो दो बरसके और जो दो बरससे छोटे थे, मरवा डाला ॥

५, क. मिसरसे फिर आना। हेरोदके मरनेके पीछे देखो, परमेश्वरके एक दूतने मिसरमें यूसफको स्वप्नमें दर्शन दे कहा, "उठ बालक और उसकी माताको लेके इसराएल देशको जा, क्योंकि जो लोग बालकका प्राण लेने चाहते थे, सो मर गये हैं"। तब वह उठ बालक और उसकी माताको लेके इसराएलके देशमें आया। और जब उसने सुना, कि आर्खिलाव अपने पिता हेरोदके स्थानमें यहूदियाका राजा हुआ है, तब वहां जानेसे डरा, और स्वप्नमें ईश्वरसे आज्ञा पाके गलीलके सिवानोंमें गया, और नासरत नाम नगरमें आके बास किया, कि जो वचन भविष्यद्वक्ताओंसे कहा गया था (यशयियाह ११, १ यरमियाह २३, ५) कि वह नासरी कहावेगा, सो पूरा होवे ॥

क. गीत १४५, २०. परमेश्वर अपने प्रेमियोंका रक्षक है, और सारे दुष्टोंको नाश करेगा ।

आज मुझको घेरे तेरा हाथ इत्यादि-साक्षी. १०५, ३-५ । ई. आज्ञा ।

ख. यश: २८, २९. परमेश्वर मंत्रमें आश्चर्य्यित, बुद्धिमें महान है॰। जितने महान हैं सम्पूर्ण पृथिवीपर इत्यादि-साक्षी. ५, २ + ३ । १. निर्णय — सब जोखिमसे बचाता इत्यादि ।

ग. रोमी ८, ३१. यदि ईश्वर हमारी ओर है, तो हमारे विरुद्ध कौन होगा ।
मार्गो तेरे हर प्रकारके इत्यादि-साक्षी. ९७, ४ + ५॰।॰३. विन्ती ॥

७, बारह बरसका यीशु मन्दिरमें ।

(लूक २.)

१, क. यीशु लड़केका निस्तार पर्व्वके लिये यिरूशलीममें जाना । यीशुके माता पिता बरस २ निस्तार पर्व्वमें यिरूशलीमको जाते थे जब यीशु १२ बरसका हुआ, तब वह भी उनके संग गया । जब पर्व्वके दिन पूरे हुए और यूसफ और मरियम लौटने लगे, तब लड़का यीशु यिरूशलीममें रह गया । परन्तु वे यह समझके कि वह संगवाले पथिकोंके बीचमें है, एक दिनकी बाट गये और अपने कुटुम्बों और चिन्हारोंके बीचमें उसको ढूंढ़ने लगे । परन्तु जब उन्होंने उसको न पाया तब उसे ढूंढ़ते हुए यिरूशलीमको फिर गये ॥



२, क. यीशु लड़का ईश्वरके घरमें । तीन दिनके पीछे उन्होंने उसे मन्दिरमें पाया, कि उपदेशकोंके बीचमें बैठा हुआ उनकी सुनता और उनसे प्रश्न करता था । और जो लोग उसकी सुनते थे, वो सब उसकी बुद्धि और उत्तरोंसे विस्मित हुए । तब उसकी माताने उससे कहा, "हे पुत्र, क्यों हमसे ऐसा किया ? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे" । उसने

उनसे कहा, "तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे, क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिताके विषयमें लगा रहना अवश्य है" ? परन्तु उन्होंने यह बात न समझी ॥

२, ख. यीशु लड़का माता पिताके घरमें। तब वह उनके संग नासरतको गया और उनके वशमें रहा। उसकी माताने इन सब बातोंको अपने मनमें रखी। यीशुकी बुद्धि और डील, और उसपर ईश्वरका और मनुष्योंका अनुग्रह बढ़ता गया ॥

क. इफिसी ६, १-३. हे लड़को, प्रभुमें अपने २ माता पिताकी आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिताका आदर कर, कि यह प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा है, जिस्से तेरा भला हो, और तू भूमिपर बहुत दिन जीवे।
हे ईश्वर देख इस लड़केको इत्यादि-साक्षी. ४७, १ । ४ + ५. आज्ञा।

ख. गीत २६, ८. हे परमेश्वर, मैंने तेरे घरके निवास और तेरे विभवके तम्बूके स्थानसे प्रेम रखा है।
अनुग्रहका एक लक्षण इत्यादि-साक्षी. ४४, १-३।

ग. गीत ८४, २ + ३. हे परमेश्वर सेनाओंके ईश्वर, तेरे तम्बू कैसे मनभावने हैं। मेरा प्राण परमेश्वरके आंगनोंके लिये अभिलाषी और मूर्छित भी है। मेरा मन और मेरा तन जीवते सर्वशक्तिमानके लिये आनन्दका शब्द करता है।
जो न चलता पापका मत इत्यादि-साक्षी. ४५, १-३ । १. बिन्ती ॥

८. योहन बपतिस्मा देनेहारा।

यीशुका बपतिस्मा।

(मत्ती ३. मार्क १. लूक ३. योहन १.)

१, ग. योहनका सभोंको पश्चात्तापका उपदेश देना। तिबरिय कैसरके राज्यके १५ वें बरसमें ईश्वरका बचन जंगलमें योहनके पास आया। और उसने यर्दन नदीके आस पासके सारे देशमें आके पापमोचनके लिये पश्चात्तापके बपतिस्माका उपदेश करके कहा कि "पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया है"। यह वही है, जिसके विषयमें यशयियाह भविष्यद्वक्ताने कहा, "किसीका शब्द हुआ, जो जंगलमें पुकारता है, कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ, उसके राज मार्ग सीधे करो, और सब प्राणी ईश्वरके त्राणको देखेंगे"। योहनका वस्त्र ऊंटके रोमका था

उसकी कटिमें चमड़ेका पटुका बांधा था। और उसका भोजन टिड्डियां और वन मधु था। तब यिरूशलीमके सारे यहूदियाके और यर्दन नदीके आस पासके सारे देशके रहनेहारे उस पास निकल आये। और सभोंने अपने पापोंको मानके यर्दन नदीमें उससे बपतिस्मा लिया॥

२, ग. पश्चात्तापियोंके लिये धमकी। जब उसने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियोंको उससे बपतिस्मा लेनेको आते देखा, तब उनसे कहा "हे सांपोंके वंश, किसने तुम्हें आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है? पश्चात्तापके योग्य फल लाओ, और अपने २ मनमें मत कहने लगो, कि हमारा पिता इब्राहीम है, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, कि ईश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। अब टांगा पेड़ोंकी जड़पर लगा है, इस लिये जो २ पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है, सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है"॥

३, ग. पश्चात्तापियोंके लिये चितावनी। और लोगोंने उससे पूछा, "तो हम क्या करें"? उसने उन्हें उत्तर दिया कि "जिस पास दो अंगे हों, सो जिस पास न हो, उसके साथ बांट लेवे। और जिस पास भोजन होवे, सो भी वैसाही करे"। उसने कर उगाहनेहारोंसे कहा, "जो तुम्हें ठहराया गया है उससे अधिक मत लेओ"। योद्धाओंसे उसने कहा, "किसी पर उपद्रव मत करो, न झूठे दोष लगाओ और अपने बेतनसे सन्तुष्ट रहो"॥

४, ग. ख्रीष्टके विषयकी साक्षी। जब लोग अपने २ मनमें योहनके विषयमें बिचार करते थे, कि होय न होय, यही ख्रीष्ट है, तब उसने कहा कि "मैं तो तुम्हें पश्चात्तापके लिये जलसे बपतिस्मा देता हूं। परन्तु जो मेरे पीछे आता है, सो मुझसे अधिक शक्तिमान है, मैं उसके जूतोंका बन्धन खोलनेके योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्रात्मा और आगसे बपतिस्मा देगा"॥

ग. मार्क १, १५. समय पूरा हुआ है। ईश्वरका राज्य निकट आया है। पश्चात्ताप करो और सुसमाचारपर बिश्वास करो।
मैं कैसे तुझे भेंटूं इत्यादि-साखी १२, १। २ निर्णय, ४. भाग ४.।

५, ख. यीशुका योहनसे बपतिस्मा लेना। उस समयमें यीशु योहनसे बपतिस्मा लेनेको गालीलसे यर्दनके तीरपर आया। परन्तु योहन यह

कहके उसे बर्जने लगा कि "मुझे आपके हाथसे बपतिस्मा लेना अवश्य है, और क्या आप मेरे पास आते हैं" । यीशुने उसको उत्तर दिया, कि "अब ऐसा होने दे, क्योंकि इसी रीतिसे सब धर्मको पूरा करना हमें चाहिये" । तब योहनने होने दिया ॥



३, ख. आकाशवाणी । यीशु बपतिस्मा लेके तुरन्त जलसे ऊपर आके प्रार्थना करता था । और देखो, उसके लिये स्वर्ग खुल गया । और योहनने ईश्वरके आत्माको कपोतकी नाईं उतरते और उसपर आते देखा । और यह आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूं ॥

ख मार्क १६, १६. जो विश्वास करे और बपतिस्मा लेवे, सो त्राण पावेगा । परन्तु जो विश्वास न करे, सो दण्डके योग्य ठहराया जायगा ।
हे पावन आत्मा उतर कर इत्यादि-साखी. ४३. १ ।

ग. प्रेरित २, ३८. पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु खीष्टके नामसे बपतिस्मा लेओ, कि तुम्हारा पापमोचन होय, और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे ।
सच्चाईको तू सोता है इत्यादि-साखी. ४३, २ । ४ भाग ॥

---

९. यीशुकी परीक्षा ।

(मत्ती ४.)

१, ग. जंगलमें की परीक्षा । तब आत्मा यीशुको जंगलमें ले गया कि शैतानसे उसकी परीक्षा किई जाय । वह ४० दिन और ४० रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ । तब परीक्षा करनेहारेने उस पास आ कहा, "जो तू

ईश्वरका पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जावें"। उसने उत्तर दिया कि "लिखा है (विवाद ८, ३) मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परन्तु हर एक बातसे जो ईश्वरके मुखसे निकलती है, जीयेगा" ॥

२, ग. मन्दिरके कलशपरकी परीक्षा। तब शैतानने उसको पवित्र नगरमें ले जाके मन्दिरके कलशपर खड़ा किया और उससे कहा, "जो तू ईश्वरका पुत्र है, तो अपनेको नीचे गिरा, क्योंकि लिखा है (गीत ९१, ११+१२) कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा। और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, न हो, कि तेरे पांवमें पत्थरपर चोट लगे"। यीशुने उससे कहा, "फिर भी लिखा है (विवाद ६, १६) कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरकी परीक्षा मत कर" ॥

३, ग. एक अति ऊंचे पर्वतपरकी परीक्षा। फिर शैतानने उसे एक अति ऊंचे पर्वतपर ले जाके उसको जगतके सब राज्य और उनका विभव दिखाये और उससे कहा, "जो तू दंडवत कर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब तुझे देऊंगा"। तब यीशुने उससे कहा, "हे शैतान दूर हो, क्योंकि लिखा है (विवाद ६, १३) कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर"। तब शैतानने उसको छोड़ा। और स्वर्ग दूतोंने आ उसकी सेवा किई ॥

ग. इब्रीः ४, १५. हमारा ऐसा महायाजक नहीं है, जो हमारी दुर्बलताओंके दुःखको बूझ न सके, परन्तु बिना पाप वह हमारे समान सब बातोंमें परीक्षित हुआ है।
लड़ विश्वासका लड़न लड़ इत्यादि-साक्षी. ९०, १-५ । ४. विन्ती ॥

---

१०. यीशुके पहिले शिष्य।

(योहन १.)

१, ग. योहन, अन्द्रिय और पितर। एक दिन योहन बपतिस्मा देनेहारेने यीशुको अपने पास आते देखा और कहा, "देखो ईश्वरका मेम्ना, जो जगतके पापको उठा ले जाता है"। और योहनके शिष्योंमेंसे दो जन योहनकी बात सुनके यीशुके पीछे हो लिये। उनमेंसे एक तो अन्द्रिय था। उसने अपने भाई शीमोनको पाया और उससे कहा, "हमने मसीहको पाया है"।

और वह उसे यीशु पास लाया। यीशुने उसपर दृष्टिकर कहा, "तू यूनसका पुत्र शीमोन है। तू कैफा, अर्थात पितर (चटान) कहावेगा"।

२, ग. फिलिप और नथनेल। दूसरे दिन यीशुने फिलिपको पाके उससे कहा, "मेरे पीछे आ"। फिलिपने नथनेलको पाके उससे कहा, "जिसके विषयमें मूसा और भविष्यद्वक्ताओंने लिखा है, उसको हमने पाया है, अर्थात नासरत नगरके यीशुको"। नथनेलने कहा, "क्या कोई उत्तम वस्तु नासरतसे उत्पन्न हो सकती है"? फिलिपने कहा, "आके देखिये"। यीशुने नथनेलको अपने पास आते देखा और उसके विषयमें कहा, "देखो, यह सच मुच इसरा-एली है, जिसमें कपट नहीं है"। नथनेलने कहा, "आप मुझे कहांसे पहचानते हैं"। यीशुने उत्तर दिया कि "फिलिपके तुझे बुलानेके पहिले, जब तू गूलरके वृक्ष तले था, तब मैंने तुझे देखा"। नथनेलने कहा, "हे गुरु, आप ईश्वरके पुत्र हैं, आप इसरायलके राजा हैं"॥

३, ग. भविष्यद्वाणी। यीशुने कहा, "मैंने तुझसे कहा, कि मैंने तुझे गूलरके वृक्ष तले देखा। क्या तू इस लिये विश्वास करता है? तू इनसे बड़ी बात देखेगा। मैं तुमसे सच सच कहता हूं, इसके पीछे तुम स्वर्गको खुला और ईश्वरके दूतोंको मनुष्यके पुत्रके ऊपरसे चढ़ते उतरते देखोगे"।

ग. मार्क ८, ३४. जो कोई मेरे पीछे आने चाहे, सो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे।
खुलका शिष्य हो जाना इत्यादि-साक्षी. ८८, १+२। ३. निर्णय—मुझे मंगल समाचारके द्वारा बुलाया। २. विन्ती॥

---

११. यीशुका जलको दाखरस बनाना।

(योहन २)

१, क. भोजन देनेहारोंकी तकलीफ। उसके पीछे गलीलके काना नगरमें एक विवाहका भोज था। और यीशुकी माता वहां थी। यीशु भी और उसके शिष्य लोग उस विवाहके भोजमें बुलाये गये। जब दाखरस घट गया तब यीशुकी माताने उससे कहा, "उनके पास दाखरस नहीं है"। यीशुने

कहा, "मेरा समय अबलों नहीं पहुंचा है" । उसकी माताने सेवकोंसे कहा, "जो कुछ वह तुमसे कहे सो करो" ।

२, क. प्रभुकी सहायता । वहां पत्थरके छः मटके धरे थे । यीशुने सेवकोंसे कहा, "मटकोंको जलसे भर देओ" । सो उन्होंने उन्हें भर दिया । तब उसने उनसे कहा, "अब उंडेलो और भोजके प्रधानके पास ले जाओ" वे ले गये । जब भोजके प्रधानने वह जल, जो दाखरस बन गया था, चीखा और नहीं जानता था, कि वह कहांसे आया, तब उसने दुलहेसे कहा, "हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता है और पीछे मध्यमको । तूने अच्छा दाखरस अबलों रखा है" ।

यीशुने आश्चर्य्य कर्म्मोंका यह आरम्भ किया और अपनी महिमा प्रगट किई । और उसके शिष्योंने उसपर विश्वास किया ।

क. गीत १०६, १. परमेश्वरका धन्य मानो क्योंकि वुह भला है, क्योंकि उसकी दया सदालों है ।
धन्यवाद परमेश्वरको इत्यादि-साक्षी. ६, १ ।

ख. याकूब १, १७. हर एक अच्छा दान कर्म्म, और हर एक सिद्ध दान ऊपरसे उतरता है, अर्थात ज्योतियोंके पितासे, जिसमें न अदलबदल न फेरफारकी छाया है ।
धन्य है परमेश्वर इत्यादि-साक्षी. १०, ४ । १. निर्णय – इससे भिन्न प्रेमु ओढ़ना इत्यादि ।

ग. कल: २, ९. खीष्टमें ईश्वरत्वकी सारी पूर्णता सदेह वास करती है ।
मांगे तेरे हर प्रकारकी इत्यादि-साक्षी. ९७, ४ । ४. बिन्ती ॥

---

१२. निकोदीमसे यीशुकी बातचीत ।

(योहन ३.)

१, ग. नये जन्मकी आवश्यकता । निकोदीम नाम एक फरीशी, जो यहूदियोंका एक प्रधान था, रातको यीशु पास आया और उससे कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं कि आप ईश्वरकी ओरसे उपदेशक आये हैं, क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो आप करते हैं, जो ईश्वर उसके संग न हो, तो नहीं कर सकता है" । यीशुने उससे कहा, "मैं तुमसे सच २ कहता हूं, कोई यदि फिरसे न जन्मे, तो ईश्वरका राज्य नहीं देख सकता है" । निकोदीमने कहा, "मनुष्य

बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है" ? यीशुने उत्तर दिया, "मैं तुझसे सच २ कहता हूं कोई यदि जल और आत्मासे न जन्मे, तो ईश्वरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है। जो शरीरसे जन्मा है सो शरीर है । और जो आत्मासे जन्मा है सो आत्मा है। अचम्भा मत कर, कि मैंने तुझसे कहा, तुमको फिरसे जन्म लेना अवश्य है। पवन जहां चाहता है तहां बहता है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता है, वह कहांसे आता और किधरको जाता है। जो कोई आत्मासे जन्मा है सो इसी रीतिसे है" ॥

२, ग. नये जन्मका संभव। निकोदीमसने उससे कहा कि "यह बातें क्योंकर हो सकती है" ? यीशुने उत्तर दिया, "क्या तू इस्रायली लोगोंका उपदेशक है और यह बात नहीं जानता ? मैं तुझसे सच २ कहता हूं, हम जो जानते हैं, सो कहते हैं, और जो देखा है, उसपर साक्षी देते हैं। और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो। जो मैंने तुमसे पृथिवीपरकी बात कही और तुम प्रतीति नहीं करते हो, सो यदि मैं तुमसे स्वर्गमेंकी बात कहूं, तुम क्योंकर प्रतीति करोगे ? और कोई स्वर्गपर नहीं चढ़ गया है केवल वह, जो स्वर्गसे उतरा, अर्थात मनुष्यका पुत्र जो स्वर्गमें है। जिस रीतिसे मूसाने जंगलमें सांपको ऊंचा किया उसी रीतिसे अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ऊंचा किया जाय। इस लिये कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो नाश न होय, परन्तु अनन्त जीवन पावे ॥

ग. १ कोरिन्थि २, १४. प्राणिक मनुष्य ईश्वरके आत्माकी बातें ग्रहण नहीं करता है, क्योंकि वे उसके लेखे मूर्खता हैं, और वह उन्हें नहीं जान सकता है, क्योंकि उनका बिचार आत्मिक रीतिसे किया जाता है।
इफिसी ४, २२-२४. अगली चालचलनके बिषयमें पुराने मनुष्यत्वको जो भरमानेहारी कामनाओंके अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार रखो। और अपने मनके आत्मिक स्वभावसे नये होते जाओ और नये मनुष्यत्वको पहिन लेओ, जो ईश्वरके समान सत्यानुसारी धर्म्म और पवित्रतामें सृजा गया।
हल्लिलूयाह धन्य स्तुति हो इत्यादि-साक्षी. १, ३ । ३. निर्णय। ४. भाग ३. ॥

शोमिरोनी स्त्रीसे यीशुकी बातचीत ।

(योहन ४)

१, ग. यीशुका आशाकी लालसा उत्पन्न करना । यीशु शोमिरोन देशमेंसे जाके शिखर नाम नगरके निकट पहुंचा । वहां याकूबका कूआ था । यीशु मार्गमें चलनेसे थकित हो उस कूएपर बैठ गया । तब एक शोमिरानी स्त्री जल भरनेको आई । यीशुने उससे कहा, "मुझे पीनेको दीजिये" । स्त्रीने कहा "आप यहूदी होके मुझसे जो शोमिरोनी स्त्री हूं, क्योंकर पीनेको मांगते है" ? (यहूदी लोग शोमिरोनियोंके संग व्यवहार नहीं करते थे,) । यीशुने उसको उत्तर दिया, "जो तू जानती, कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, मुझे पीनेको दीजिये तो तू उससे मांगती, और वह तुझे अमृत जल देता । जो कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा होगा । पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उसको देऊंगा सो फिर कभी पियासा न होगा" । स्त्रीने कहा, "हे प्रभु यह जल मुझे दीजिये, कि मैं पियासी न होऊं और न जल भरनेको यहीं आऊं" ॥



२, ग. यीशुका अपनेको मसीह प्रगट करना । यीशुने कहा, "जा अपने स्वामीको बुलाके यहां आ" । स्त्रीने कहा, "मेरे तईं स्वामी नहीं है" । यीशु बोला, तूने अच्छा कहा, कि मेरे तईं स्वामी नहीं है, क्योंकि तेरे पांच स्वामी हो चुके, और अब जो तेरे संग रहता है, सो तेरा स्वामी नहीं है" । तब स्त्रीने कहा, "हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है, कि आप भविष्यद्वक्ता हैं । हमारे पित्रोंने इसी (गरिजीम) पहाड़पर भजन किया और आप लोग कहते हैं कि वह स्थान, जहां भजन करना उचित है यरूशलीम है" । यीशुने उत्तर

दिया, "मेरी प्रतीति कर, कि वह समय आता है और अब है, जिसमें तुम न इस पहाड़पर और न यरूशलीममें पिताका भजन करोगे। परन्तु सब आत्मा और सच्चाईसे उसका भजन करेंगे। ईश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाईसे भजन करें"। स्त्रीने कहा, "मैं जानती हूं कि मसीह आता है। वह हमें सब कुछ बतावेगा"। यीशुने कहा, "मैं जो तुझसे बोलता हूं वही हूं"॥

३, ग. शोमिरोनियोंका प्रभुपर विश्वास करना। तब स्त्रीने अपना घड़ा छोड़ा और नगरमें जाके लोगोंसे कहा, "आओ, एक मनुष्यको देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया है मुझे बताया है, यह क्या खीष्ट है"? वे नगरसे निकलके उस पास आये और उससे बिन्ती किई कि "हमारे यहां रहिये"। और वह वहां दो दिन रहा। उसका वचन सुनके बहुत लोगोंने बिश्वास किया और स्त्रीसे कहा, "अब हम तेरी बातके कारण विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हमने आपही सुना है और जानते हैं, कि यह सचमुच जगतका त्राणकर्त्ता खीष्ट है"॥

ग. योहन ६, ३५. यीशुने कहा जीवनकी रोटी मैं हूं जो मेरे पास आवे, सो कभी भूखा न होगा, और जो मुझपर बिश्वास करे सो कभी पियासा न होगा।
बूझ ज्ञान जो है हमारा इत्यादि-साक्षी. ४४, २+३। २. निर्णय॥

---

१४. राजकीय पुरुष। पितरका मछली पकड़ना॥ मत्तीका बुलाया जाना।

(योहन ४. लूक ५. मत्ती ९. मार्क २)

१, क. राजकीय पुरुष और उसकी बिन्ती। उसके पीछे यीशु गालीलको गया और राजाके यहांका एक पुरुष था, जिसका पुत्र कफरनाहूममें रोगी था। उसने यीशु पास जाके उससे बिन्ती किई कि "आके मेरे पुत्रको चंगा कीजिये"। यीशुने उससे कहा, "जो तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखो, तो बिश्वास नहीं करोगे"। परन्तु राजाके यहांके पुरुषने बिन्ती करके कहा "हे प्रभु मेरे बालकको मरनेके आगे आइये"॥

यीशुकी सहायता – यीशुने उससे कहा, "चला जा, तेरा पुत्र जीता है"। उस मनुष्यने इस बातपर बिश्वास किया और चला गया। वह जाताही था, कि उसके दास उससे आ मिले और संदेश दिया कि "आपका लड़का जीता है"। उसने उनसे पूछा, "किस घड़ी उसका जी हलका हुआ"? उन्होंने कहा, "कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वरने उसको छोड़ा"॥

आश्चर्य कर्मका फल । तब पिताने जाना, कि उसी घड़ीमें हुआ, जिस घड़ी यीशुने उससे कहा, "तेरा पुत्र जीता है"। और उसने और उसके सारे घरानेने बिश्वास किया ॥

- क. मत्ती ७, ७. मांगो तो तुम्हें दिया जायगा। ढूंढो तो पाओगे। खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा।
  प्रभुपर आशा छोड़ो इत्यादि-साखी. ६७, २ । १. आज्ञा ।
- ख. योहन २०, २९. धन्य वे हैं जो बिन देखे बिश्वास करें।
  उसका नाम और सच्ची बाचा इत्यादि-साखी. ८२, ३ + ५ ।
  १. निर्णय – सब जो जिससे बचाता इत्यादि ।
- ग. प्रेरित १६, ३१. प्रभु यीशुपर बिश्वास कर, तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा।
  मेरा प्रीतम यीशु आया इत्यादि-साखी. ७४, ३ + ४ । २. निर्णय ॥

२, क. **पितरका मछली पकड़ना-नावपरका उपदेश** । एक दिन बहुत लोग ईश्वरका बचन सुननेको यीशुपर गिरे पड़ते थे। और वह गिनेसरतकी झीलके पास खड़ा था। और उसने दो नावें झीलके तीरपर लगी देखीं। और मछुवे उनपरसे उतरके जालोंको धोते थे। उन नावोंमेंसे एक पर जो शीमोनकी थी चढ़के उसने उससे बिन्ती किई, कि तीरसे थोड़ी दूर ले जाय। और उसने बैठके नावपरसे लोगोंको उपदेश दिया ॥

आश्चर्य रीतिसे मछली पकड़ना । जब वह बात कह चुका, तब शीमोनसे कहा, "गहिरेमें ले जा और मछलियां पकड़नेको अपने जालोंको डालो"। शीमोनने कहा, "हे गुरु हमने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा, तौभी आपकी बातपर मैं जाल डालूंगा"। जब उन्होंने ऐसा किया, तब बहुत मछलियां बझाईं और उनका जाल फटने लगा। इसपर उन्होंने अपने साझियोंको जो दूसरी नावपर थे सैन किया कि वे आके उनकी सहायता करें। और उन्होंने आके दोनों नावें ऐसी भरी, कि वे डूबने लगीं ॥

आशीषयुक्त फल। यह देखके शीमोन पितर यीशुके गोड़ोंपर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पाससे जाइये, मैं पापी मनुष्य हूं"। क्योंकि वह और उसके सब संगी लोग इन मछलियोंके बझ जानेसे, जो उन्होंने पकड़ी थीं, विस्मित हुए। और वैसेही जबदीके पुत्र याकूब और योहन भी, जो शीमोनके साझी थे, विस्मित हुए। परन्तु यीशुने शीमोनसे कहा, "मत डर, अबसे तू मनुष्योंको पकड़ेगा"। और वे नावोंको तीरपर लाके सब कुछ छोड़के उसके पीछे हो लिये॥

क. १ पितर ५, ७, अपनी सारी चिन्ता ईश्वरपर डालो, क्योंकि वह तुम्हारे लिये सोच करता है॥
तू अपनी आशीष यीशु खीष्ट इत्यादि साखी. ९३, ४। १. आज्ञा।

ख. गीत ९०, १७. प्रभु, हमारा ईश्वर, हमारे हाथोंके कार्य दृढ़ करे।
खीष्टका शिष्य हो जाना इत्यादि-साखी. ८८, १+३। १. निर्णय—अब तक पालन करता है। इससे भिन्न इत्यादि। ३ निर्णय—मुझे मंगलसमाचारके द्वारा बुलाया इत्यादि।

ग. गीत १२७, १. यदि परमेश्वर घर न बनावें, तो उसके बनवैये अकारथ उसमें परिश्रम करते हैं।
प्रभुपर आसरा छोड़ो इत्यादि-साखी. ९७, २। ४. बिन्ती॥

२, ग. मत्तीका बुलाया जाना। यीशु समुद्रके तीरपरसे जाते हुए करउगाहनेहारे मत्ती (लेवी) को करउगाहनेके स्थानमें बैठे देखा और उससे कहा, "मेरे पीछे आ"। मत्ती उठके यीशुके पीछे हो लिया और उसके लिये अपने घरमें बड़ा जेवनार किया। जब यीशु भोजन पर बैठा, तब बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग भी आके उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ गये। परन्तु अध्यापकों और फरीशियोंने यह देखके उसके शिष्योंसे कहा, "यह क्या है, कि तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग खाता और पीता है"। यीशुने यह सुनके उनसे कहा, "निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है, परन्तु निरोगियोंको। मैं धर्म्मियोंको नहीं, परन्तु पापियोंको पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं"॥

ग. इफिसी ५, १४. हे सोनेहारे जाग, और मृतकोंमेंसे उठ, और खीष्ट तुझे ज्योति देगा।
यीशु आगे जा इत्यादि-साखी. ८६, १+२। २ निर्णय—जिसमें मैं उसीका होऊं इत्यादि॥

१५. कफरनाहूमका शतपति। अर्द्धांगी।

(मत्ती ८+९ लूक ५)

१, ख. शतपतिका प्रेम, दीनता और विश्वास। जब यीशुने कफर-नाहूममें प्रवेश किया, तब एक शतपतिने उस पास आ उससे बिन्ती किई कि "हे प्रभु मेरा सेवक घरमें अर्द्धांग रोगसे अति पीड़ित है"। यीशुने उससे कहा, "मैं आके उसे चंगा करूंगा"। शतपतिने उत्तर दिया कि "हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें, पर वचन मात्र भी कहिये, तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं, और योद्धा मेरे वशमें है। और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है. दूसरेको आ तो वह आता है, और अपने दासको यह कर, तो वह करता है"।

२, ख. विश्वासका फल। यह सुनके यीशुने अचम्भा किया, और जो लोग उसके पीछेसे आते थे, उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इसराएली लोगोंमें भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया है"। और शत-पतिसे उसने कहा, "जाइये, जैसा तूने विश्वास किया है, वैसाही तुझे होवे"। और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥



३, ख. विश्वासी अर्द्धांगी। जब यीशु अपने नगर (कफरनाहूम) में आया, तब लोग एक अर्द्धांगीको खाटपर चार मनुष्योंसे उठवाके उस पास लाये। परन्तु जब वे भीड़के कारण उसके निकट पहुंचा न सके, तब जिस घरमें

वह या उस घरकी छत उन्होंने कुछ खोलके उस अर्द्धांगीको खाट समेत लटकाके यीशुके आगे उतार दिया। यीशुने उन्होंका विश्वास देखके उस अर्द्धांगीसे कहा, "हे पुत्र ढाढ़स कर, तेरे पाप क्षमा किये गये हैं"॥

४, ख. अविश्वासी अध्यापक और फरीसी। तब कितने अध्यापकों और फरीसियोंने अपने २ मनमें कहा, "यह तो ईश्वरकी निन्दा करता है, क्योंकि ईश्वरको छोड़ कौन पापोंको क्षमा कर सकता है"। यीशुने उनके मनकी बातें जानके कहा, "तुम लोग अपने २ मनमें क्यों बुरी चिन्ता करते हो?। कौन बात सहज है, यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं, अथवा यह कहना, कि उठ और चल॥

५, ख. अर्द्धांगीका चंगा किया जाना। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको पाप क्षमा करनेका अधिकार है (तब उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं, उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा"। वह तुरन्त उठके अपनी खाट उठाके ईश्वरकी स्तुति करता हुआ अपने घरको चला गया। लोगोंने यह देखके अचम्भा किया और ईश्वरकी स्तुति किई, जिसने मनुष्यको ऐसा अधिकार दिया॥

ख. इब्रानी ११, १. विश्वास, जिन बातोंकी आशा रखी जाती उन बातोंका निश्चय और अनदेखी बातोंका प्रमाण है।
धन्य है परमेश्वर इत्यादि-साक्षी. १०, ३। १ निर्णय – सब जोखिमसे बचाता इत्यादि।

ग. मत्ती ११, २८. हे सब लोगो, जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम देऊंगा।
धन्य तेरा प्रेम अनन्ता इत्यादि-साक्षी. १२, ३+५. ३. निर्णय – पापोंकी क्षमा। ५+७ बिन्ती॥

---

१६. प्रेरितोंका ठहराया जाना। पर्व्वतपरका उपदेश।

(लूक ६. मत्ती ५-७)

१, ग. बारह प्रेरित। यीशु प्रार्थना करनेको पर्व्वतपर गया और ईश्वरसे प्रार्थना करनेमें सारी रात बिताई। जब बिहान हुआ, तब उसने अपने शिष्योंको बुलाके उनमेंसे बारह जनोंको चुनके प्रेरित ठहराया जो ये

हैं, शीमोन जो पितर कहावता है और उसका भाई अन्द्रिय । जबदीके पुत्र याकूब और योहन । फिलिप और बर्थलमय (नथनेल) । थोमा और मत्ती (लेवी) । अलफईका पुत्र याकूब और कानाका शीमोन, जो उद्योगी कहावता है । याकूबका भाई यहूदा और यहूदा इस्करियोती ।

२, ग. धन्य कौन हैं, इसका निर्णय । यीशु भीड़को देखके पर्व्वत-पर चढ़ गया और मुंह खोलके अपने शिष्योंको उपदेश देने लगा, "धन्य वे जो मनमें दीन हैं, क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका है । धन्य वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पावेंगे । धन्य वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथिवीके अधिकारी होंगे । धन्य वे जो धर्म्मके भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे । धन्य वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उनपर दया किई जायगी । धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे । धन्य वे जो मेल करवैये हैं, क्योंकि वे ईश्वरके सन्तान कहावेंगे । धन्य वे जो धर्म्मके कारण सताये जाते हैं, क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका है । धन्य तुम हो, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे बिरुद्ध सब प्रकारकी बुरी बात कहें । आनन्दित और आह्लादित होओ, क्योंकि तुम स्वर्गमें बहुत फल पाओगे । उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओंको जो तुमसे आगे थे, इसी रीतिसे सताया" ।

३, ग. व्यवस्थाकी पूर्णता । "मत समझो, कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओंका पुस्तक लोप करनेको आया हूं । मैं लोप करनेको नहीं, परन्तु पूरा करनेको आया हूं । मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम्हारा धर्म्म अध्यापकों और फरीशियोंके धर्म्मसे अधिक न होवे, तो तुम स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे । अपने बैरियोंको प्यार करो । जो तुम्हें स्राप देवें, उनको आशीष देओ । जो तुमसे बैर करें, उनसे भलाई करो । जो तुम्हारा अपमान करें, और तुम्हें सतावें, उनके लिये प्रार्थना करो, जिस्तें तुम अपने स्वर्गवासी पिताके सन्तान होओ । क्योंकि वह बुरे और भले लोगोंपर अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियोंपर मेंह बरसाता है । सो जैसा तुम्हारा स्वर्गवासी पिता सिद्ध है, वैसे तुम भी सिद्ध होओ" ॥

४, ग. प्रार्थना । "जब तू प्रार्थना करे, तब कपटियोंके समान मत हो,

क्योंकि मनुष्योंको दिखानेके लिये सभाके घरोंमें और सड़कोंके कोनोंमें खड़े होके प्रार्थना करना उनको प्रिय लगता है। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तब अपनी कोठरीमें जा और द्वार मूंदके अपने पिताके, जो गुप्तमें है, प्रार्थना कर, और वह तुझे प्रगटमें फल देगा। प्रार्थना करनेमें देव पूजकोंकी नाईं बहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो, क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत बोलनेसे हमारी सुनी जायगी। तुम इस रीतिसे प्रार्थना करो, "हे हमारे पिता, जो स्वर्गमें है, तेरा नाम पवित्र किया जावे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्गमें, वैसी पृथिवी पर भी होवे। हमारी प्रतिदिनकी रोटी आज हमको दे। और हमारे अपराधोंको क्षमा कर, जैसे हम भी अपने अपराधियोंको क्षमा करते हैं। और हमको परीक्षामें मत डाल, परन्तु बुरेसे छुड़ा। क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं, आमीन। मांगो तो तुम्हें दिया जायगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा" ॥

५, ग. संसारिक मन लगानेका निषेध। "कोई मनुष्य दो स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता है, क्योंकि वह एकसे बैर करेगा और दूसरेको प्यार करेगा, अथवा एकसे लगा रहेगा और दूसरेको तुच्छ जानेगा। तुम ईश्वर और धन दोनोंकी सेवा नहीं कर सकते हो। इसलिये मैं तुमसे कहता हूं, अपने जीवनके लिये चिन्ता मत करो, कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे। और न अपने देहके लिये कि क्या पहिरेंगे। क्या भोजनसे जीवन और वस्त्रसे देह बड़ा नहीं है? आकाशके पक्षियोंको देखो, वे न बोते हैं, न लवते हैं, न खत्तोंमें बटोरते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गवासी पिता उनको पालता है। क्या तुम उनसे बड़े नहीं हो? खेतके सोसन फूलोंको देख लो, वे कैसे बढ़ते हैं वे न परिश्रम करते हैं, न कातते हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभवमें उनमेंसे एकके तुल्य विभूषित न था। यदि ईश्वर खेतकी घासको जो आज है और कल चूल्हेमें झोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है, तो हे अल्प विश्वासियो, क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरावेगा? सो तुम यह चिन्ता मत करो कि हम क्या खाएंगे अथवा क्या पहिरेंगे। तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओंका प्रयोजन है। पहिले ईश्वरके

राज्य और उसके धर्म्मका खोज करो, तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगी"।

६, ग. निर्दय विचार। "दूसरोंका विचार मत करो, तो तुम्हारा विचार न किया जायगा, क्योंकि जिस विचारसे तुम विचार करते हो उसीसे तुम्हारा विचार किया जायगा। और जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जायगा। जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है, उसे तू क्यों देखता है। और तेरेही नेत्रमेंका लट्ठा तुझे नहीं सूझता। हे कपटी, पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे, तब तू अपने भाईके नेत्रसे तिनका निकालनेको अच्छी रीतिसे देखेगा। जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें, तुम भी उनसे वैसाही करो। क्योंकि यही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकका सार है"।

७, ग. जीवनको पहुंचनेका मार्ग। "सकेत फाटकसे प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक, और चाकर है वह मार्ग, जो विनाशको पहुंचाता है। और बहुत हैं जो उससे पैठते हैं। वह फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है, जो जीवनको पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। हर एक जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्गके राज्यमें प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गवासी पिताकी इच्छा पर चलता है"। लोग यीशुके उपदेशसे अचम्भित हुए। क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीतिसे नहीं, परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उपदेश दिया"।

ग. इब्रानी ४, १२. ईश्वरका वचन जीवता और प्रबल और हर एक दो धारे खड्गसे भी चोखा है, और वारपार छेदनेहारा है, यहां लों कि जीव और आत्माको, और गांठ २ और गूदे २ को अलग करे और हृदयकी चिन्ताओं और भावनाओंका विचार करनेहारा है। अनुग्रहका एक लक्षण इत्यादि-साखी. ४४, १-३। ४. आज्ञा। २. बिन्ती॥

१७, नाईनका तरुण।

(लूक ७.)

१, क. मृतकको बाहर ले जाना। यीशु नाईन नाम नगरको जाता था। उसके अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उसके संग जाते थे। ज्योंही वह नगरके फाटकके पास पहुंचा त्योंही देखो, लोग एक मृतकको बाहर ले जाते थे,

जो अपनी मांका एकलौटा पुत्र था, वह विधवा थी। और नगरके बहुत लोग उसके संग थे।

३, क. यीशुका शान्ति और सहाय देना। प्रभुने उसको देखके उसपर दया किई और उससे कहा, "मत रो"। तब उसने निकट आके अर्थीको छुआ। उठानेहारे खड़े हुए। और उसने कहा, "हे जवान मैं तुझसे कहता हूं उठ"। तब मृतक उठ बैठा और बोलने लगा। और यीशुने उसे उसकी मांको सौंप दिया।

३, क. देखनेहारोंकी बात। इससे सभोंको भय हुआ। और वे ईश्वरकी स्तुति करके बोले कि "हमारे बीचमें बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है। और ईश्वरने अपने लोगोंपर दृष्टि किई है"।

क. मत्ती २८, १८. यीशुने कहा, "स्वर्गमें और पृथिवीपर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है"।
धन है परमेश्वर इत्यादि-साक्षी. १०, ३।

ख. योहन ११, २५. यीशुने कहा, "मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं। जो मुझपर विश्वास करे सो यदि मर जाय, तौभी जीयेगा"।

ख. योहन ५, २८+२९. वह समय आता है, जिसमें जो कबरोंमें हैं, सो सब मनुष्यके पुत्रका शब्द सुनके निकलेंगे। जिससे भलाई करनेहारे जीवनके लिये जी उठेंगे। और बुराई करनेहारे दण्डके लिये जी उठेंगे।
धूल मैं हूं और मट्टीमें इत्यादि-साक्षी. ३५, ३। ७. बिन्ती।

---

१८. पापिनी स्त्री।

(लूक ७.)

१, ग. पश्चात्तापी पापिनी और स्वयंधर्मी फरीशी। फरीशियोंमेंसे एकने यीशुसे बिन्ती किई कि "मेरे संग भोजन कीजिये"। और वह फरीशीके घरमें जाके भोजनपर बैठा। और नगरकी एक स्त्री जो पापिनी थी, उजले पत्थलके पात्रमें सुगन्ध तेल लाई, उसके पांवों पास खड़ी हो रोते २ उसके चरणोंको आंसुओंसे भिंगाने लगी, अपने सिरके बालोंसे पोंछा और उसके पांव चूमके उनपर सुगन्ध तेल मला। यह देखके फरीशी अपने मनमें

कहने लगा, "यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता, कि यह स्त्री जो उसको छूती है कौन और कैसी है, क्योंकि वह पापिनी है"।

२, ग. दो ऋणियोंका दृष्टान्त। यीशुने उस फरीशीसे कहा, कि "हे शीमोन, मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूं, अर्थात किसी महाजनके दो ऋणी थे, एक ५०० सूकी धारता था और दूसरा ५०। जब कि भर देनेको उन्होंके पास कुछ न था, उसने दोनोंको क्षमा किया। सो कहिये उनमेंसे कौन उसको अधिक प्यार करेगा"? शीमोनने उत्तर दिया, "मैं समझता हूं कि वह जिसको उसने अधिक क्षमा किया"। यीशुने उससे कहा, "तूने ठीक विचार किया है"।

३, ग पाप क्षमा। और स्त्रीकी ओर फिरके यीशुने शीमोनसे कहा, "तू इस स्त्रीको देखता है। मैं तेरे घरमें आया तूने मेरे पांवपर जल नहीं दिया। परन्तु इसने मेरे चरणोंको आंसुओंसे भिंगाया और अपने सिरके बालोंसे पोंछा है। तूने मेरा चूमा नहीं लिया, परन्तु यह जबसे मैं आया, तबसे मेरे पांवोंको चूम रही है। तूने मेरे सिरपर तेल नहीं लगाया, परन्तु इसने मेरे पांवपर सुगन्ध तेल मला है मैं तुझसे कहता हूं कि उसके पाप जो बहुत है, क्षमा किये गये है। इस लिये उसने तो बहुत प्रेम किया। परन्तु जिसका थोड़ा पाप क्षमा किया जाता है वह थोड़ा प्रेम करता है"। और उसने स्त्रीसे कहा, "तेरे पाप क्षमा किये गये है तेरे विश्वासने तुझे बचाया है कुशलसे चली जा"।



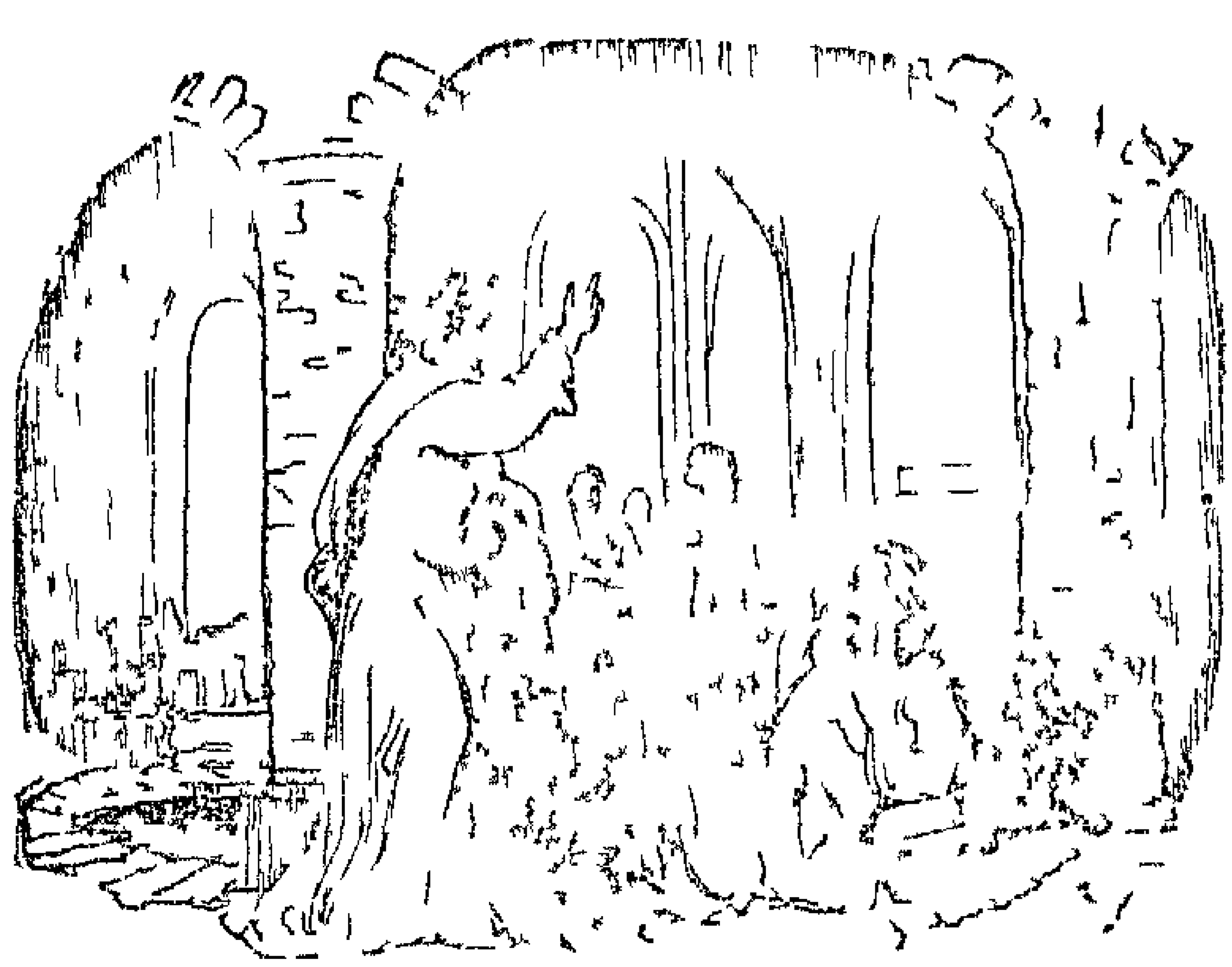
ग. १ योहन १, ८+९. जो हम कहें कि "हममें कुछ पाप नहीं है" तो अपनेको धोखा देते हैं, और सच्चाई हममें नहीं है। जो हम अपने पापोंको मान लेवें, तो वह हमारे पापोंको क्षमा करनेको और हमें सब अधर्म्मसे शुद्ध करनेको विश्वास योग्य और धर्म्मी है।

हमारे पापसे जो अपार इत्यादि-साखी ६९, ५। ३ निर्णय - पापों की क्षमा। ५. बिन्ती।

१९. बैथेसदा कुण्डके पासका रोगी।

(योहन ५)

१, ग रोगीका चंगा किया जाना। यहूदियोंका पर्ब्ब हुआ। और यीशु यिरूशलीमको गया। वहां एक कुण्ड है जो बैथेसदा कहावता है जिसमें पांच ओसारे हैं। इन्होंमें रोगियोंकी बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी, जो जलके हिलनेकी बाट देखते थे। क्योंकि समयके अनुसार एक स्वर्ग दूत उस कुण्डमें उतरके जलको हिलाता था। इससे जो कोई जलके हिलनेके पीछे उसमें पहिले उतरता था, सो चंगा हो जाता था। एक मनुष्य वहां था जो ३८ बरससे रोगी था। यीशुने उससे कहा, "क्या तू चंगा होने चाहता है"? रोगीने उसको उत्तर दिया कि "हे प्रभु मेरा कोई नहीं है, कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुण्डमें उतारे। और जबलों मैं जाता हूं दूसरा मुझसे आगे उतरता है"। यीशुने उससे कहा कि "उठ अपनी खाट उठाके चल"। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाके चलने लगा।



२, ग. यीशुका बिश्रामवारका भी प्रभु होना। पर उसी दिन बिश्रामवार था। इस लिये यहूदियोंने उस चंगा किये हुए मनुष्यसे कहा, "यह बिश्रामका दिन है खाट उठाना तुझे उचित नहीं है"। उसने कहा, "जिसने

मुझे चंगा किया उसीने मुझसे कहा, अपनी खाट उठाके चल"। इसके पीछे यीशुने उसको मन्दिरमें पाके उससे कहा, "देख तू चंगा हुआ है, फिर पाप मत कर, न हो कि इससे बुरी कोई बिपत्ति तुझपर आवे"। यहूदियोंने यीशुको मार डालने चाहा कि उसने विश्रामके दिनमें यह काम किया। पर उसने उनसे कहा, "मेरा पिता अबलों काम करता है मैं भी काम करता हूं"। इस कारण उन्होंने और भी उसे मार डालने चाहा कि उसने ईश्वरको अपना निज पिता कहके अपनेको ईश्वरके तुल्य किया।

ग. मार्क २, २७. विश्रामवार मनुष्यके लिये हुआ, पर मनुष्य विश्रामवारके लिये नहीं।
घ. निर्दोष २ इत्यादि-साक्षी. ६१, २। ४. आज्ञा॥

---

२०. दृष्टान्त।

(मत्ती १३. मार्क ४. लूक ८+१३.)

१, क. चार प्रकारकी भूमि। जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई तब यीशुने दृष्टान्तमें कहा, "एक बोनेहारा अपना बीज बोनेको निकला। बीज बोनेमें कुछ मार्गकी ओर गिरा और पांवसे रौंदा गया, और आकाशके पंछियोंने उसे चुग लिया। कुछ पत्थरपर गिरा और उपजा, परन्तु तरावट न पानेसे सूख गया। कुछ कांटोंके बीचमें गिरा, और कांटोंने एक संग बढ़के उसको दबा डाला। परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा, उपजा और सौ गुणे फल फला। जिसको सुननेके कान हों सो सुने"।

उसके शिष्योंने उससे पूछा, "इस दृष्टान्तका अर्थ क्या है"। उसने उत्तर दिया "बीज तो ईश्वरका बचन है। मार्गकी ओरके वे हैं जो सुनते हैं, तब शैतान आके उनके मनमेंसे बचन छीन लेता है, ऐसा न हो कि वे बिश्वास करके त्राण पावें। पत्थर परके वे हैं कि जब सुनते हैं, तब आनन्दसे बचनको ग्रहण करते हैं। परन्तु उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़े समयलों बिश्वास करते हैं और परीक्षाके समयमें बहक जाते हैं। जो कांटोंके बीचमें गिरा सो वे हैं, जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता धन और जीवनके सुख बिलाससे दबते २ दबाये जाते और पक्के फल नहीं फलते हैं। परन्तु अच्छी भूमिमेंके बीज वे हैं, जो बचन सुनके भले और उत्तम मनमें रखते हैं और धीरजसे फल फलते हैं।

२, ग. गेहूंमें जंगली दाने। "स्वर्गके राज्यकी उपमा एक मनुष्यसे दिई जाती है जिसने अपने खेतमें अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सोये थे, तब उसका बैरी आके गेहूंके बीचमें जंगली बीज बोके चला गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तब जंगली दाने भी दिखाई दिये। इस पर गृहस्थके दासोंने आ उससे कहा, "हे स्वामी क्या आपने अपने खेतमें अच्छा बीज न बोया, फिर जंगली दाने उसमें कहांसे आये"? उसने उनसे कहा, "किसी बैरीने यह किया है"। दासोंने उससे कहा, "आपकी इच्छा होय, तो हम जाके उनको बटोर लेवें"। उसने कहा, "सो नहीं, न हो कि जंगली दाने बटोरनेमें उनके संग गेहूं भी उखाड़ लेओ। कटनीलों दोनोंको एक संग बढ़ने देओ। और कटनीके समयमें मैं काटनेहारोंसे कहूंगा, पहिले जंगली दाने बटोरके जलानेके लिये उनके गट्ठे बांधो, परन्तु गेहूंको मेरे खत्तेमें एकट्ठा करो।

उसके शिष्योंने कहा, "इस दृष्टान्तका अर्थ हमें समझाइये" उसने उत्तर दिया, कि "जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्यका पुत्र है। खेत तो संसार है अच्छा बीज राज्यके सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्टके सन्तान हैं। जिस बैरीने उसको बोया सो शैतान है। कटनी जगतका अन्त है और काटनेहारे स्वर्गदूत हैं। सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आगसे जलाये जाते हैं, वैसा ही इस जगतके अन्तमें होगा। मनुष्यका पुत्र अपने दूतोंको भेजेगा। और वे उसके राज्यमेंसे सब कुकर्म्म करनेहारोंको बटोर लेंगे और उन्हें आगके कुण्डमें डालेंगे, जहां रोना और दांत पीसना होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिताके राज्यमें सूर्य्यकी नाईं चमकेंगे। जिसको सुननेके कान हों, सो सुने"।

३, ग. राईका दाना। "स्वर्गका राज्य राईके एक दानेकी नाईं है, जिसे किसी मनुष्यने लेके अपने खेतमें बोया। वह तो सब बीजोंसे छोटा है, परन्तु जब बढ़ जाता तब सागपातसे बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाशके पंछी आके उसकी डालियोंपर बसेरा करते हैं"।

४, ग. खमीर। "स्वर्गका राज्य खमीरकी नाईं है, जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन पसेरी आटेमें छिपा रखा, यहांलों कि सब खमीर हो गया"।

५, ग. खेतमें छिपाया हुआ धन। "स्वर्गका राज्य खेतमें छिपाये

छुपे धनके समान है, जिसे किसी मनुष्यने पाके गुप्त रखा। और वह उसके आनन्दके कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेतको मोल लेता है"।

६, ग. बड़े मोलका मोती। "स्वर्गका राज्य एक व्योपारीके समान है जो अच्छे मोतियोंको ढूंढ़ता था। उसने जब एक बड़े मोलका मोती पाया, तब जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया"।

ग. गीत ११९, १०५. तेरा वचन मेरे पांवके लिये दीपक है, और मेरे मार्गके लिये उंजियाला।
जो न चलता पापके मत इत्यादि-सामी. ४५, १-३।

---

२१. आंधीका थंभ जाना। याईरकी बेटी।

(मत्ती ८+९. लूक ८. मार्क ४+५.)

१, क. यीशुका आंधी और समुद्रपर प्रभुता रखना। एक दिन यीशु और उसके शिष्य नावपर चढ़के समुद्रके उस पार चलने लगे। ज्यों वे जाते थे, त्यों यीशु सो गया। समुद्रमें बड़ी आंधी उठी, और लहरें नावपर ऐसी लगीं कि वह भर जाने लगी। तब शिष्योंने यीशुको जगाके कहा,



"हे प्रभु हमें बचाइये, हम नष्ट होते हैं"। उसने उठके बयारको डांटा और समुद्रसे कहा, "चुप रह और थंभ जा"। बयार थंभ गई और बड़ा चैन हो गया। शिष्योंसे उसने कहा, "तुम क्यों ऐसे डरते हो, तुम्हें विश्वास क्यों

नहीं है"? और वे अचम्भा करके बोले, "यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं"।

क. गीत ३३, ९. ईश्वरने कहा, कि "हो" और हो गया। उसने आज्ञा किई, और खड़ा हुआ।
धन है परमेश्वर इत्यादि-साक्षी. १०, २। १. आज्ञा।

ख. मत्ती २८, १८. यीशुने कहा, "स्वर्गमें और पृथिवीपर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है"।
तू अपनी रक्षा यीशु खीष्ट इत्यादि-साक्षी. ९३, ५-६। १. निर्णय — सब जोखिमसे बचाता है इत्यादि।

ग. गीत ९०, १. हे प्रभु पीढ़ीसे पीढ़ीलों हमारा शरण स्थान तूही रहा है। इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, और तूने पृथिवी और जगतको रचा, और सनातनसे सनातनलों तूही सर्वशक्तिमान है।
याकूबका ईश्वर है सहाय इत्यादि-साक्षी. ७, ३। ७ बिन्ती।

२, ख. याईरकी बिन्ती। जब यीशु लौट गया, तब लोग उसकी आट जोहते थे। और सभाके याईर नाम एक अध्यक्षने आके यीशुके पांवों पड़के उससे बिन्ती किई कि वह उसके घर जाय। क्योंकि उसकी १२ बरसकी एकलौती बेटी मरनेपर थी। और यीशु उसके साथ चला गया।

३, ख. बेटीका जिलाया जाना। तब किसीने याईरके घरसे आके उससे कहा, "आपकी बेटी मर गई है, गुरुको दुःख न दीजिये"। यीशुने यह सुनके याईरसे कहा, कि "मत डर, केवल विश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी"। घरमें आके उसने पितर, याकूब, योहन और कन्याके माता पिताको छोड़ और सभोंको भीतर जाने न दिया। सब लोग कन्याके लिये रोते और छाती पीटते थे। परन्तु यीशुने उनसे कहा, "मत रोओ, वह मरी नहीं, पर सोती है"। वे यह जानके कि मर गई है, उसका उपहास करने लगे। परन्तु उसने सभोंको बाहर निकाला और कन्याका हाथ पकड़के ऊंचे शब्दसे कहा। "तालिथा कूमी" अर्थात (हे कन्या मैं तुझसे कहता हूं उठ) तब उसका प्राण फिर आया। वह तुरन्त उठी और फिरने लगी। यह कीर्त्ति सारे देशमें फैल गई।

ख. मत्ती ७, ७. मांगो तो तुम्हें दिया जायगा, ढूंढ़ो तो पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा।

श्रा तो सवेत जो अति घोर इत्यादि-साची. ६९, ४। १. आंखा।
३. निर्णय – देहसे जी उठने इत्यादि।

ग. २ तिमोथी १, १०. खीष्टने मृत्युका नाश किया, परन्तु जीवन और अमरताको प्रकाशित किया।
जय हां जय सनातन जय इत्यादि-साची. ३३, १+२।७. विन्ती॥

---

२२. योहन बपतिस्मा देनेहारेकी मृत्यु।

(मत्ती ११+१४. मार्क ६. लूक ७+९.)

१, ग. योहनका बन्दीगृहमें डाला जाना। हेरोदने अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियासे कारण योहनको पकड़के बन्दीगृहमें डाला था, क्योंकि योहनने उससे कहा था कि "अपने भाईकी स्त्रीको रखना, तुझको उचित नहीं है"। इस लिये हेरोदिया योहनको मार डालने चाहती थी। और हेरोद भी उसे मार डालने चाहता था पर लोगोंसे डरा, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे। वह योहनको धर्म्मी और पवित्र पुरुष जानके उससे भी डरता था और उसकी सुनके बहुत बातोंपर चलता था।

२, ग. योहनका यीशुके पास दूतोंको भेजना। योहनने बन्दीगृहमें यीशुके कार्य्योंका समाचार सुनके अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको उससे यह कहनेको भेजा कि "जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं, अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें"? उसी घड़ी यीशु बहुतोंको जो रोगों पीड़ाओं और दुष्ट भूतोंसे दुःखी थे चंगा करता था। इस लिये उसने योहनके शिष्योंको उत्तर दिया कि "जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहनसे कहो कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मृतक जिलाये जाते हैं, और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है। जो कोई मेरे विषयमें ठोकर न खावे सो धन्य है"।

३, ग. हेरोदके जन्म दिनकी सभा। परन्तु जब हेरोदने अपने जन्म दिनमें गलीलके बड़े लोगोंके लिये बियारी बनाई, और हेरोदियाकी पुत्रीने भीतर आ नाच करके हेरोदको और उसके संग बैठनेहारोंको प्रसन्न किया, तब राजाने कन्यासे किरिया खाके कहा कि "मेरे आधे राज्यलों जो कुछ तू मुझसे

मांगे, मैं तुझे देऊंगा" । उसने बाहर जाके अपनी मातासे कहा, मैं क्या मांगूंगी" । वह बोली, "योहन बपतिस्मा देनेहारेका सिर" । उसने तुरन्त राजाके पास भीतर आके कहा, "मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिस्मा देनेहारेका सिर थालमें अभी मुझे दीजिये" ।

४, ग. योहनका घात किया जाना । तब राजा अति उदास हुआ, परन्तु उस किरियाके और अपने संग बैठनेहारोंके कारण उसे टालने नहीं चाहा । और उसने तुरन्त पहरुएको भेजकर योहनका सिर लानेकी आज्ञा किई । उसने जाके बन्दीगृहमें उसका सिर काटा और थालमें लाके कन्याको दिया । और कन्याने उसे अपनी मांको दिया । उसके शिष्य यह सुनके आये, उसकी लोथको उठाके गाड़ा और जाके यीशुसे इसका समाचार कहा ।

५, ग. मनुष्यघातीका बेचैन । उस समयमें हेरोदने यीशुकी कीर्त्ति सुनी और कहा, "यह तो योहन बपतिस्मा देनेहारा है । वह मृतकोंमेंसे जी उठा है, इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट होते हैं" ।

ग. मत्ती ५, १०. धन्य वे जो धर्म्मके कारण सताये जाते हैं, क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका है ।
जो बचन है हमारे साथ इत्यादि-साक्षी. ९२, ४ ।
१. ३. ६ + ७ आज्ञा ॥

---

२२. पांच सहस्र मनुष्योंका खिलाया जाना । समुद्रपर चलना ।

(योहन ६. मत्ती १४. लूक ९. मार्क ६.)

१, क. यीशुकी लोगोंपर दया आना । जब यीशुने योहनके मरणका समाचार सुना तब नावपर चढ़के गलीलके समुद्रके उस पार किसी जंगली स्थानमें गया । और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये । जब यीशुने उनको देखा तब उसको उनपर दया आई, क्योंकि वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं थे । और वह उन्हें बहुतसा उपदेश देने लगा, और उनके रोगियोंको चंगा किया ।

२, क. शिष्योंकी परीक्षा । जब दिन ढलने लगा तब शिष्योंने यीशुसे कहा, "लोगोंको बिदा कीजिये कि वे बस्तियोंमें जाके अपने लिये भोजन मोल

लेवें"। यीशुने कहा, "तुम उन्हें खानेको देओ"। फिलिपने उत्तर दिया कि "२०० सूकियोंकी रोटी उनके लिये इतनी भी न होगी कि उनमेंसे हर एकको थोड़ी २ मिले"। अन्द्रियने उससे कहा कि "यहां एक छोकड़ा है, जिसके पास जवकी ५ रोटी और २ मछली है, परन्तु इतने लोगोंके लिये यह क्या है"।

३, क. आश्चर्यमय भोजन (और टुकड़ोंका बटोरा जाना)। यीशुने कहा, "उन मनुष्योंको बैठाओ"। सो पुरुष जो गिन्तीमें ५००० के अटकल थे, बैठ गये। तब यीशु रोटियां ले धन्यमानके शिष्योंको बांट दिईं, और शिष्योंने बैठनेहारोंको। और वैसेही मछलियोंमेंसे, जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं। जब वे तृप्त हुए, तब उसने अपने शिष्योंसे कहा, "बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न जाय"। सो उन्होंने टुकड़े बटोरके १२ टोकरियां भरीं।

४, क. आश्चर्य कर्म्मके बाद लोगोंका विचार। उन मनुष्योंने यह आश्चर्य कर्म्म देखके कहा, "यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है, जो जगतमें आनेवाला था"। जब यीशुने जाना कि वे मुझे राजा बनानेके लिये आके मुझे पकड़ेंगे, तब उसने अकेला पर्व्वतपर जाके प्रार्थना किई।

क. गीत १४५, १५-१६. सभोंकी आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू समय पर उन्हें भोजन देता है। तू अपनी मुट्ठी खोलती है और हर एक जीवधारीको उसकी इच्छासे सन्तुष्ट करता है।
तू अपना वचन यीशु ख्रीष्ट इत्यादि-साक्षी. ९३, २+४।

ख. गीत २३, १-२. परमेश्वर मेरा गड़ेरिया है मुझे घटी न होगी। वह मुझे कोमल घासकी चराईमें बिठलावेगा, मुझे स्थिर जलके लग ले जायगा।
अब मन और मुंह और हाथ इत्यादि-साक्षी. ९, १. । १. निर्णय — अब तक पालन करता है इत्यादि।

ग. मत्ती ६, २५. अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो, कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे। और न अपने शरीरके लिये कि हम क्या पहिरेंगे। क्या भोजनसे प्राण और वस्त्रसे शरीर बड़ा नहीं है?।
याकूबका ईश्वर है सहाय इत्यादि-साक्षी. ७, ३-५ । ४. बिन्ती।

५, ग. शिष्य लोग जोखिममें। जब सांझ हुई, तब शिष्य लोग नाव पर चढ़के समुद्रके उस पार कफरनाहूमको जाने लगे पर यीशु उनके पास नहीं आया था। नाव समुद्रके बीचमें पहुंचके उछल रही थी, क्योंकि बयार सन्मुख

की थी। रातके चौथे पहरमें यीशु समुद्रपर चलता हुआ उनके पास आया। शिष्य लोग उसको समुद्रपर चलते देखके घबरा गये और बोले, "यह प्रेत है"।

६, ग. प्रभुका शान्ति और सहाय देना। (और शिष्योंका विश्वास दृढ़ाना) परन्तु यीशु उनसे बात करने लगा और कहा, "ढाढ़स बांधो, मैं हूं"। पितरने उससे कहा, "हे प्रभु यदि आपही हैं, तो मुझे अपने पास जलपर आनेकी आज्ञा दीजिये"। यीशुने कहा, "आ"।



तब पितर नावपरसे उतरके यीशु पास जानेको जलपर चलने लगा। परन्तु जब वह बयारको प्रचण्ड देखके डर गया, तब डूबने लगा और चिल्लाके बोला,

"हे प्रभु मुझे बचाइये"। यीशुने तुरन्त हाथ बढ़ाके उसको थांभ लिया और उससे कहा, "हे अल्प विश्वासी तूने क्यों सन्देह किया"। जब वे नाव पर चढ़े, तब बयार थम गई। इस पर जो लोग नावपर थे, सो आके यीशुको प्रणाम करके बोले, " सचमुच आप ईश्वरके पुत्र हैं"।

ख. १ योहन ५, २०. यीशु खृष्ट तो सच्चा ईश्वर और अनन्त जीवन है। धन है परमेश्वर इत्यादि-साक्षी. १०, २ । १ निर्णय—सब जोखिमसे बचाता इत्यादि।

ग. कलसी २, ९. खृष्टमें ईश्वरत्वकी सारी पूर्णता सदेह वास करती है। पापके वनमें मैं था धंसा इत्यादि-साक्षी, ७४, २+३ । २. निर्णय — जो सच्चा ईश्वर होके इत्यादि।

---

२४. कनानी स्त्री। बहिरे तोतले मनुष्यका चंगा किया जाना।

(मत्ती १५. मार्क ७.)

१, ग. स्त्रीका विश्वास। यीशु वहांसे निकलके सोर और सिदोनके सिवानोंमें गया। और उन सिवानोंमेंकी एक कनानी स्त्रीने निकलकर पुकारके कहा, "हे दाऊदके सन्तान, मुझपर दया कीजिये। मेरी बेटी भूतसे अति पीड़ित है"।

२, ग. विश्वासकी परीक्षा। परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया। तब उसके शिष्योंने उससे बिन्ती करके कहा, "इसको विदा कीजिये, क्योंकि वह हमारे पीछे २ पुकारती है"। परन्तु उसने उत्तर दिया, "इसरायलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंको छोड़ मैं किसीके पास नहीं भेजा गया हूं"। तब स्त्रीने आ उसको प्रणाम कर कहा, "हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये"। यीशुने उत्तर दिया, कि "लड़कोंकी रोटी लेके कुत्तोंके आगे फेंकना अच्छा नहीं है"। स्त्रीने कहा, "सच है प्रभु तौभी कुत्ते जो चूरचार उनके स्वामियोंकी मेजसे गिरते हैं सो खाते हैं"।

३, ग. विश्वासका फल। तब यीशुने उसको उत्तर दिया, "हे नारी तेरा विश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है, वैसाही तुझे होय"। उसकी बेटी उसी घड़ीसे चंगी हुई।

४, ग. यीशुका बहिरे तोतलेको चंगा करना। यीशु सोर और सिदोनके सिवानोंसे फिर आके गालीलके समुद्रके निकट पहुंचा। और लोगोंने एक बहिरे तोतले मनुष्यको उस पास लाके उससे बिन्ती किई कि "आप इस पर हाथ रखिये"। उसने उसको भीड़मेंसे एकान्तमें ले जाके अपनी अंगुलियां उसके कानोंमें डालीं और उसकी जीभ छुई, और स्वर्गकी ओर देखके लम्बी सांस भरके कहा, "इफ़्फ़ातह" अर्थात खुल जा। तुरन्त उसके कान खुल गये। उसकी जीभका बन्धन भी खुल गया। और वह शुद्ध रीतिसे बोलने लगा। तब यीशुने उन्हें चिताया कि "किसीसे मत कहो"। परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया उतना उन्होंने बहुत अधिक प्रचार करके कहा, "उसने सब कुछ अच्छा किया है। वह बहिरोंको सुनने और गूंगोंको बोलनेकी शक्ति देता है"।

ग. रोमी १२, १२. आशासे आनन्दित होओ, क्लेशमें स्थिर रहो प्रार्थनामें लगे रहो।
अधीन रहो, सब उसके इत्यादि-साखी. ९१, ८-१० । १. बिन्ती ॥

---

२५. जन्मका अंधा मनुष्य।

(योहन ९.)

१, ग. दुःखका कारण। तम्बूवास पर्व्वके लिये यीशु यरूशलीमको गया। और वहां एक मनुष्यको देखा, जो जन्मका अंधा था। उसके शिष्योंने उससे पूछा, "हे गुरु, किसने पाप किया इस मनुष्यने अथवा उसके माता पितान, कि वह अंधा जन्मा"। यीशुने उत्तर दिया, "न तो इसने न इसके माता पिताने पाप किया, परन्तु यह इस लिये हुआ कि ईश्वरके काम उसमें प्रगट किये जावें"।

२, ग. जन्मके अंधेका चंगा किया जाना । यह कहके उसने भूमि पर थूका, उस थूकसे मिट्टी गीली करके अंधेकी आंखोंपर लगाई और कहा, “जाके शीलोहके कुण्डमें धो” । उसने जाके धोया और देखते हुए फिर आया ।



३, ग. चंगे किये हुए का पहिला इजहार देना । प्रभुके कामके विषय भिन्न २ विचार । तब जिन्होंने आगे उसे अंधा देखा था उन्होंने कहा, “क्या यह वह नहीं है, जो बैठा भीख मांगता था” ? कितनोंने कहा, “यह वही है” । दूसरोंने कहा, “यह उसके समान है” । और उसने आपही कहा, “मैं वही हूं” । (जब यीशुने उसकी आंखें खोली थीं, तब विश्रामका दिन था)

फरीसियोंने उससे पूछा, "तूने किस रीतिसे दृष्टि पाई"? जब उसने उनको बताया, तब उनमेंसे कितनोंने कहा, "यह मनुष्य ईश्वरकी ओरसे नहीं है, क्योंकि वह विश्रामका दिन नहीं मानता"? दूसरोंने कहा, "पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य कर्म्म कर सकता है"। और उन्होंमें विभेद हुआ। पर दृष्टि पाये हुएने कहा, "वह भविष्यद्वक्ता है"।

४. ग. चंगे किए हुएके माता पिताका इजहार देना। परन्तु यहूदियोंने प्रतीति न किई कि वह पहिले अंधा था और उसके माता पिताको बुलाके उनसे पूछा, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जो अंधा जन्मा? वह अब क्योंकर देखता है"? उन्होंने उत्तर दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा जन्मा। परन्तु वह अब क्योंकर देखता है, सो हम नहीं जानते हैं। वह सयाना है उसीसे पूछिये"। (ऐसा उन्होंने डरके मारे कहा, क्योंकि यहूदियोंने आपसमें ठहराया था कि यदि कोई यीशुको खुला करके मान लेवे, तो सभासे निकाला जायगा)।

५. ग. चंगा किये हुएका दूसरा इजहार देना। तब उन्होंने उस मनुष्यको जो अंधा था, दूसरी बेर बुलाके उससे कहा, "ईश्वरकी प्रतिष्ठा कर। हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है"। उसने उत्तर दिया, "वह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं। एक बात मैं जानता हूं कि मैं, जो अंधा था, अब देखता हूं"। उन्होंने उससे फिर पूछा कि "उसने तेरी आंखें किस रीतिसे खोलीं"? उसने उत्तर दिया, "मैं आप लोगोंको कह चुका हूं किस लिये फिर सुनने चाहते हैं। क्या आप लोग भी उसके शिष्य हो जाने चाहते हैं"? तब उन्होंने उसकी निन्दा कर कहा, "तू उसका शिष्य है, पर हम मूसाके शिष्य हैं। हम जानते हैं कि ईश्वरने मूसासे बातें किईं। परन्तु इसको हम नहीं जानते कि कहांसे है"। उसने उत्तर दिया, "इसमें अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते हैं कि ऐसा बड़ा मनुष्य कहांसे है, जिसने मेरी आंखें खोली हैं। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियोंकी नहीं सुनता है, परन्तु यदि कोई ईश्वरका उपासक होय और उसकी इच्छापर चले, तो वह उसकी सुनता है। यह कभी सुननेमें नहीं आया कि किसीने जन्मके अंधेकी आंखें खोली हों। जो यह

ईश्वरकी ओरसे न होता तो कुछ नहीं कर सकता"। उन्होंने उसको उत्तर दिया, "तू तो सम्पूर्ण पापोंमें जन्मा और क्या हमको सिखाता है"? और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

६, ग. अंधे किये हुएका विश्वास। यीशुने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया और उससे कहा, "क्या तू ईश्वरके पुत्रपर विश्वास करता है"? उसने उत्तर दिया, "हे प्रभु वह कौन है कि मैं उसपर विश्वास करूं"। यीशुने कहा, "जो तेरे संग बात करता है वही है"। उसने कहा, "हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं" और उसको प्रणाम किया। तब यीशुने कहा, "मैं इस जगतमें विचारके लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें"। कितने फरीशियोंने यह सुनके उससे कहा, "क्या हम भी अंधे हैं"? यीशुने उत्तर दिया, "जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप नहीं होता। परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं, इस लिये तुम्हारा पाप बना रहा"।

ग. योहन ८, १२. यीशुने कहा, "मैं जगतका प्रकाश हूं, जो मेरे पीछे आवे सो अन्धकारमें नहीं चलेगा, परन्तु जीवनका उंजियाला पावेगा। हाय कि अपने पापका भारा इत्यादि-साखी. ६८, ४। २. निर्णय॥

---

२६. यीशु अच्छा गड़ेरिया।
पितरका स्वीकार।
यीशुका तेजस्वी दिखाई देना।

(योहन १०. मत्ती १६+१७. मार्क ८+९. लूक ९.)

१, ग. यीशु अच्छा गड़ेरिया। यीशुने कहा, "मैं अच्छा गड़ेरिया हूं। अच्छा गड़ेरिया भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर जिसकी निज भेड़ें नहीं हैं, हुण्डारको आते देखके भेड़ोंको छोड़ देता और भाग जाता है। और हुण्डार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं। जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिताको जानता हूं, वैसा मैं अपनी भेड़ोंको जानता हूं, और अपनी भेड़ोंसे जाना जाता हूं। और मैं भेड़ोंके लिये

अपना प्राण देता हूं । मेरी और भेड़ें हैं, जो इस भेड़शालाकी नहीं हैं । मुझे उनको भी लाना होगा, और वे मेरा शब्द सुनेंगी । और एक झुंड और एक रखवाला होगा" ।

ग. लूक १९, १०. मनुष्यका पुत्र खोये हुएको ढूंढ़ने और बचाने आया है। यीशुकी मैं भेड़ी हूं इत्यादि-साक्षी. ७९, १-३ । २, निर्णय । २. विन्ती ।



२, ग. पितरका स्वीकार । "यीशुने अपने शिष्योंसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं, कि मैं कौन हूं" ? उन्होंने उत्तर दिया, "कितने तो आपको योहन बपतिस्मा देनेहारा कहते हैं । कितने एलिया कहते हैं । और कितने भविष्य-द्वक्ताओंमेंसे एक कहते हैं । वह बोला, "तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं" ?

शीमोन पितरने उत्तर दिया, "आप जीवते ईश्वरके पुत्र खीष्ट हैं"। यीशुने उससे कहा, "हे शीमोन तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहूने नहीं परन्तु मेरे स्वर्गवासी पिताने यह बात तुझपर प्रगट किई"।

> ग. मत्ती १०, ३२-३३. जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मान लेऊंगा। परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे, उससे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मुकरूंगा।
> ईश्वरका बेटा है सचीह इत्यादि-साखी. ७७, २-५। २. निर्णय— जो सच्चा ईश्वर होके इत्यादि।

३, ग. यीशुका अपने दुःख उठानेका सन्देश देना। उस समयसे यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा, "मुझे अवश्य है कि यिरूशलीममें जाऊं, बहुत दुःख उठाऊं मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं"। तब पितर कहने लगा, "हे प्रभु आप पर दया रहे, यह तो आपको कभी न होगा"। पर यीशुने उससे कहा, "हे शैतान, मेरे साम्हनेसे दूर हो। तू मेरे लिये ठोकर है, क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका सोच रहता है"।

४, ग. यीशुके शिष्य होनेका कर्त्तव्य। यीशुने आगे कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाने चाहे सो उसे खोयेगा। परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोवे, सो उसे पावेगा। यदि मनुष्य सारे जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको क्या लाभ होगा"।

> ग. फिलिप्पी २, ११+१२. डरते और कांपते हुए अपने त्राणका कार्य्य निबाहो। क्योंकि ईश्वरही है, जो अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्होंमें इच्छा और कार्य्य भी करवाता है।
> खृस्तका शिष्य हो जाना इत्यादि-साखी, ८८, १+३। २. निर्णय— पतियुत पिवातुवको आज्ञासे इत्यादि।

५, ग. यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना। छः दिनके पीछे यीशु पितर, याकूब और योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर ले गया। तब उनके आगे उसका रूप बदल गया, उसका मुंह सूर्य्यके तुल्य चमका और उसका वस्त्र ज्योतिकी नाईं उजला हुआ। और देखो मूसा और इलिया यीशुके संग उसकी मृत्युकी बात करते हुए उसको दिखाई दिये। पितरने कहा, "हे प्रभु, यहां रहना अच्छा है। आपकी इच्छा होय, तो हम तीन डेरे यहां

बनावें, एक आपके लिये, एक मूसाके लिये और एक इलीयाके लिये"। वह बोलताही था कि एक ज्योतिमय मेघने उन्हें छा लिया। और मेघसे यह शब्द हुआ, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूं उसकी सुनो"। शिष्य लोग यह सुनके औंधे मुह गिरे और निपट डर गये। पर यीशुने उन्हें छूके कहा, "उठो, डरो मत"। तब उन्होंने अपनी आंखें उठाके यीशुको छोड़ किसीको नहीं देखा। और उसने उनको आज्ञा दिई कि "जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे, तबलों इस दर्शनका समाचार किसीसे मत कहो"।

ग. फिलिप्पी २, ५-८. तुम्होंमें यही मन होय, जो ख्रीष्ट यीशुमें भी था, जिसने ईश्वरके रूपमें होके ईश्वरके तुल्य होना डकैती न समझा, परन्तु अपने तईं हीन करके दासका रूप धारण किया और मनुष्योंके समान बना, और मनुष्यकेसे डौलपर पाया जाके अपनेको दीन किया, और मृत्युलों हां क्रूशकी मृत्युलों आज्ञाकारी रहा।
सूरज चमकता चांद झलझलकता इत्यादि-साखी. ८०, ३।
३. निर्णय ॥

---

२७. दयालु शोमिरोनी।

यीशु मर्था और मरियमके घरमें।

(लूक १०.)

१, ग. सबसे बड़ा प्रश्न। उसके पीछे किसी व्यवस्थापकने यीशुकी परीक्षा करनेको कहा, "हे गुरु, कौन काम करनेसे अनन्त जीवनका अधिकारी होऊंगा"। यीशुने कहा, "व्यवस्थामें क्या लिखा है"? उसने उत्तर दिया "तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे, अपने सारे प्राणसे, अपनी सारी शक्तिसे, और अपनी सारी बुद्धिसे प्रेम कर। और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर"। यीशुने कहा, "यह कर, तो तू जीयेगा"।

२, ग. पड़ोसी विषयक प्रेम। परन्तु व्यवस्थापकने अपने तईं धर्म्मी ठहरानेकी इच्छा कर कहा, "मेरा पड़ोसी कौन है"? यीशुने उत्तर दिया, "एक मनुष्य यिरूशलीमसे यिरीहोको जाते हुए डाकुओंके हाथमें पड़ा, जिन्होंने उसके वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमुआ छोड़के चले गये। संयोगसे कोई याजक उस मार्गसे जाता था, परन्तु उसे देखके सामनेसे होके चला

गया। इस रीतिसे एक लेवीय भी। परन्तु एक शोमिरोनी पथिक उस स्थानपर आया और उसे देखके दया किई, उस पास जाके उसके घावोंपर तेल और दाखरस डालके पट्टियां बांधीं और उसे अपनेही पशुपर बैठाके सरायमें लाके उसकी सेवा किई। बिहान हुए उसने बाहर आके दो सूकी निकालके डेरा-दारको दिईं और उससे कहा, उस मनुष्यकी सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा, सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा। सो तू क्या समझता है जो डाकुओंके हाथमें पड़ा, उसका पड़ोसी इन तीनोंमेंसे कौन था"? व्यवस्थापकने कहा, "वह, जिसने उसपर दया किई"। तब यीशुने कहा, "जा तू भी वैसाही कर"।

ग. यश: ५८, ७. अपनी रोटी भूखेको खिलाओ, और दु:खियों और अनाथोंको घरमें लाओ।
प्रभु यीशु प्रेमको भूर इत्यादि-साखी. ९८, ३+५। १+६ आज्ञा।

३, ग. मर्था और मरियम। उसके पीछे यीशुने किसी गांवमें प्रवेश किया। वहां मर्था और मरियम नाम दो बहिनें थीं, जिन्होंने अपने घरमें उसकी पहुनई किई। मरियम यीशुके चरणोंके पास बैठके उसका वचन सुनती थी, परन्तु मर्था बहुत सेवकाईमें लगी हुई थी। और वह निकट आके बोली "हे प्रभु आपको सोच नहीं है, कि मेरी बहिनने मुझे अकेली सेवा करनेको छोड़ा है, उसको आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे"। यीशुने उत्तर दिया, "हे मर्था, हे मर्था, तू बहुत बातोंके लिये चिन्ता करती और घबराती है, परन्तु एक बात आवश्यक है। मरियमने उस उत्तम भागको चुना है, जो उससे नहीं लिया जायगा"।

ग. लूक ११, २८. वेही धन्य हैं, जो ईश्वरका वचन सुनके पालन करते हैं।
यीशु मेरा हुआ इत्यादि-साखी. ७५, १-४। ४. आज्ञा॥

२८, निर्दय दास।

(मत्ती १८.)

१, ग. क्षमा करनेका मन रखना। पितरने यीशुसे कहा, "हे प्रभु, मेरा भाई कैबेर मेरा अपराध करे, और मैं उसको क्षमा करूं क्या ७ बेरलों"?

यीशुने कहा, ७ बेरलों नहीं, परन्तु ७० गुना ७ बेरलों"।

२, ग. राजाकी दया। "इस लिये स्वर्ग राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है, जो अपने दासोंसे लेखा लेने लगा। तब एक जन जो १०००० तोड़े धारता था, उसको आगे पहुंचाया गया। जब कि भर देनेको उसपास कुछ न था, स्वामी ने आज्ञा किई कि वह उसकी स्त्री, लड़केबाले, और जो कुछ उसका है, सब बेचा जाय और ऋण भर दिया जाय। इसपर उस दासने दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और कहा, हे प्रभु मेरे विषयमें धीरज धरिये, मैं आपको सब भर देऊंगा। तब स्वामीने दया कर उसे छोड़ दिया, और उसका ऋण क्षमा किया।

३, ग. दया पाये हुए दासकी निर्दयता। परन्तु उसी दासने बाहर निकलके अपने संगी दासोंमेंसे एकको पाया, जो उसकी १०० सूकी धारता था, उसको पकड़के उसका गला दबाके कहा, जो कुछ तू धारता है मुझे दे। इस पर उसके संगी दासने उसके पांवों पड़के उससे बिन्ती कर कहा, मेरे बिषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब भर देऊंगा। उसने न माना, परन्तु जाके उसे बन्दीगृहमें डाला, कि जबलों ऋणको भर न देवे, तबलों वहीं रहे।

४, ग. राजाका निर्दय दासको दण्ड देना। उसके संगी दास लोग जो हुआ था, सो देखके बहुत उदास हुए और जाके सब कुछ अपने स्वामीको बताया। तब स्वामीने उसको अपने पास बुलाके कहा, "हे दुष्ट दास, तूने जो मुझसे बिन्ती किई, तो मैंने तुझे सब ऋण क्षमा किया। सो जैसा मैंने तुझपर दया किई, वैसा क्या तुझे भी अपने संगी दासपर दया करना उचित न था"? और उसने क्रोध कर उसे दंडकारकोंके हाथ सौंप दिया कि जबलों वह सब ऋण भर न देवे, तबलों उनके हाथमें रहे। योंही यदि तुममेंसे हर एक अपने २ मनसे अपने २ भाईके अपराध क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गवासी पिता भी तुमसे वैसा करेगा"।

ग. लूक ६, ३६+३७, जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, तैसे तुम भी दयावन्त होओ। क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई जायगी।
एक हो दूसरेके अधीन इत्यादि-साक्षी. ९८, ६। ६. आज्ञा। ५. बिन्ती॥

२९. बड़ी बियारी।

(लूक १४)

१, ग. यहूदियोंके मुख्य जनोंका बुलाया जाना। यीशुने कहा, "किसी मनुष्यने बड़ी बियारी बनाई और बहुतोंको बुलाया। बियारीके समयमें उसने अपने दासके हाथ नेवतहरियोंको कहला भेजा कि आओ, सब कुछ अब तैयार है। परन्तु वे सब एक मत होके क्षमा मांगने लगे। पहिलेने उस दाससे कहा, मैंने कुछ भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे आवश्यक है, मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा। दूसरेने कहा, मैंने ५ जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखनेको जाता हूं, मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा। तीसरेने कहा, मैंने बिवाह किया है, इस लिये मैं नहीं आ सकता हूं"।

२, ग. कर उगाहनेहारों और पापियोंका बुलाया जाना। उस दासने आके अपने स्वामीको ये बातें सुनाईं। तब उसने क्रोधकर कहा, "नगरकी सड़कों और गलियोंमें शीघ्र जाके कंगालों, टुंडों, लंगड़ों और अंधोंको यहां ले आ"। दासने फिर कहा, "हे स्वामी, जैसे आपने आज्ञा दिई तैसे किया गया है, और अब तक जगह है"।

३, ग. संसारियोंका बुलाया जाना। स्वामीने कहा, "राज पथोंमें और गाछोंके नीचे जाके लोगोंको बिन लानेसे मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे। मैं तुमसे कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्योंमेंसे कोई मेरी बियारी न चीखेगा"।

ग. हिसकः ३३, ११. प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि "अपने जीवनसों, दुष्टोंकी मृत्युसे मैं प्रसन्न नहीं हूं, परन्तु जिस्तें दुष्ट अपनी चालसे फिरे और जीवे"।
आओ, सब पापी लोग इत्यादि-साखी. ५०, १, ३ + ४।
५. भाग। ३. निर्णय॥

३०. खोई हुई भेड़ और उड़ाऊ पुत्र।

(लूक १५.)

१, ग. पश्चात्तापी मनुष्यके विषय ईश्वरका आनन्द। करउगाहने-हारे और पापी लोग सब यीशु पास आते थे, कि उसकी सुनें। और फरीशी और अध्यापक कुड़कुड़ाके कहने लगे, "यह तो पापियोंको ग्रहण करता और उनके संग खाता है"। तब उसने उन्होंसे यह दृष्टान्त कहा, "तुममेंसे कौन मनुष्य है कि उसकी १०० भेड़ हों, और उसने उनमेंसे एकको खोया हो। वह ९९ को जंगलमें न छोड़े, और जबलों उस खोई हुई को न पावे, तबलों उसकी खोजमें न जाय। और वह उसे पाके आनन्दसे अपने कांधोंपर रखता है और घरमें आके मित्रों और पड़ोसियोंको एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहता है, मेरे संग आनन्द करो, कि मैंने अपनी खोई हुई भेड़ पाई है, मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे जिन्हें पश्चात्ताप करनेका प्रयोजन न होय, ऐसे ९९ धर्म्मियोंसे अधिक एक पापीके लिये, जो पश्चात्ताप करे स्वर्गमें आनन्द होगा"।

ग. लूक १९, १०. मनुष्यका पुत्र खोये हुएको ढूंढने और बचाने आया है। मैं भेड़के तुल्य भूल रहा इत्यादि-भजन. ११९, २। २. निर्णय—मुझ खोये हुए और स्थापित इत्यादि। ३. निर्णय—पापोंको क्षमा इत्यादि।

२, ग. मनुष्यका ईश्वरसे उलट जाना। फिर यीशुने कहा, "किसी मनुष्यके दो पुत्र थे। उनमेंसे छुटकेने कहा, हे पिता, सम्पत्तिमेंसे जो मेरा अंश होय, सो मुझे दीजिये। तब पिताने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दिई। बहुत दिन नहीं बीते, कि छुटका पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपनमें दिन बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई।

३, ग. शैतानकी सेवा करते हुए मनुष्यकी दुर्दशा। जब वह सब कुछ उड़ा चुका तब उस देशमें बड़ा अकाल पड़ा। और वह कंगाल हो गया। तब वह जाके उस देशके निवासियोंमेंसे एकके यहां रहने लगा, जिसने उसे अपने खेतोंमें सुअर चरानेको भेजा। और वह उन छीमियोंसे जिन्हें सुअर खाते थे, अपना पेट भरने चाहता था। और कोई नहीं उसको कुछ देता था।

४, ग. मनुष्यका मन फिराना। तब उसे चेत हुआ, और उसने कहा, मेरे पिताके कितने मजूरोंको भोजनसे अधिक रोटी होती है, और मैं भूखसे

मरता हूं। मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उससे कहूंगा, हे पिता, मैंने स्वर्गके विरुद्ध और आपके साम्हने पाप किया है, मैं फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरोंमेंसे एकके समान कीजिये। तब वह उठके अपने पिता पास चला गया। पर वह दूरही था कि उसके पिताने उसे देखके दया किई और दौड़के उसके गलेमें लिपटके उसे चूमा। पुत्रने उससे कहा, हे पिता मैंने स्वर्गके विरुद्ध और आपके साम्हने पाप किया है और फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं।

५, ग. मनुष्यका ईश्वरसे फिर ग्रहण किया जाना। परन्तु पिताने अपने दासोंसे कहा, सबसे उत्तम वस्त्र निकालके उसे पहिनाओ, उसके हाथमें अंगूठी और पांवोंमें जूते पहिनाओ और मोटा बछड़ू लाके मारो। और हम खावें और आनन्द करें, क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था फिर जीया है, खो गया था फिर मिला है। तब वे आनन्द करने लगे।



६, ग. स्वधर्म्मी पुत्रका कुड़कुड़ाना। उसका जेठा पुत्र खेतमें था। जब वह आते हुए घरके निकट पहुंचा तब बाजा और नाचका शब्द सुना। और उसने सेवकोंमेंसे एकसे पूछा, यह क्या है? उसने कहा, आपका भाई आया है, और आपके पिताने मोटा बछड़ू मारा है, इस लिये कि उसे भला चंगा पाया है। तब उसने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा। इस लिये

"उसका पिता बाहर आ उसे मनाने लगा । परन्तु उसने कहा, देखिये, मैं इतने बरसोंसे आपकी सेवा करता हूं और कभी आपकी आज्ञाको उल्लंघन न किया । तौभी आपने मुझे एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने मित्रोंके संग आनन्द करता । परन्तु आपका यह पुत्र, जो वेश्याओंके संग आपकी सम्पत्ति खा गया है, ज्योंही आया त्योंही आपने उसके लिये मोटा बछड़ू मारा है । पिताने कहा, हे पुत्र, तू सदा मेरे संग है, और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है परन्तु आनन्द करना और हर्षित होना उचित था, क्योंकि यह तेरा भाई मुआ था फिर जीया है, खो गया था फिर मिला है" ।

गा. १ योहन १, ९. जो हम अपने पापोंको मान लेवें, तो ईश्वर हमारे पापोंको क्षमा करनेको और हमें सब अधर्म्मसे शुद्ध करनेको विश्वास योग्य और धर्म्मी है ।
हमारे पापसे जो अपार इत्यादि-साक्षी. ६९, ५ । २ निर्णय – मुझ खोये हुए इत्यादि । ३ निर्णय – पापोंकी क्षमा इत्यादि ॥

---

२१. धनवान मनुष्य और इलियाजर ।

(लूक १६)

१, गा. इस लोकमें दोनोंकी भिन्न दशा । यीशुने कहा, "एक धनवान मनुष्य था, जो बैंजनी वस्त्र और मलमल पहिनता प्रतिदिन विभव और सुखसे रहता था । और इलियाजर नाम एक कंगाल उसकी डेवढ़ीपर डाला गया था, जो घावोंसे भरा हुआ था और उन चूरचारोंसे जो धनवानकी मेज से गिरते थे, पेट भरने चाहता था । और कुत्ते भी आके उसके घावोंको चाटते थे । वह कंगाल मर गया । और दूतोंने उसको इब्राहीमकी गोदमें पहुंचाया । वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया" ।

२, गा. उस लोकमें दोनोंकी भिन्न दशा । परलोकमें उसने पीड़ामें पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूरसे इब्राहीमको और उसकी गोदमें इलियाजरको देखा । तब वह पुकारके बोला, "हे पिता इब्राहीम मुझपर दया करके इलियाजरको भेजिये, कि अपनी अंगुलीका छोर पानीमें डुबाके मेरी जीभको ठंढी करे क्योंकि मैं इस ज्वालामें कलपता हूं" ।



३, ग. एकके मुक्ति पाने और दूसरेके दण्ड पानेका कारण। परन्तु इब्राहीमने कहा, "हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति पा चुका है, और वैसाही इलियाजर विपत्ति। परन्तु अब वह शान्ति पाता है, और तू कलपता है। इसको छोड़ हमारे और तुम्हारे बीचमें बड़ा अन्तर ठहराया गया है कि जो लोग इधरसे उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें, सो नहीं जा सकें। और न उधरवे लोग इस पार हमारे पास आवें"। उसने कहा, "तब हे पिता, मैं आपसे बिन्ती करता हूं, उसे मेरे पिताके घर भेजिये क्योंकि मेरे ५ भाई हैं। वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो, कि वे भी इस पीड़ाके स्थानमें आवें"। इब्राहीमने कहा, "मूसा और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तक उनके पास हैं, वे उनकी सुनें"। वह बोला, "हे पिता इब्राहीम सो नहीं, परन्तु यदि मृतकोंमेंसे कोई उनके पास जाय, तो वे पश्चात्ताप करेंगे"। इब्राहीमने कहा, "जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओंकी नहीं सुनते हैं, तो यदि मृतकोंमेंसे कोई जी उठे तौभी नहीं मानेंगे"।

ग. १ योहन २, १५-१७. न तो संसारसे न संसारमें की वस्तुओंसे प्रीति रखो। यदि कोई संसारसे प्रीति रखता है तो पिताका प्रेम उसमें नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसारमें है अर्थात शरीरका अभिलाष, नेत्रोंका अभिलाष और जीविकाका घमंड, सो पिताकी ओरसे नहीं है, परन्तु संसारकी ओरसे है। संसार और उसका अभिलाष बीता जाता है, परन्तु जो ईश्वरकी इच्छापर चलता है सो सदालों ठहरता है।

वहां न पाप है न तो स्त्राप इत्यादि-साक्षी. १२०, २। १ + ६ आज्ञा॥

२१. दस कोढ़ी।

(लूक १७)

१, ख. दसोंका शुद्ध किया जाना। यीशु जाते हुए किसी गांवमें प्रवेश करता था। तब दस कोढ़ी उसके सन्मुख आ दूर खड़े हुए और ऊंचे शब्दसे बोले, "हे यीशु गुरु हमपर दया कीजिये"। उसने उन्होंसे कहा, "जाओ अपने तईं याजकोंको दिखाओ"। जाते हुए वे शुद्ध किये गये।

२, ख. एकहीका धन्य मानना। तब उनमेंसे एकने, जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं, बड़े शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर आया और यीशुका धन्य मानते हुए उसके चरणोंपर मुंहके बल गिरा, और वह शोमिरोनी था। इसपर यीशुने कहा, "क्या दसों शुद्ध न किये गये, तो नौ कहां हैं? क्या इस अन्यदेशीको छोड़ कोई नहीं ठहरे, जो ईश्वरकी स्तुति करनेको फिर आवें"? तब उसने उससे कहा, "उठ चला जा तेरे विश्वासने तुझे बचाया है"।

ख. गीत ५०, १४. ईश्वरके लिये धन्यवादकी भेंट चढ़ा और अति महान के लिये अपनी मनौतियां पूरी कर।
धन है परमेश्वर इत्यादि-साखी. १०, ३। ३. आज्ञा १ निर्णय—सब जोखिमसे बचाता इत्यादि।

ग. मत्ती ११. २८. हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा।
स्वर्गधामसे तुझे लाया इत्यादि-साखी. १२, ५। ७. बिन्ती॥

---

२२. फरीशी और करउगाहनेहारा।

बालकोंका आशीष पाना।

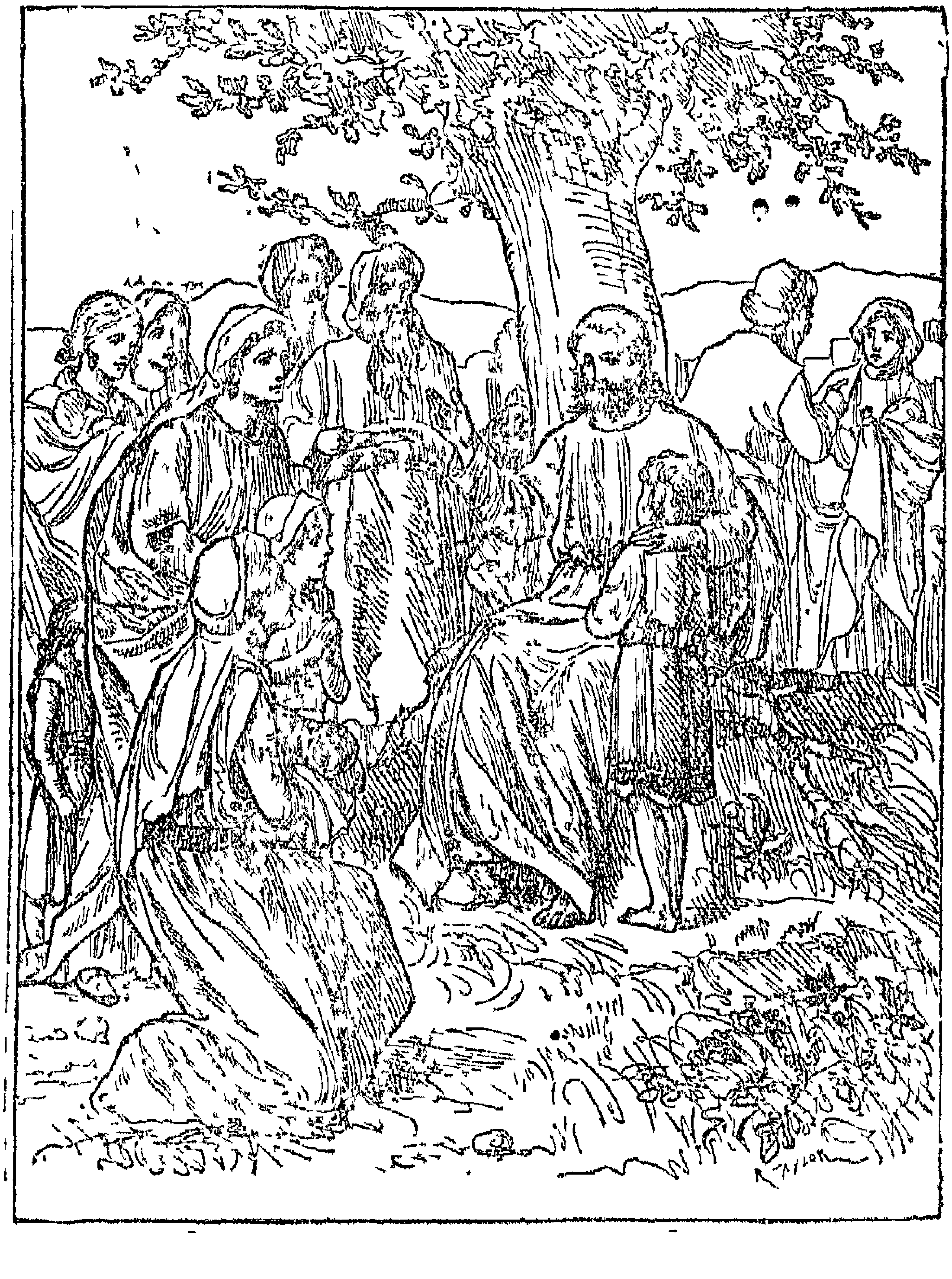
(लूक १८. मत्ती १९. मार्क १०)

१, ग. स्वधर्मी फरीशीकी प्रार्थना। यीशुने कितनोंसे, जो अपने-पर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरोंको तुच्छ जानते थे यह कहा, "दो मनुष्य प्रार्थना करनेको मन्दिरमें गये, एक फरीशी और दूसरा कर-उगाहनेहारा। फरीशीने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर, मैं तेरा धन्य मानता हूं कि मैं दूसरोंके समान नहीं हूं, जो उपद्रवी, अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं, और न इस करउगाहनेहारेके समान। मैं अठवारेमें दो बार उपवास करता हूं। मैं अपनी कमाईका दसवां अंश देता हूं।

२, ग. पश्चात्तापी करउगाहनेहारेकी प्रार्थना। करउगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्गकी ओर आंखें उठाने भी न चाहा, परन्तु अपनी छाती पीटके कहा, "हे ईश्वर मुझ पापीपर दया कर"।

३, ग. प्रार्थनाका फल। मैं तुमसे कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं, पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ अपने घरको गया क्योंकि जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा। और जो अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।

ग. रोमी ३, २२-२४. कुछ भेद नहीं है, क्योंकि सभोंने पाप किया है और ईश्वरकी प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं, पर उसके अनुग्रहसे उस उद्धारके द्वारा जो खीष्ट यीशुमें है, सेंतमेंत धर्म्मी ठहराये जाते हैं। यीशु तू है मेरी आश इत्यादि-साक्षी. ६६, १-४। ५. बिन्ती।



४, ग. यीशुका बालकोंको आशीष देना । लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे । परन्तु शिष्योंने लानेहारोंको डांटा । यीशुने यह देखके अप्रसन्न हो कहा, "बालकोंको मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो, क्योंकि स्वर्गका राज्य ऐसोंका है । मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वरके राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे, वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा" । तब उसने उन्हें गोदीमें लेके उनपर हाथ रखके उन्हें आशीष दिई ।

क. १ योहन ४, १९. हम उसको प्यार करते हैं, क्योंकि पहिले उसने हमें प्यार किया है ।
हे ईश्वर देख इस लड़केको इत्यादि-साक्षी. ४१, १-४ ।

ख. मत्ती ५, ८. धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे ।
तेरा हृदय निर्मल सदय इत्यादि-साक्षी. ६४, ७ ।

ग. योहन ३, ५. कोई यदि जल और आत्मासे न जन्मे तो ईश्वरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है ।
हल्लिलूयाह धन स्तुति हो इत्यादि-साक्षी. १, ३ । ४. भाग ॥

---

२४. दाखबारीमेंके बनिहार ।

(मत्ती २०)

१, ग. कामके लिये बुलाया जाना । यीशुने कहा, "स्वर्गका राज्य किसी गृहस्थके समान है, जो भोरको निकला कि अपनी दाखकी बारीमें बनिहारोंको लगावे । और उसने बनिहारोंके साथ दिन भरको एक २ सूकी मजूरी ठहराके उन्हें अपनी दाखकी बारीमें भेजा । जब पहर एक दिन चढ़ा, तब उसने बाहर जाके दूसरोंको चौकमें बेकार खड़े देखा और उसने कहा, तुमभी दाखकी बारीमें जाओ, और जो कुछ उचित होय मैं तुम्हें देऊंगा, सो वे भी गये । फिर उसने दूसरे और तीसरे पहरके निकट बाहर जाके वैसाही किया । घड़ी एक दिन रहते उसने बाहर जाके औरोंको बेकार खड़े पाया और उनसे कहा, तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े हो ? उन्होंने कहा, किसीने हमको काममें नहीं लगाया है । उसने कहा, तुम भी दाखकी बारीमें जाओ, और जो उचित होय, सो पाओगे ।

२, ८ ग. मजूरी पाना। जब सांझ हुई, तब दाखकी बारीके स्वामीने अपने भण्डारीसे कहा, बनिहारोंको बुलाके उन्हें मजूरी दे। सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते आये थे, उन्होंने आके एक २ सूकी पाई। तब अगलोंने समझा कि हम अधिक पावेंगे, परन्तु उन्होंने भी एक २ सूकी पाई। इसको लेके वे गृहस्थपर कुड़कुड़ाके बोले, इन पिछलोंने एकही घड़ी काम किया और आपने उनको हमारे तुल्य किया है, जिन्होंने दिन भरका भार और घाम सहा। उसने उनमेंसे एकको उत्तर दिया है मित्र, मैं तुझसे कुछ अनीति नहीं करता हूं। क्या तूने मुझसे एक सूकी लेनेको न ठहराया? अपना ले और चला जा। मेरी इच्छा है कि जितना तुझको, उतना इस पिछलेको भी देऊं। क्या मुझे उचित नहीं, कि अपने धनसे जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होनेके कारण बुरी दृष्टिसे देखता है? इस रीतिसे जो पिछले हैं, सो अगले होंगे। और जो अगले हैं सो पिछले होंगे। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

ग. रोमी ३, २८. हम यह सिद्धान्त करते हैं कि बिना व्यवस्थाके कर्म्मोंसे मनुष्य विश्वाससे धर्म्मी ठहराया जाता है।
मैं पापसे छुटूं किस प्रकार इत्यादि-साखी. ६९, २। २. निर्णय॥

---

३५. इलियाजरका जिलाया जाना।

(योहन ११)

१, ग. इलियाजरका रोगी होना और मर जाना। इलियाजर नाम बैथनियाका एक मनुष्य रोगी था। तब उसकी दो बहिनों मर्था और मरियमने यीशुको कहला भेजा कि "हे प्रभु देखिये, जिसे आप प्यार करते हैं, सो रोगी है"। यह सुनके यीशुने कहा, "यह रोग मृत्युके लिये नहीं परन्तु ईश्वरकी महिमाके लिये है कि ईश्वरके पुत्रकी महिमा उसके द्वारासे प्रगट किई जाय"। दो दिन पीछे उसने शिष्योंसे कहा, "हमारा मित्र इलियाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगानेको जाता हूं"। उसके शिष्योंने कहा, "हे प्रभु जो वह सो गया है, तो चंगा हो जायगा"। उन्होंने समझा कि उसने नींदमें सो जानेके विषयमें कहा। इस लिये यीशुने उनसे खोलके कहा, इलियाजर मर

है। और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं था, जिस्तें तुम विश्वास करो। परन्तु आओ, हम उस पास चलें"।

२, ग. मर्था और मरियमसे यीशुकी बातचीत। मर्थाने जब सुना कि यीशु आता है, तब जाके उससे भेंट किई। परन्तु मरियम घरमें बैठी रही। मर्थाने यीशुसे कहा, "हे प्रभु जो आप यहां होते, तो मेरा भाई नहीं मरता। परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप ईश्वरसे मांगें ईश्वर आपको देगा"। यीशुने कहा, "तेरा भाई जी उठेगा"। मर्थाने कहा, "मैं जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थानमें, वह जी उठेगा"। यीशुने कहा, मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं। जो मुझपर विश्वास करे, सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा। क्या तू इस बातका विश्वास करती है"? वह बोली, "हां प्रभु मैंने विश्वास किया है कि ईश्वरके पुत्र खीष्ट आपही हैं"। यह कहके उसने अपनी बहिनको चुपकेसे बुलाके कहा, "गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं"। तब मरियम शीघ्र उठके यीशु पास आके उसके पांवों पड़ी और बोली, "हे प्रभु जो आप यहां होते, तो मेरा भाई नहीं मरता"।

३, ग. यीशुका इलियाजरको जिलाना। जब यीशुने उसे रोते हुए और जो यहूदी लोग उसके संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा, तब आत्मामें विकल होके घबराया और कहा, "तुमने उसे कहां रखा है"? वे बोले, "हे प्रभु आके देखिये"। यीशु रोया। तब यहूदियोंने कहा, "देखो वह उसे कैसा प्यार करता था"। परन्तु उनमेंसे कितनोंने कहा, "क्या यह जिसने अंधेकी आंखें खोलीं, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य नहीं मरता"। जब यीशु कबरपर आया, तब उसने कहा, "पत्थरको सरकाओ"। मर्था बोली, "हे प्रभु, वह तो अब बसाता है, क्योंकि उसको चार दिन हुए हैं। यीशुने कहा, "क्या मैंने तुझसे न कहा कि जो तू विश्वास करे, तो ईश्वरकी महिमाको देखेगी"। तब उन्होंने पत्थरको सरकाया। और यीशुने ऊपर दृष्टिकर कहा, "हे पिता, मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने मेरी सुनी है"। और उसने बड़े शब्दसे पुकारा, "हे इलियाजर बाहर आ"। तब वह मृतक चद्दरसे हांथ पांव बांधे हुए बाहर आया। और उसका मुंह अंगोछेमें लपेटा हुआ था। यीशुने उनसे कहा, "उसे खोलो और जाने देओ"।

४९ ग. आश्चर्य कर्म्मका भिन्न गुण। तब बहुतसे यहूदी लोगोंने यह देखके यीशुपर विश्वास किया। परन्तु कितनोंने फरीशियोंके पास जाके जो यीशुने किया था, सो उन्होंसे कह दिया। और उसी दिनसे उन्होंने उसे घात करनेको आपसमें विचार किया।

ग. योहन ५, २८+२९. वह समय आता है, जिसमें जो कबरोंमें हैं, सो सब मनुष्यके पुत्रका शब्द सुनके निकलेंगे। जिससे भलाई करनेहारे जीवनके लिये जी उठेंगे। और बुराई करनेहारे दण्डके लिये जी उठेंगे।
जय हो जय सनातन जय इत्यादि-साक्षी. ३५, १+२। ३. निर्णय—देहके जी उठने इत्यादि। ४. भाग ४॥

२६. यीशुका पिछली बेर यिरूशलीमको जाना।

(मत्ती २०+२१. मार्क १०+११. लूक १८+१९. योहन १२.)

१, ग. यीशुका अपना दुःख भोग सुनाना। उसके पीछे यीशुने यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें १२ शिष्योंसे कहा, "देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं। और जो कुछ मनुष्यके पुत्रके विषयमें भविष्यद्वक्ताओंसे लिखा गया है सो सब पूरा किया जायगा। वह अन्यदेशियोंके हाथ सौंपा जायगा। उससे ठट्ठा और अपमान किया जायगा। वे उसपर थूकेंगे और उसे कोड़े मारके घात करेंगे। परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा"। उन्होंने इन बातोंमेंसे कोई बात न समझी। और जो कहा जाता था, सो वे नहीं बूझते थे।

ग. यश: ५३, ४+५. निश्चय उसने हमारे रोग उठा लिये और हमारे दुःख ले गया। हमने उसे प्रहारित, ईश्वरका मारा, कूटा और दुःखाया हुआ समझा। परन्तु वह हमारे अपराधोंके लिये छेदा गया हमारी बुराइयोंके कारणसे कुचला गया। हमारे कुशलके लिये उसपर ताड़ना हुई, और उसके मार खानेसे हम चंगे हो गये।
हे माथ जो घावसे भरा इत्यादि-साक्षी. ३४, १+२। २. निर्णय—पंतियुस पिलातुसकी आज्ञासे दुःख उठाया इत्यादि।

२, ग. यिरीहो नगरके निकटके अंधेका चंगा किया जाना। जब यीशु यिरीहो नगरके निकट आता था तब एक अंधा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा भीख मांगता था। जब उसने सुना कि बहुत लोग साम्नेसे जाते हैं तब पूछा, "यह क्या है"? लोगोंने उसको बताया कि यीशु नासरी जाता है।



तब उसने पुकारके कहा, "हे यीशु दाऊदके सन्तान, मुझपर दया कीजिये", लोगोंने उसे डांटा कि वह चुप रहे। परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा, "हे दाऊदके सन्तान मुझपर दया कीजिये"। तब यीशु खड़ा रहा और उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं"? वह बोला, "हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं"। यीशुने उससे कहा, "अपनी दृष्टि पा, तेरे विश्वासने तुझे चंगा किया है"। वह तुरन्त देखने लगा और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ यीशुके पीछे हो लिया। और सब लोगोंने देखके ईश्वरका धन्यवाद किया।

ग. १ कोरिन्थ १, ३०. खीष्ट यीशु ईश्वरकी ओरसे हमोंको ज्ञान और धर्म्म और पवित्रता और उद्धार हुआ है।
धन तेरा प्रेम अनन्ता इत्यादि-साक्षी. १२, ३+४। १ निर्णय—सब जोखिमसे बचाता इत्यादि। ७ विन्ती।

२, ख. यीशुका यिरूशलीममें प्रवेश करना। जब वे यिरूशलीमके निकट आये और जैतून पर्वतके समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे, तब यीशुने दो शिष्योंको यह कहके भेजा कि "जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें जाओ। और तुम तुरन्त एक गधीको बंधी हुई और उसके साथ बच्चेको पाओगे, उन्हें खोलके मेरे पास लाओ। जो तुमसे कोई कुछ कहे, तो कहो कि प्रभुको इनका प्रयोजन है। तब वह तुरन्त उनको भेजेगा"। यह सब इस लिये हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता [जकरिया ९, ९] से कहा गया था सो पूरा होवे, कि सियोनकी पुत्रीसे कहो, देख तेरा राजा नम्र और गधेपर, हां लादूके बच्चेपर बैठा हुआ तेरे पास आता है"। सो शिष्योंने जाके जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा दिई, वैसा किया। वे उस गधीको और बच्चेको लाये और उनपर अपने कपड़े

रखके यीशुको उनपर (कपड़ोंपर) बैठाया । बहुतेरे लोगोंने अपने २ कपड़े मार्गमें बिछाये । दूसरोंने वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बिछाईं । और जो लोग आगे पीछे चलते थे, उन्होंने पुकारके कहा, "दाऊदकी सन्तानकी जय धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता है । सबसे ऊंचे स्थानमें जय जयकार होवे" । तब भीड़मेंसे फरीसियोंने कहा, "हे गुरु, अपने शिष्योंको डांटिये" । उसने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूं, जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे" ।

ख. यश: ६०, १. उठ ज्योतिमान हो, क्योंकि तेरी ज्योति आ गई, और परमेश्वरका तेज तुझपर उदय हुआ ।
मैं कैसे तुझे भेंटूं इत्यादि-साक्षी. १२, १+२ । २ निर्णय ।

ग. मत्ती १०, ३२-३३. जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मान लेऊंगा । परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे, उससे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मुकरूंगा ।
स्वर्गधामसे तुझे लाया इत्यादि-साक्षी. १२, ५+६ । २ विन्ती ।

४, ग. **यीशुका यिरूशलीमपर रोना ।** जब वह निकट आया तब नगरको देखके उसपर रोया और कहा, "तूभी अपने कुशलकी बातें, हां अपने इस दिनमें भी जो जानता, परन्तु अब वे तेरे नेत्रोंसे छिपी हैं । वे दिन तुझपर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझपर मोर्चा बांधेंगे, तुझे घेरेंगे, चारों ओर रोक रखेंगे, तुझको और तुझमें तेरे बालकोंको मिट्टीमें मिलावेंगे और तुझमें पत्थरपर पत्थर न छोड़ेंगे, क्योंकि तूने वह समय जिसमें तुझपर दृष्टि किई गई, न जाना" ।

५, ग. **मन्दिरका शुद्ध किया जाना ।** यीशु यिरूशलीममें प्रवेश करके मन्दिरमें गया, और जो लोग उसमें बेचते और मोल लेते थे, उन्हें निकालने लगा और उनसे कहा "लिखा है कि मेरा घर प्रार्थनाका घर है, परन्तु तुमने उसे डाकुओंका खोह बनाया है" । तब अंधे और लंगड़े उस पास आये । और उसने उन्हें चंगा किया । वह मन्दिरमें प्रतिदिन उपदेश करता था । परन्तु प्रधान याजक और अध्यापक उसे नाश करने चाहते थे, पर नहीं जानते थे कि क्या करें, क्योंकि सब लोग उसकी सुननेको लौलीन थे । सांझ होते वह नगरके बाहर बैथनियाको गया और वहां टिका ।

ग. मत्ती २३, ३७. हे यिरूशलीम यिरूशलीम, जो भविष्यद्वक्ताओंको मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं, उन्हें पत्थरवाह करती

है। जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके नीचे एकट्ठे करती है, वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बालकोंको एकट्ठे करनेकी इच्छा किई, परन्तु तुमने न चाहा।
कबलों तू निश्चिन्त रहेगा इत्यादि-यात्री. ६८, ३। इस आज्ञाओंका अन्तिम बचन॥

---

३७. दुष्ट माली। बिवाहका भोज। करका मुद्रा।

(मत्ती २१+२२. मार्क १२. लूक २०.)

१, ग. ईश्वरका दया रूपी प्रबन्ध। जब यीशु मन्दिरमें गया, तब प्रधान याजक और प्राचीन उस पास आये। और उसने उनको दृष्टान्तोंसे कहा, "एक गृहस्थ था, जिसने दाखकी बारी लगाई, उसको चहुं ओर बेड़ दिया, उसमें रसका कुण्ड खोदा और गढ़ बनाया और मालियोंको उसका ठीका दे परदेशको चला गया।

२, ग. मालियोंकी अबिश्वस्तता और ईश्वरकी सहनशीलता। जब फलका समय निकट आया, तब उसने अपने दासोंको दाखकी बारीका फल लेनेको भेजा। परन्तु मालियोंने उसके दासोंको लेके एकको मारा, दूसरेको घात किया और तीसरेको पत्थरवाह किया। फिर उसने दूसरे दासोंको भेजा। परन्तु उन्होंने उनसे भी वैसाही किया। सबसे पीछे उसने यह कहके अपने पुत्रको उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका आदर करेंगे। परन्तु मालियोंने उसके पुत्रको देखके आपसमें कहा, यह तो अधिकारी है आओ, हम उसे मार डालें और उसका अधिकार ले लेवें। और उन्होंने उसे लेके दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला। जब दाखकी बारीका स्वामी आवेगा, तब उन मालियोंसे क्या करेगा"।

३, ग. दुष्टोंका दण्ड पाना। उन्होंने कहा, "वह उन बुरे लोगोंको नाश करेगा और दाखकी बारीका ठीका दूसरे मालियोंको देगा, जो फलोंको उनके समयोंमें उसे दिया करेंगे"। यीशुने उनसे कहा, "इस लिये मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरका राज्य तुमसे ले लिया जायगा और अन्यदेशियोंको दिया जायगा"।

ग. इब्रानी १, १+२. ईश्वरने पूर्व्वकालमें समय २ और नाना प्रकारसे भविष्यद्वक्ताओंके द्वारा पितरोंसे बातें कर इन पिछले दिनोंमें हमोंसे पुत्रके द्वारा बातें किईं, जिसे उसने सब वस्तुओंका अधिकारी ठहराया, जिसके द्वारा उसने सारे जगतको सृजा भी ।
तू अपना वचन यीशु खीष्ट इत्यादि-साक्षी. ९३, २+३ । ६. याज्ञा । ६. निर्णय—मंगल समाचारके द्वारा बुलाया इत्यादि ।

४, ग. विवाहका भोज । (बुलाहटको तुच्छ करना)। इस पर यीशुने फिर कहा, "स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है, जो अपने पुत्रका विवाह करता था । और उसने अपने दासोंको भेजा कि नेवतहरियोंको विवाहके भोजमें बुलावें । परन्तु उन्होंने आने न चाहा । फिर उसने दूसरे दासोंको यह कहके भेजा कि नेवतहरियोंसे कहो, देखो सब कुछ तैयार है, विवाहके भोजमें आओ । परन्तु नेवतहरियोंने इसका कुछ सोच न किया, पर कोई अपने खेतको और कोई अपने व्योपारको चले गये । दूसरोंने उसके दासोंको पकड़के दुर्दशा करके मार डाला । यह सुनके राजाने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन हत्यारोंको नाश किया और उनके नगरको फूंक दिया ।

विवाहीय वस्त्रको तुच्छ करना । तब उसने अपने दासोंसे कहा, विवाहका भोज तो तैयार है, परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे । इस लिये चौराहोंमें जाके जितने लोग तुम्हें मिलें, सभोंको विवाहके भोजमें बुलाओ । दासोंने जाके क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले, सभोंको एकट्ठे किया । और विवाहका स्थान जेवनहरियोंसे भर गया । जब राजा जेवनहरियोंको देखनेको भीतर आया, तब उसने वहां एक मनुष्यको देखा, जो विवाहीय वस्त्र नहीं पहिने हुए था । उसने उससे कहा, हे मित्र, तू यहां बिना विवाहीय वस्त्र पहिने क्योंकर भीतर आया ? वह निरुत्तर हुआ । तब राजाने सेवकोंसे कहा, इसके हाथ पांव बांधो और उसको ले जाके बाहरके अंधकारमें डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना होगा । क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं"।

ग. २ कोरिन्थ ५, १०. हम सभोंका खीष्टके विचार आसनके आगे प्रगट किया जाना अवश्य है, जिस्तें हर एक जन क्या भला काम क्या बुरा, जो कुछ किया हो, उसके अनुसार देहके द्वारा किये हुएका फल पावे । हल्लिलूयाह धन्य स्तुति हो इत्यादि-साक्षी. १, ३ । ३. निर्णय—मुझे मंगल समाचारके द्वारा बुलाया इत्यादि । ५ भाग ४—ब्रह्म यथार्थ योग्य इत्यादि ।

५, ग. करका मुद्रा। (फरीशियोंकी चतुराई) । तब फरीशियोंने जाके आपसमें बिचार किया, इसलिये कि यीशुको बातमें फसावें। सो उन्होंने अपने शिष्योंको हेरोदियोंके संग उस पास यह कहनेको भेजा कि हे गुरु, हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं, क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके बात नहीं करते हैं। सो हमसे कहिये आप क्या समझते हैं, कैसरको कर देना उचित है कि नहीं" ?

यीशुकी बुद्धि। यीशुने उनकी दुष्टता जानके कहा, "हे कपटियो, मेरी परीक्षा क्यों करते हो, करका मुद्रा मुझे दिखाओ"। तब वे उस पास एक सूकी लाये। उसने कहा, "यह मूर्त्ति और छाप किसकी है" ? उन्होंने उत्तर दिया, "कैसरकी"। तब उसने कहा, "तो जो कैसरका है, सो कैसरको देओ। और जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ"। यह सुनके वे अचम्भित हुए और उसको छोड़के चले गये।

ग. रोमी १३, ७. सो सभोंको जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ। जिसे कर देना हो उसे कर देओ। जिसे महसूल देना हो, उसे महसूल देओ। जिससे भय करना हो, उससे भय करो। जिसका आदर करना हो, उसका आदर करो।
खीष्टके तुल्य कौन और क्या इत्यादि-साक्षी. ७२, १। ५. आज्ञा।

---

२८. यिरूशलीमका नष्ट होना और

जगतका अन्त। महाबिचार।

(मत्ती २४ + २५. मार्क १३. लूक २१)

१, ग. यिरूशलीमका नष्ट होना और जगतका अन्त। जब यीशु मन्दिरसे निकलके जाता था, तब उसके शिष्योंमेंसे एकने कहा, "हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और कैसी रचना है"। यीशुने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं वे दिन आवेंगे, जिन्होंमें पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा"। उसके शिष्योंने उससे पूछ करके कहा, "हमोंसे कहिये यह कब होगा। और आपके आनेका और जगतके अन्तका क्या चिन्ह होगा"। यीशुने उत्तर दिया, "जब

तुम लड़ाइयां और लड़ाइयोंकी चर्चा सुनो, तब मत घबराओ, क्योंकि इनका होना अवश्य है। परन्तु अन्त उस समयमें नहीं होगा। देश देशके, और राज्य राज्यके विरुद्ध उठेंगे। अनेक स्थानोंमें बड़े भुईंडोल, अकाल, और मरियां होंगी। भयंकर लक्षण और आकाशसे बड़े २ चिन्ह प्रगट होंगे। यह सब दुःखोंका आरम्भ होगा। तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे, कि क्लेश पाओ, और तुम्हें मार डालेंगे। और मेरे नामके कारण सब देशोंके लोग तुमसे बैर करेंगे। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता भी प्रगट होके बहुतोंको भरमावेंगे। पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा। और राज्यका सुसमाचार सब देशोंके लोगोंपर साक्षी होनेके लिये समस्त संसारमें सुनाया जायगा। तब अन्त होगा जब तुम यिरूशलीमको सेनाओंसे घेरे हुए देखो, तब जो यहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें। जो यिरूशलीममें हों, सो निकल जावें। येही दण्ड देनेके दिन होंगे। और उस समयमें ऐसा महा क्लेश होगा, जैसा अब तक न हुआ और कभी न होगा। ये लोग खड्गकी धारसे मारे पड़ेंगे और सब देशोंके लोगोंमें बन्धुवे किये जायेंगे। और यिरूशलीम अन्यदेशियोंसे रौंदा जायगा। उस क्लेशके पीछे सूर्य्य अन्धियारा हो जायगा चांद अपनी ज्योति न देगा। आकाशके तारे गिर पड़ेंगे। समुद्र और लहरोंका गर्जना होगा। पृथिवीपर लोगोंको संकट और घबराहट होगी। वे आकाशमें मनुष्यके पुत्रका चिन्ह देखके छाती पीटेंगे और आनेहारी बातोंके भय और बाट देखनेसे वे मृतकके ऐसे हो जायेंगे। तब वे मनुष्यके पुत्रको पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्यसे मेघोंपर आते देखेंगे। वह अपने दूतोंको भेजेगा, और वे उसके चुनेहुए लोगोंको एकट्ठे करेंगे। उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य जानता है, न स्वर्गके दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। क्योंकि वह फंदेकी नाईं पृथिवीके सब रहनेहारों पर आवेगा। इसलिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो"।

ग. १ योहन २, १७. संसार और उसका अभिलाष बीता जाता है। परन्तु जो ईश्वरकी इच्छापर चलता है, सो सदालों ठहरता है।
जाग उठो पुकारा हुआ इत्यादि-साक्षी १२१, १। २. निर्णय—जहां से वह जीवतों इत्यादि।

२, ग. महाविचार। "जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्य सहित आवेगा और सब पवित्र दूत उसके साथ, तब वह अपने ऐश्वर्य्यके सिंहासनपर बैठेगा।

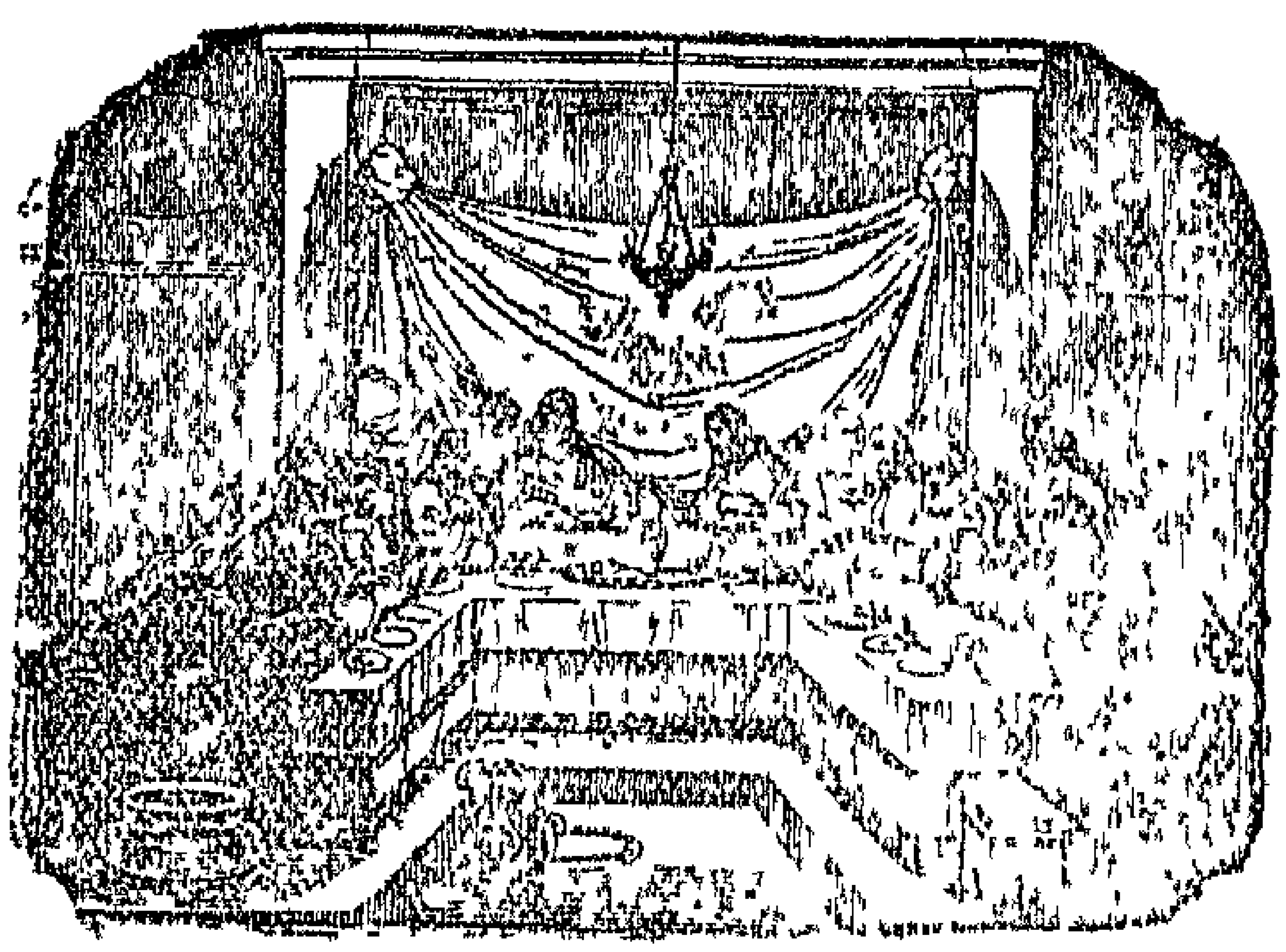
और सब देशोंके लोग उसके आगे एकट्ठे किये जायेंगे। और जैसा गड़ेरिया भेड़ोंको बकरियोंसे अलग करता है, तैसा वह उन्हें एक दूसरेसे अलग करेगा। वह भेड़ोंको अपनी दहिनी ओर, और बकरियोंको बाईं ओर खड़ा करेगा। तब वह उनसे, जो उसकी दहिनी ओर हैं, कहेगा, हे मेरे पिताके धन्य लोगो, आओ, जो राज्य जगतकी उत्पत्तिसे तुम्हारे लिये तैयार किया गया है, उसके अधिकारी होओ। और वह उनसे जो बाईं ओर हैं, कहेगा, हे स्रापित लोगो मेरे पाससे उस अनन्त आगमें जाओ, जो शैतान और उसके दूतोंके लिये तैयार किई गई है। सो ये लोग अनन्त ठंडमें, परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवनमें जा रहेंगे"।

ग. रोमी २, ६-८. ईश्वर हरएक मनुष्यको उसके कर्म्मोंके अनुसार फल देगा। जो सुकर्म्ममें स्थिर रहनेसे महिमा और आदर और अमरता ठूंढ़ते हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। परन्तु जो विवादी हैं और सत्यको नहीं मानते, पर अधर्म्मको मानते हैं, उनपर कोप और क्रोध पड़ेगा।
हे प्रकाश, जो ऊंचेसे इत्यादि-साक्षी. १०६, ४। २+३ निर्णय॥

---

२९ पीछला निस्तार पर्ब्ब।

(मत्ती २६. मार्क १४. लूक २२. योहन १३+१७.)



१, ग. यीशुको बध करनेका परामर्श। निस्तार पर्ब्बसे दो दिन पहिले प्रधान याजक और अध्यापकोंने एकट्ठे होके बिचार किया, कि यीशुको छलसे पकड़कर मार डालें। तब यहूदा इस्कारियोतीने उनके पास जाके कहा "जो

मैं उसे आप लोगोंके हाथ पकड़वाऊं, तो आप लोग मुझे क्या देंगे"? वे यह सुनके आनन्दित हुए और उसको ३० रुपये देनेकी प्रतिज्ञा किई। सो यहूदा उसी समयसे उसको पकड़वानेका अवसर ढूंढ़ने लगा।

२, ग. **निस्तार पर्व्वका भोजन।** अखमीरी रोटीके पर्व्वके पहिले दिन, जिसमें वे निस्तार पर्व्वका मेम्ना मारते थे, यीशुने पितर और योहनसे कहा कि "नगरमें जाओ और एक मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेओ। जिस घरमें वह पैठे, उस घरके स्वामीसे कहो, गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है, जिसमें मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्व्व का भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक बड़ी उपरौटी कोठरी दिखावेगा, वहां तैयार करो"। शिष्य लोग जाके, जैसा यीशुने उन्होंसे कहा, तैसा पाया और निस्तार पर्व्वका भोजन बनाया; सांझको यीशु १२ शिष्योंके संग आके भोजनपर बैठा और उनसे कहा, "मैंने यह निस्तार पर्व्वका भोजन दुःख भोगनेके पहिले तुम्हारे संग खानेकी बड़ी लालसा किई"।

ग. १ करिन्थ ५, ७. हमारा निस्तार पर्व्वका मेम्ना, अर्थात खीष्ट हमारे लिये बलि दिया गया है।

हे ईश्वरके मेम्ना निर्दोषी इत्यादि-साक्षी. २६, १-३। २ निर्णय।

३, ग. **यीशुका शिष्योंके पांवोंको धोना।** यीशुने बियारीसे उठके अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी, और पात्रमें जल डालके वह शिष्योंके पांव धोने और अंगोछेसे पोंछने लगा। जब वह पितरके पास आया तब उसने कहा "हे प्रभु आप मेरे पांव कभी न धोइयेगा"। यीशुने उत्तर दिया, "जो मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है"। तब पितरने कहा, "हे प्रभु, केवल पांव नहीं, परंतु मेरे हाथ और सिर भी धोइये"। यीशुने कहा, "जो नहाया है, उसको पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक नहीं है"। जब यीशुने उनके पांव धोये, तब फिर बैठके उन्होंसे कहा, "तुम मुझे हे गुरु, और हे प्रभु, पुकारते हो, और तुम अच्छा कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं, तो तुम्हें भी एक दूसरेके पांव धोना उचित है। मैंने तुमको नमूना दिया है कि जैसा मैंने तुमसे किया है तुम भी वैसा करो। और यदि तुम इन बातोंपर चलो, तो धन्य हो"।

मी.　१ पितर २, २१. खीष्टने हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि तुम उसकी लीकपर हो लेश्रो।
कौन है यीशुसे कृपाल इत्यादि-साखी. ७२, ४।
मत्ती २०, २८ मनुष्यका पुत्र सेवा करवानेको नहीं, परन्तु सेवा करनेको और बहुतोंके उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।
खीष्टका शिष्य हो जाना इत्यादि-साखी. ८८, १।

४, ग. यीशुका पकड़वानेहारेको प्रगट करना। यह बातें कहके यीशु आत्मामें व्याकुल हुआ और बोला, "मैं तुमसे सच २ कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वायगा"। इसपर शिष्य लोग एक दूसरेकी ओर ताकने और एक २ करके यीशुसे कहने लगे, "वह क्या मैं हूं"। और दूसरेने कहा, "क्या मैं हूं"। शिष्योंमेंसे एक (योहन) जिसे यीशु प्यार करता था, उसकी गोदमें बैठा हुआ था। उसीको पितरने सैन किया कि पूछिये, "कौन है"। तब उस शिष्यने यीशुसे कहा, "हे प्रभु कौन है"। उसने उत्तर दिया, "वही है, जिस को मैं यह रोटीका टुकड़ा डुबोके देऊंगा"। और उसने टुकड़ा डुबोके यहूदा इस्कारियोतीको दिया। और टुकड़ा लेनेके पीछे शैतान उसमें पैठ गया। यीशु ने उससे कहा, "जो तू करता है, सो बहुत शीघ्र कर"। तब यहूदा तुरन्त बाहर गया। और उस समय रात थी।

५, ख. नई आज्ञा। तब यीशुने शिष्योंसे कहा, "हे बालको, मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरेको प्यार करो, जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है। जो तुम आपसमें प्यार करो, तो उसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो"।

६, ग. प्रभुभोजका निरूपण। और यीशुने रोटी लिई और धन्य मानके उसे तोड़ा और अपने शिष्योंको दिया और कहा, "लेओ, खाओ, यह मेरा देह है, जो तुम्हारे लिये दिया जाता है। मेरे स्मरणके लिये यह किया करो"। इसी रीतिसे उसने बियारीके पीछे कटोरा भी लेके धन्य माना और उसे उन्हें दिया और कहा, "लेओ तुम सब इससे पीओ। यह मेरा लोहू, अर्थात नयेनियमका लोहू है, जो तुम्हारे और बहुतोंके लिये पापमोचनके निमित्त बहाया जाता है। जब २ तुम इससे पीओ तब मेरे स्मरणके लिये यह किया करो"।

ख. मत्ती ११, २८. हे सब लोगो, जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम देऊंगा।
आओ सब पापी लोग इत्यादि-साची. ५७, १+४।

ग. १ करिन्थ ११, २६. २८+२९ जब २ तुम यह रोटी खाओ और यह कटोरा पीओ, तब प्रभुकी मृत्युको, जबलों वह न आवे, प्रचार करते हो। परन्तु मनुष्य अपनेको परखे और इस रीतिसे यह रोटी खावे और इस कटोरेसे पीवे। क्योंकि जो अनुचित रीतिसे खाता और पीता है, सो खाने पीनेसे अपनेपर दण्ड लाता है।
अपनेको हे प्राण संवार इत्यादि-साची. ४८, १-६। ५. भाग।

७, ग. महायाजकीय प्रार्थना। यीशुने अपनी आंखें स्वर्गकी ओर उठाके कहा, "हे पिता, घड़ी आ पहुंची है। अपने पुत्रकी महिमा प्रगट कर, मैंने पृथिवीपर तेरी महिमा प्रगट किई है। और जो काम तूने मुझे करनेको दिया सो मैंने पूरा किया है। अभी हे पिता, तेरे संग जगतके होनेके आगे जो मेरी महिमा थी, उस महिमासे मेरी महिमा प्रगट कर। जिन मनुष्योंको तूने जगतमेंसे मुझको दिया है, उन्होंपर मैंने तेरा नाम प्रगट किया है। और मैं उनके लिये प्रार्थना करता हूं कि हे पवित्र पिता उन्हें अपनी सच्चाईसे पवित्र कर, तेरा वचन सच्चाई है। मैं केवल उनके लिये नहीं, परन्तु उनके लिये भी, जो इनके वचनके द्वारासे मुझपर विश्वास करेंगे, प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें। जैसा तू हे पिता, मुझमें है, और मैं तुझमें हूं तैसे वे भी हममें एक होवें। हे पिता, मैं चाहता हूं कि जहां मैं रहूं, तहां वे भी, जिन्हें तूने मुझको दिया है, मेरे संग रहें कि वे मेरी महिमाको देखें, जो तूने मुझको दिई"।

ग. १ योहन ३, १. देखो पिताने हमोंपर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वरके सन्तान कहावें।
प्रभु यीशु प्रेमको मूर इत्यादि-साची, ९८, ३-५। ३. भागका प्रवेशन।

४०, गेतशिमनीमें यीशुका महा दुःख।

(मत्ती २६. मार्क १४. लूक २२)



१, क. गेतशिमनीको जाना। वे भजन गाके जैतून पर्व्वतपर गये। और यीशुने उनसे कहा, "तुम सब इसी रात मेरे विषयमें ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगे"। पितरने उत्तर दिया, "यदि सब आपके विषयमें ठोकर खावें, तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा"। यीशुने उससे कहा, "मैं तुझे सत्य कहता हूं कि इसी रात मुर्गेके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा"। पितरने कहा, "जो आपके संग मुझे मरना हो, तौभी मैं आपसे न मुकरूंगा"।

ख. १ पितर ५, ५. दीनताको पहिन लेओ, क्योंकि ईश्वर अभिमानियोंसे
विरोध करता है, परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है।
आगे बढ़, मत हो भयमान इत्यादि-साक्षी. ९०, २। १. आज्ञा।

ग. १ करिन्थ १०, १२. जो समझता है, कि मैं खड़ा हूं, सो सचेत रहे, कि गिर न पड़े।
हो सावधान २ इत्यादि-साक्षी. ९१, ३। ६. बिन्ती।

२, क. दुःखका आरम्भ। तब यीशुने शिष्योंके संग गेतशिमनी नाम बारीमें आके उनसे कहा, "जबलों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तबलों तुम यहां बैठो"। और वह पितर, याकूब और योहनको अपने संग ले जाके शोक करने

और बहुत उदास होने लगा और उनसे कहा, "मेरा मन यहांलों अति उदास है, कि मैं मरनेपर हूं। तुम यहां ठहरके मेरे संग जागते रहो"।

३, ग. दुःखकी बढ़ती। और थोड़ा आगे बढ़के वह मुंहके बल गिरा और प्रार्थना किई कि "हे मेरे पिता, जो हो सके, तो यह कटोरा मेरे पाससे टल जाय। तौभी जैसा मैं चाहता हूं, वैसा न होय, पर जैसा तू चाहता है"। तब उसने शिष्योंके पास आ उन्हें सोते पाया और पितरसे कहा, "हे शिमोन सो तू सोता है, क्या तुम मेरे संग एक घड़ी न जाग सके? जागते रहो और प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षामें न पड़ो। मन तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है"।

फिर उसने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई। कि "हे मेरे पिता, जो बिना पीनेसे यह कटोरा मेरे पाससे नहीं टल सकता है, तो तेरी इच्छा पूरी होवे"। तब उसने आके उन्हें फिर सोते पाया।

उनको छोड़के उसने फिर जाके तीसरी बेर वही बात कहके प्रार्थना किई। तब एक दूत उसे सामर्थ्य देनेको स्वर्गसे उसको दिखाई दिया। और उसने बड़े संकटमें होके अधिक दृढ़तासे प्रार्थना किई। और उसका पसीना ऐसा हुआ, जैसे लोहूके थक्के, जो भूमिपर गिरे।

४, ख. यीशुका पकड़वाये जानेको तैयार होना। वह प्रार्थना से उठके अपने शिष्योंके पास आया और उनसे कहा, "सो तुम सोते रहते और बिश्राम करते हो। देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है। उठो चलें, देखो, जो मुझे पकड़वाता है, सो निकट आया है"।

क. १ योहन १, ७. यीशु खीष्टका लोहू हमें सब पापसे शुद्ध करता है। लाखों स्तुति होवे प्रभु तुझे इत्यादि-साखी. ३२, २।

ख. १ करिन्थ १, ३० खीष्ट यीशु ईश्वरकी ओरसे हमको ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ है।
आह पाप और दोष जो मेरा इत्यादि-साखी. ४३, ३। २. निर्णय।

ग. इब्रानी २, १७+१८ उसको अवश्य था, कि सब बातोंमें भाइयोंके समान हो जावे, जिस्तें वह दयालु और बिश्वास योग्य महायाजक बने, कि लोगोंके पापोंके लिये प्रायश्चित करे। क्योंकि जिस २ बातमें

उसने परीक्षामें पड़के दुःख पाया है, उस २ बातमें वह उनकी, जिन को परीक्षा किई जाती है, सहायता कर सकता है ।
जो बोझ पखानसे बड़ा इत्यादि-साखी. २२, ५ । ३, बिन्ती ॥ ०

४१, यीशुका पकड़वाया जाना ।

(मत्ती २६, मार्क १४, लूक २२, योहन १८)

१, ख. यहूदाका चूमा । यीशु बोलताही था कि यहूदा आ पहुंचा । और बहुत लोग सभाके, खड्ग और लाठियां लिये हुए उसके संग । यीशुने निकलके उनसे कहा, "तुम किसको ढूंढ़ते हो"। उन्होंने उत्तर दिया, "यीशु नासरीको"। यीशुने कहा, "मैं हूं" । तब वे पीछे हटके भूमिपर गिर पड़े । पकड़वानेहारेने उन्हें यह पता दिया था कि "जिसको मैं चूमूं, वही है, उस को पकड़के यतसे ले जाओ" । और उसने यीशु पास जाके कहा, "हे गुरु, हे गुरु" और उसको चूमा । यीशुने कहा, "हे यहूदा, क्या तू मनुष्यके पुत्रको चमा लेके पकड़वाता है" ।

२, ख. यीशुका निज इच्छासे दुःख और मृत्युमें जाना । तब उन्होंने आके यीशुपर हाथ डालके उसे पकड़ा । शिष्योंने यह देखके कहा, "हे प्रभु, क्या हम खड्गसे मारें" ? और पितरने खड्ग खींचके महायाजकके दास को मारा और उसका दहिना कान उड़ा दिया । पर यीशुने पितरसे कहा, "अपना खड्ग काठीमें रख, क्योंकि जो लोग खड्ग खींचते हैं, सो सब खड्गसे नाश किये जायेंगे । जो कटोरा पिताने मुझको दिया है, क्या मैं उसे न पीऊं । क्या तू समझता है कि मैं अभी अपने पितासे नहीं बिन्ती कर सकता हूं, और वह मेरे पास स्वर्गदूतोंकी १२ सेनाओंसे अधिक पहुंचा न देगा ? परन्तु तब धर्म्मपुस्तकमें जो लिखा है, कि ऐसा होना अवश्य है, सो कैसा पूरा होय" और उसने दासका कान छूके उसे चंगा किया ।

३, ख. यीशुका वैरियोंको डांटना । शिष्योंका भाग जाना । परंतु प्रधान याजकों और प्राचीनोंसे उसने कहा, "क्या तुम जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो । जब मैं मन्दिरमें उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे

संग था, तब तुम्होंने मुझपर हाथ न बढ़ाये। परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अन्धकारका पराक्रम है"।—तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे।

क. मत्ती ५, ४४-४५. अपने बैरियोंको प्यार करो। जो तुम्हें स्राप देवे, उनको आशीष देओ। जो तुमसे बैर करें, उनसे भलाई करो। जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें, उनके लिये प्रार्थना करो, जिस्तें तुम अपने स्वर्गवासी पिताके सन्तान होओ। ६ आज्ञा।

ख. रोमी १२, २१ बुराईसे मत हारजा, परन्तु भलाईसे बुराईको जीतले। खृष्टके तुल्य कौन और क्या इत्यादि-साक्षी. ७२, १+४। २ निर्णय।

ग. योहन १०, ११+१२ मैं अच्छा गड़ेरिया हूं। अच्छा गड़ेरिया भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर, जो गड़ेरिया नहीं है, और भेड़ें उसकी निजकी नहीं हैं हुण्डारको आते देखके भेड़ोंको छोड़ देता और भाग जाता है।

योहन १०, १८ कोई मेरा प्राण मुझसे नहीं लेता है, परंतु मैं आपसे उसे देता हूं।

ईश्वरका बेटा है मसीह इत्यादि-साक्षी. ७७, २–५। ५ विनती।

४२, यीशु महा सभाके आगे।

(मत्ती २६, मार्क १४, लूक २२, योहन १८)

१, ख. हन्नसके आगे यीशुका दुजहार। तब वे यीशुको बांधके पहिले हन्नसके पास ले गये, जो महायाजक कियाफाका ससुर था और पहिले आपही महायाजक रहा। हन्नसने यीशुसे उसके शिष्यों और उसके उपदेशके विषयमें पूछा। यीशुने उत्तर दिया कि "मैं ने जगतसे खोलके बातें किईं। मैं ने सभाके घर और मन्दिरमें, जहां यहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं, बराबर उपदेश किया और गुप्तमें कुछ नहीं कहा। तू मुझसे क्यों पूछता है, जिन्होंने सुना, उन्होंसे पूछ ले कि मैंने उनसे क्या कहा"। तब प्यादोंमेंसे एक उसको थपेड़ा मारके बोला, "क्या तू महायाजकको इस रीतिसे उत्तर देता है"? यीशुने उत्तर दिया, "यदि मैंने बुरा कहा, तो उस बुराईकी साक्षी दे, परन्तु यदि भला कहा, तो क्यों मुझे मारता है"।

२, ख. कियाफाके आगे यीशुका दुजहार। हन्नसने उसको बांधे-हुए कियाफा महायाजकके पास भेजा, जहां सारी सभा एकट्ठी हुई। उन्होंने यीशुको घात करवानेके लिये उसपर झूठी साक्षी ढूंढ़ी, परन्तु न पाई। बहुतोंने तो उसपर साक्षी दिई, परन्तु उनकी साक्षी एक समान न थी। तब महा-

याजकने कहा, "क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है, ये लोग तेरे बिरुद्धमें क्या साक्षी देते हैं"। परन्तु यीशु चुप रहा इसपर महायाजकने कहा, "मैं तुझे जीवते ईश्वरकी किरिया देता हूं, हमोंसे कह, तू ईश्वरका पुत्र खीष्ट है कि नहीं"। यीशुने कहा, "मैं हूं। और तुम मनुष्यके पुत्रको सर्वशक्तिमानकी दहिनी ओर बैठे और आकाशके मेघोंपर आते देखोगे"। *

२, ख. यीशुका महा सभासे ईश्वरीय निन्दाके कारण दण्डके योग्य ठहराया जाना। तब महायाजकने अपने वस्त्र फाड़के कहा, "यह तो ईश्वरकी निन्दा कर चुका है। अब हमें साक्षियोंका और क्या प्रयोजन। देखो, तुमने अभी उसके मुहसे ईश्वरकी निन्दा सुनी है। तुम क्या विचार करते हो"। उन्होंने उत्तर दिया, "वह बधके योग्य है"। तब उन्होंने उसके मुहपर थूका, उसे घूसे मारा, उसकी ठट्ठा किई, बहुतसी निन्दाकी बातें उसके बिरुद्धमें कहीं और उसकी आंखें ढांपके उसके मुहपर थपेड़े मारके उससे कहा, "भविष्यद्वाणी बोल, किसने तुझे मारा"।

ख. १ पितर २, २१-२३ खीष्ट हमारे लिये नमूना छोड़ गया, कि तुम उसकी लीकपर हो लेओ। उसने पाप नहीं किया, और न उसके मुहमें छल पाया गया। वह निन्दित होके उसका बदले निन्दा न करता था, और दुःख उठाके धमकी न देता था, परन्तु जो धर्म्मसे विचार करनेहारा है, उसीको हाथ अपनेको सौंपता था। मैं मुह जो था तेजमुखो इत्यादि-साक्षी. ३४, २। २. निर्णय। ९+६ आज्ञा।

---

४३. पितरका मुकर जाना। यहूदाका अन्त।

(मत्ती २६+२७ मार्क १४. लूक २२. योहन १८.)

१, ख. पहिला मुकरना। पितर यीशुके पीछे हो लेके महायाजकके अंगनेके भीतर गया था। द्वार पालिन उसपर दृष्टि करके बोली, "तू भी यीशु नासरीके संग था"। उसने मुकरके कहा, "मैं उसे नहीं जानता हूं"।

२, ख. दूसरा मुकरना। उसके पीछे दूसरी दासीने उसे देखके, जो लोग वहां थे, उनसे कहा, "यह भी यीशु नासरीके संग था"। उसने किरिया खाके फिर मुकरा कि "मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं"।



३, ख. तीसरा मुकरना। थोड़ी बेर पीछे दासोंमेंसे एक, जो उस मनुष्यका कुटुम्ब था, जिसका कान पितरने उड़ा दिया, बोला, "यह भी सचमुच उसके संग था। क्या मैंने तुझे बारीमें उसके संग न देखा"? जो लोग निकट खड़े थे उन्होंने भी कहा, "तू सचमुच उनमेंसे एक है, क्योंकि तू* गालीली है, तेरी बोली तुझे प्रगट करती है" तब पितर धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि "मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं"। और तुरन्त मुर्गा बोला।

४, ख. पितरका पश्चात्ताप। तब प्रभुने मुंह फेरके पितर पर दृष्टि किई। और पितरने प्रभुका वचन स्मरण किया, जो उसने उससे कहा था कि "मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा"। और वह बाहर निकलके बिलक २ रोया।

ख. मत्ती १०, ३२+३३. जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मान लेऊंगा। परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे, उससे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिताके आगे मुकरूंगा।
लड़ विश्वासका लड़न लड़ इत्यादि साखी. ९०, १-३। +३ आज्ञा।

ग. १ कोरिन्थ १०, १२+१३. जो समझता है, कि मैं खड़ा हूं, सो सचेत रहे, कि गिर न पड़े। तुम पर कोई परीक्षा नहीं पड़ी है केवल ऐसी, जैसी मनुष्यको हुआ करती है। और ईश्वर विश्वास योग्य है, जो तुम्हें तुम्हारे सामर्थ्यसे बाहर परीक्षित होने न देगा, परन्तु परीक्षाके साथ निकास भी करेगा, कि तुम सह सको।
जैसा योद्धा रात और दिन इत्यादि-साखी ९०, ४+५। ६ विन्ती।

५, ख. यहूदाका अन्त। भोरको प्रधान याजकों और प्राचीनोंने यीशुको बांधके अध्यक्ष भवनपर ले जाके पन्तियुस पिलातुस अध्यक्षको सौंप दिया। जब यहूदाने देखा कि यीशु दण्डके योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन ३० रुपैयोंको प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास फिर लाया और

कहा, "मैंने निर्दोषी लोहू पकड़वानेमें पाप किया है" । वे बोले, "हमें क्या, तूही जान" । तब वह उन रुपैयोंको मन्दिरमें फेंकके चला जाके अपनेको फांसी दिई ।

६, ख. लोहूका खेत । प्रधान याजकोंने रुपैये लेके कहा, "इन्हें मन्दिरके भण्डारमें डालना, उचित नहीं है, क्योंकि यह लोहूका दाम है" यों उन्होंने आपसमें विचार कर उन रुपैयोंसे परदेशियोंको गाड़नेके लिये कुम्हारका खेत मोल लिया । इससे वह खेत आज तक लोहूका खेत कहावता है ।

ख. १ तिमो: ६, ९+१०. जो लोग धनी होने चाहते हैं सो परीक्षा और फन्देमें और बहुतेरे बुद्धि हीन और हानिकारी अभिलाषोंमें फंसते हैं, जो मनुष्योंको विनाश और विध्वंसमें डुबा देते हैं, क्योंकि धनका लोभ सब बुराइयोंका मूल है ।
देख तो जगत है बेचैन इत्यादि-साखी. ७१, २+३ । ६ आज्ञा ।

ग. १ करिन्थ ७, १०. जो शोक ईश्वरकी इच्छाके अनुसार है, उससे वह पश्चात्ताप उत्पन्न होता है, जिस करके त्राण है, और जिससे किसीको नहीं पछताना है । परन्तु संसारके शोकसे मृत्यु उत्पन्न होती है । परमेश्वर लेखा लेता इत्यादि-साखी ५२, २ । ६ विन्ती ॥

---

४४. यीशु पिलात और हेरोद्‌के आगे ।

(मत्ती २७ मार्क १५, लूक २३ योहन १८+१९)

१, ख. पिलातके आगे यीशुका इजहार । यीशु अध्यक्षके आगे खड़ा हुआ । और यहूदियोंने उसपर बहुतसे दोष लगाके कहा, "हमने यही पाया है कि यह मनुष्य लोगोंको बहकाता है, और अपनेको खीष्ट राजा कहके कैसरको कर देना बर्जता है" । पिलातने यीशुसे पूछा, "क्या तू यहूदियोंका राजा है" ? यीशुने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगतका नहीं है । जो मेरा राज्य इस जगतका होता, तो मेरे सेवक लड़ते, जिस्तें मैं यहूदियोंके हाथ में न सौंपा जाता" ? पिलातने कहा, "फिर भी तू राजा है" ? यीशुने उत्तर दिया, "आप ठीक कहते हैं, क्योंकि मैं राजा हूं । मैंने इस लिये जन्म लिया है और जगतमें आया हूं कि सत्यपर साक्षी देऊं । जो कोई सत्यकी ओर है, सो मेरा शब्द सुनता है" । पिलातने उससे कहा, "सत्य क्या है" । पर यहूदियोंसे उसने कहा, "मैं उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं" ।

२, ख. **यीशुका हेरोदसे ठट्ठा किया जाना।** परन्तु प्रधान याजकों और प्राचीनोंने अधिक दृढ़ताईसे कहा, "वह गालीलसे लेके यहांलों सारे यहूदियामें उपदेश करके लोगोंको उसकाता है"। पिलात गालीलका नाम सुनके जान गया, कि यीशु हेरोदके राज्यमेंका है, और उसे हेरोदके पास भेजा, जो उन दिनोंमें यिरूशलीममें था। हेरोद यीशुको देखके बहुत आनन्दित हुआ; क्योंकि वह बहुत दिनसे उसको देखने चाहता था, इस लिये कि उसके विषय में बहुत बातें सुनी थीं और उसका कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखनेकी उसको आशा हुई। उसने यीशुसे बहुत बातें पूछीं। परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया। तब हेरोदने अपनी सेनाके संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा किया और भड़कीला वस्त्र पहिराके उसे पिलातके पास फिरा भेजा। उसी दिन पिलात और हेरोद, जिन्होंके बीचमें आगेसे शत्रुता थी, आपसमें मित्र हो गये।

ख. मत्ती १०, २८, उनसे मत डरो, जो शरीरको मार डालते हैं पर आत्माको मार डालने नहीं सकते हैं। परन्तु उसीसे डरो, जो आत्मा और शरीर, दोनोंको नरकमें नाश कर सकता है।
प्रभु यीशु अपने राज्यका इत्यादि-साक्षी, १०२, १-४। २ निर्णय।

ग. योहन १४, ६. यीशुने कहा, "मैंही मार्ग और सत्य और जीवन हूं। बिना मेरे द्वारासे कोई पिता पास नहीं पहुंचता है"।
वह मार्ग और सत्य और जीवन है इत्यादि-साक्षी. ७७, ५।

३, क. **यीशुका लोगोंसे त्यागा जाना।** उस पर्व्वमें अध्यक्षकी यह रीति थी कि एक बंधुवेको, जिसे लोग चाहते थे, उन्होंके लिये छोड़ देता था, उस समयमें उन्होंका एक प्रसिद्ध बंधुवा था, जिसका नाम बरब्बा था। जो बलवे और नरहिंसाके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था। और पिलातने लोगोंसे कहा, "तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं, बरब्बाको अथवा यीशुको"। तब सभोंने पुकारा कि "इसको नहीं, परन्तु बरब्बाको"। पिलातने कहा, "तो मैं यीशुसे क्या करूं"। उन्होंने पुकारा कि "उसे क्रूशपर चढ़ाइये, क्रूशपर चढ़ाइये"। पिलातने कहा, "पर मैंने उसमें बधके योग्य कोई दोष नहीं पाया है, इस लिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा"। परन्तु उन्होंने बहुत अधिक पुकारा कि "उसे क्रूशपर चढ़ाइये"।

४, क. **यीशुका योद्धाओंसे कोड़े मारा जाना।** तब योद्धाओंने यीशुको लेके कोड़े मारे, उसका वस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया, कांटों

का मुकुट गूंथके उसके सिरपर रखा, उसके दहिने हाथमें नरकट दिया, उसके आगें घुटने टेकके और यह कहके उससे ठट्टा किया कि "हे यहूदियोंके राजा, प्रणाम" उसपर थूका, उस नरकटको ले उसके सिरपर मारा और उसे थपेड़े मारे। तब पिलातने उसे बाहर लाके यहूदियोंसे कहा, "देखो यही मनुष्य"।



५, क. यीशुका लोगोंसे फिर त्यागा जाना और पिलातसे दण्डके योग्य ठहराया जाना। परन्तु उन्होंने पुकारा, "उसे क्रूशपर चढ़ाइये, क्रूशपर चढ़ाइये"। पिलातने कहा, "तुम उसे लेके क्रूशपर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता हूं। उन्होंने उत्तर दिया, "जो आप इसको छोड़ देवें, तो आप कैसरके मित्र नहीं है। जो कोई अपनेको राजा कहता है, सो कैसरके विरुद्ध बोलता है"। यह बात सुनके पिलातने यहूदियोंसे कहा, "देखो तुम्हारा राजा"। परन्तु उन्होंने पुकारा, "ले जाइये, ले जाइये, उसे क्रूशपर चढ़ाइये"। जब पिलातने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता है, तब उसने जल लेके लोगोंके साम्ने हाथ धोके कहा, "मैं इस धर्म्मी मनुष्यके लोहूसे निर्दोष हूं, तुमही जानो"। सब लोगोंने उत्तर दिया, "इसका लोहू हमपर और हमारे सन्तानोंपर होवें"। तब पिलातने लोगोंको सन्तुष्ट करनेकी इच्छाकर बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और यीशुको क्रूशपर चढ़ाये जानेको सौंप दिया।

ख यशः ५३, ७. वह अपना मुंह न खोलेगा, जैसा मेम्ना घातके लिये

पहुंचाया जाता है, और जैसे भेड़ अपने रोम कटवैयेके आगे चुपचाप रहती है, वैसाही वह अपना मुंह न खोलेगा ।
• हे साध जो घावसे भरा इत्यादि-साखी. ३४, १-३ । २ निर्णय ।

ग.• इब्रानी ७, २६. ऐसा महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र और सूधा और निर्मल औ पापियोंसे अलग और स्वर्गसे भी ऊंचा किया हुआ है ।
हे प्रीतम यीशु तूने क्याही किया इत्यादि-साखी. २४, १-३ ॥

---

४५. यीशुका क्रूशपर चढ़ाया जाना ।

(मत्ती २७, मार्क १५, लूक २३, योहन १९)

१, ग. गलगताको जाना । योद्धा लोग यीशुको बाहर ले गये । और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थानको, जो खोपड़ीका स्थान अथवा गलगथा कहावता है, निकल गया । रस्तापर उन्होंने शीमोन नाम, कुरीनी देशके, एक मनुष्यको पकड़के उसपर क्रूश धर दिया कि उसे यीशुके पीछे ले चले । लोगोंकी बड़ी भीड़ यीशुके पीछे हो लिई, जिन्होंमें बहुतसी स्त्रियां भी थीं, जो उसके लिये छाती पीटती और बिलाप करती थीं । यीशुने उन्होंकी ओर फिरके कहा, "हे यिरूशलीमकी पुत्रियो, मेरे लिये मत रोओ, परन्तु अपने लिये और अपने बालकोंके लिये रोओ । क्योंकि वे दिन आते हैं, जिन्होंमें लोग पर्वतोंसे कहने लगेंगे कि हमोंपर गिरो, और टीलोंसे, कि हमें ढांपो । क्योंकि जो वे हरे पेड़से यह करते हैं, तो सूखेसे क्या किया जायगा" ।

ग. यश: ४३, २४. तूने अपने पापोंसे मुझपर भार दिया, अपने कुकर्म्मोंसे मुझे थकाया ।
स्वर्गधामसे तुझे लाया इत्यादि-साखी. १२, ५ । २ निर्णय ।

२, क. **यीशुका क्रूशपर चढ़ाया जाना । और अपने बैरियोंके लिये प्रार्थना करना ।** जब वे गलगता स्थानपर पहुंचे, तब उन्होंने यीशुको क्रूशपर चढ़ाया । और एक पहर दिन चढ़ा था । उन्होंने उसके संग दो डाकूओंको भी, एकको उसकी दहिनी ओर, और दूसरेको बांईं ओर क्रूशोंपर चढ़ाया । तब धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा हुआ कि "वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया" । परन्तु यीशुने कहा, "हे पिता उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं

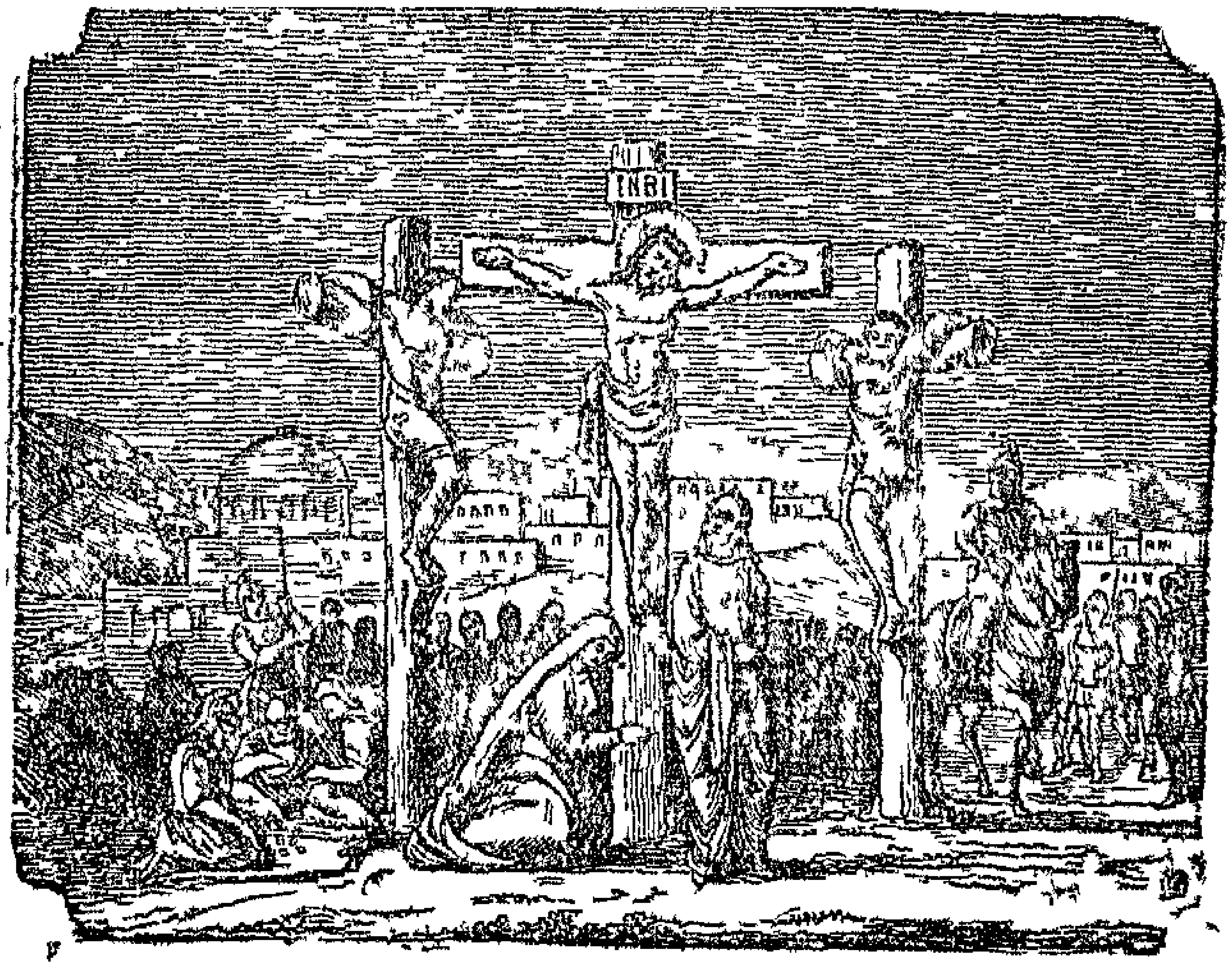
जानते, क्या करते हैं"। योद्धाओंने यीशुके कपड़े आपसमें बांट लिये और उसके अंगेपर चिट्ठियां डालीं।

३, क. क्रूशका सिरनामा। पिलातने यह दोष पत्र लिखके क्रूशपर लगाया कि "यीशु नासरी, यहूदियोंका राजा (J. N. R. J.)" परन्तु प्रधान याजकोंने पिलातसे कहा, "यहूदियोंका राजा मत लिखिये, परन्तु यह कि उसने कहा, मैं यहूदियोंका राजा हूं"। पिलातने उत्तर दिया, "जो मैंने लिखा है, सो लिखा है।

४, क. वैरियोंका क्रूशपर चढ़ाये हुए यीशुकी निन्दा करना। जो लोग उधरसे आते जाते थे, उन्होंने यह कहके उसकी निन्दा किई कि "हे मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे, अपनेको बचा। जो तू ईश्वरका पुत्र है, तो क्रूशपरसे उतर आ"। प्रधान याजकों और अध्यापकोंने भी ठट्ठा कर कहा, "उसने दूसरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है। जो वह इसरायलका राजा है, तो क्रूशपरसे अब उतर आवे, और हम उसका विश्वास करेंगे। योद्धाओंने भी उससे ठट्ठा किया।

५, क. यीशुका अपनी माताको शांति देना। यीशुकी माता, उसकी माताकी बहिन मरियम, जो क्लियोफाकी स्त्री थी, और मरियम मग-दलीनी उसके क्रूशके निकट खड़ी थीं। सो यीशुने अपनी माताको और उस शिष्यको, जिसे वह प्यार करता था, उसके निकट खड़े हुए देखके अपनी मातासे कहा, "हे नारी, देखिये, आपका पुत्र"। और उस शिष्यसे उसने कहा, "देख, तेरी माता"। उस समयसे उस शिष्यने उसको अपने घरमें ले लिया।

६, क. यीशुका पश्चात्तापी डाकूको शान्ति देना। जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे, उनमेंसे एकने उसकी निन्दाकर कहा, "जो तू खीष्ट है, तो अपनेको और हमोंको बचा"। इसपर दूसरेने उसे डांटके कहा, "क्या तू ईश्वरसे कुछ डरता भी नहीं। तुझपर तो वैसाही दण्ड दिया जाता है, और हमोंपर न्यायकी रीतिपर दिया जाता है, क्योंकि हम अपने कर्म्मोंके योग्य फल भोगते हैं, परन्तु इसने कोई अनुचित काम नहीं किया है"। तब उसने यीशुसे कहा, "हे प्रभु, जब आप अपने राज्यमें आवें, तब मेरी सुध लीजिये"। यीशुने उससे कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूं कि आजही तू मेरे संग स्वर्गलोकमें होगा"।



७, क. संकटकी बातें। दो पहरसे तीसरे पहरलों सारे देशमें अंधकार हो गया, सूर्य्य अंधियारा हो गया। तीसरे पहरके निकट यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके कहा, "एली, एली लामाशबक्तनी, अर्थात हे मेरे ईश्वर, हे मेरे ईश्वर, तूने क्यों मुझे त्यागा है"। इसके पीछे यीशुने यह जानके, कि अब सब कुछ हो चुका, जिस्तें धर्म्मपुस्तकका वचन पूरा हो जाय, इस लिये कहा, "मैं प्यासा हूं"। तब एकने इस्पंज लेके सिरकेमें भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया।

८, क. जयकी बातें। जब यीशुने सिरका लिया था, तब कहा, "पूरा हुआ है"। और उसने बड़े शब्दसे पुकारके कहा, "हे पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथमें सौंपता हूं"। और सिर झुकाके प्राण त्यागा।

९, क. यीशुकी मृत्युके साथ प्रगट हुए चिन्ह और शतपतिका स्वीकार। और देखो, मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग हो गया, धरती डोली, पर्वत तड़क गये, कबरें खुलीं, और सोए हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें उठीं। शतपति और वे लोग, जो उसके संग यीशुका पहरा देते थे, निपट डर जाके बोले, "सचमुच यह ईश्वरका पुत्र है"। और सब लोग, जो कुछ हुआ था, सो देखके अपनी २ छाती पीटते हुए फिर गये।

क. योहन १, २९. ईश्वरका मेम्ना, जो जगतके पापको उठा लेता है ।
हे ईश्वरके मेम्ना निर्दोषी इत्यादि-साक्षी. २६, १-३ । ६. ३+५ आज्ञा ।

ख. १ पितर २, २३+२४, खीष्ट निन्दित होके उसके बदले निन्दा न करता था, और दुःख उठाके धमकी न देता था, परन्तु जो धर्म्मसे विचार करनेहारा है, उसीके हाथ अपनेको सौंपता था । उसने आप हमारे पापोंको अपने देहमें काठपर उठा लिया, जिस्तें हम लोग पापोंके लिये मर जाके धर्म्मके लिये जीवें । और उसीके मार खानेसे तुम चंगे किये गये ।
यीशुके घावोंसे रक्त पूर्ण इत्यादि-साक्षी. २८, १-३ । २+३ निर्णय ।

ग. २ कोरिन्थ ५, १९+२१. ईश्वर जगतके लोगोंके अपराध उनपर न लगाके खीष्टमें जगतको अपने साथ मिला लेता था, और मिलापका वचन हमोंको सौंप दिया । क्योंकि जो पापसे अनजान था, उसको उसने हमारे लिये पाप बनाया कि उसमें हम ईश्वरके धर्म्म बनें ।
अब तुझे हे पियारे इत्यादि-साक्षी. ३४, ४+५ ।

---

४६. यीशुका गाड़ा जाना ।

(मत्ती २७. मार्क १५ लूक २३. योहन १९.)

१, क. यीशुके पंजरका छेदा जाना । यह दिन तैयारीका दिन था (जो विश्रामवारके एक दिन आगे है) इस कारण, जिस्तें लोथें विश्रामके दिन क्रूशपर न रहें, यहूदियोंने पिलातसे बिन्ती किई कि उनको टांगें तोड़ी जायें, और वे उतारे जायें । सो योद्धाओंने आके उन दोनोंकी टांगें तोड़ीं परन्तु यीशु पास आके उन्होंने देखा कि वह मर चुका है, इस लिये उसकी टांगें न तोड़ीं । परन्तु योद्धाओंमेंसे एकने बर्छेसे उसका पंजर बेधा । और तुरन्त लोहू और पानी निकला ।

२, ख. यीशुका क्रूशसे उतारा और कबरमें रखा जाना । जब सांझ हुई, तब अरिमथिया नगरका यूसफ नाम एक धनवान और आदरवन्त मंत्री, जो यीशुका शिष्य भी था, परन्तु यहूदियोंके डरसे इसका छिपाये रखता था, पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांगी । और निकोदीम भी, जो पहिले रातको यीशुके पास आया था, गन्धरस और एलवा लेके आया । उन्होंने यीशुकी लोथको क्रूशसे उतारके सुगन्धके संग चहरमें लपेटा और एक नई कबरमें

रखा, जो यूसफने पत्थरमें खुदवाई थी, और कवरके द्वारपर बड़ा पत्थर लुढ़काके चले गये । मरियम मगदलीनी भी और दूसरी मरियम वहां साम्हनेमें बैठके कवरको और उसकी लोथ, कि कैसी रखी गई, उसको देख लिया । तब उन्होंने लौटके सुगन्ध द्रव्य और सुगन्ध तेल तैयार किया, पर आज्ञाके अनुसार विश्रामके दिनमें विश्राम किया ।

३, ख. वैरियोंका चिन्ता करना और कवरकी रखवाली । दूसरे दिनको प्रधान याजक और फरीशी लोग पिलातके पास आके बोले, "हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारेने जीते जी कहा कि तीन दिनके पीछे मैं जी उठूंगा । सो आज्ञा कीजिये कि तीसरे दिनलों कवरकी रखवाली किई जाय । न हो, कि उसके शिष्य आके उसे चुरा ले जावें और लोगोंसे कहें कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है । तब पीछली भूल पहिलीसे बुरी होगी" । पिलातने कहा, "तुम्हारे पास पहरुए हैं, जाओ, अपने जानते भर रखवाली करो" । सो उन्होंने जाके पत्थरपर छाप देके पहरुए बैठाके कवरकी रखवाली किई ।

ख. प्रका॰ १४, १३. जो प्रभुमें मरते हैं सो मृतक धन्य हैं । आत्मा कहता है, हां कि वे अपने परिश्रमसे विश्राम करेंगे । परन्तु उनके कार्य्य उनके साथ हो लेते हैं ।
मैं प्रभु तेरा रोना इत्यादि-साक्षी. २३, १-९ । २ + ३ निर्णय ।

ग. १ कोरिन्थ १५, ४२-४४. वह नाशमान बोया जाता है, अविनाशी उठाया जाता है । वह अनादर सहित बोया जाता है, तेज सहित उठाया जाता है । दुर्ब्बलता सहित बोया जाता है, सामर्थ सहित उठाया जाता है । वह प्राणिक देह बोया जाता है, आत्मिक देह उठाया जाता है ।
खीष्ट पावन करे मेरा प्राण इत्यादि-साक्षी. ६०, १-५ । ७ विन्ती — और अन्तमें जब मरनेकी घड़ी पहुंचे इत्यादि ।

---

४७. यीशुका जी उठना ।

(मत्ती २८. मार्क १६. लूक २४. योहन २०)

१, क. स्त्रियोंका कवरपर आना । जब विश्रामवार बीत गया, तब मरियम मगदलीनी, याकूबकी माता मरियम और सालोमी बड़े भोर कवर पर आईं, कि यीशुको मलें । और वे आपसमें बोलीं, "कौन हमारे लिये कवर

को द्वार परसे पत्थर लुढ़कावेगा"। क्योंकि वह बहुत बड़ा था। परन्तु उन्होंने कबर पर आके दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है। क्योंकि बड़ा भुईंडोल हुआ। और परमेश्वरका एक दूत स्वर्गसे उतरा और कबरको द्वार परसे पत्थर लुढ़काया। उसका रूप बिजलीसा और उसका वस्त्र पालेकी नाईं उजला था। उसके डरके मारे पहरुए कांप गये और मृतकोंके समान हुए।

२, क. दूतका स्त्रियोंको यीशुका जी उठना सुनाना। जब स्त्रियोंने पत्थर लुढ़काया हुआ पाया, तब मरियम मगदलीनी पितर और उस शिष्यके पास, जिसे यीशु प्यार करता था, दौड़ी। परन्तु दूसरी दोनों स्त्रियोंने कबरके भीतर जाके उजले, लम्बे वस्त्र पहिने हुए एक जवानको बैठा देखा। और वे चकित हुईं। परन्तु उसने उनसे कहा, "चकित मत होओ, तुम यीशुको, जो क्रूशपर घात किया गया, ढूंढ़ती हो। तुम जीवतेको मृतकोंके बीचमें क्यों ढूंढ़ती हो? वह यहां नहीं है। जैसे उसने कहा, वैसे जी उठा है। अब जाके उसके शिष्योंसे और पितरसे कहो कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है। और देखो, वह तुम्हारे आगे गलीलको जाता है, वहां उसे देखोगे"। और स्त्रियां शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्दसे, उसके शिष्योंको सन्देश देनेको, कबरसे दौड़ीं।

क. २ तिमोथी १, १०. खीष्टने मृत्युका नाश किया, परन्तु जीवन और अमरताको प्रकाशित किया।
धन धन आशीषमय इत्यादि-साक्षी. ३८, १-३।

ख. योहन ११, २५. यीशुने कहा, मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं। जो मुझपर विश्वास करे, सो यदि मर जाय, तौभी जीयेगा।
ईश्वरका बेटा मृत्युंजय इत्यादि-साक्षी. ३६, १+२। २ निर्णय।

ग. १ कोरिन्थ १५, ५४+५५. जयमें मृत्यु निगली गई। हे मृत्यु, तेरा डंक कहां, हे परलोक, तेरी जय कहां।
बिहानको खीष्ट जी उठा है इत्यादि-साक्षी. ३७, १+२। ४ भाग ४

३, ग. पितर और योहन कबरके पास। मरियम मगदलीनी पितर और योहनके पास आके उनसे बोली, "वे प्रभुको कबरमेंसे ले गये हैं, और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रखा है"। तब दोनों कबरपर दौड़े। और पितरने कबरके भीतर जाके चद्दर पड़ी हुई और वह अंगोछा, जो यीशुके सिरपर था, लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा शिष्य भी कबरके भीतर गया और देखके विश्वास किया।

ग. उदास मैं होऊं किस प्रकार इत्यादि-साखी. ३०, ४। २. निर्णय।

४, क. जी उठे हुए यीशुका मरियम मगदलीनीको दिखाई देना। मरियम मगदलीनी कबरपर फिर आके बाहर खड़ी हुई, और रोती २ कबरपर झुकी। तब उसने दो दूतोंको उजले वस्त्र पहिने हुए बैठे देखा, जिन्होंने कहा, "हे नारी, तू क्यों रोती है"। वह बोली, "वे मेरे प्रभुको ले गये हैं, और मैं नहीं जानती, कि उसे कहां रखा है"। यह कहके उसने पीछे फिरके यीशुको खड़े देखा और नहीं जानती थी, कि यीशु है। यीशुने उससे कहा, "हे नारी, तू क्यों रोती है, किसको ढूंढ़ती है"। उसने यह समझके कि माली है, कहा, "हे प्रभु, जो आपने उसको उठा लिया है, तो मुझसे कहिये, कि उसे कहां रखा है"। यीशुने कहा, "हे मरियम"। वह बोली, "हे रब्बूनी, अर्थात हे गुरु"। यीशुने कहा, "मुझे मत छू, क्योंकि मैं अबलों अपने पिताके पास नहीं चढ़ गया हूं। परन्तु मेरे भाइयोंके पास जाके उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता हूं"। — मरियमने जाके शिष्योंको ये बातें कहीं।

क. २ तिमोथी २, ८. स्मरण कर, कि यीशु खीष्ट मृतकोंमेंसे जी उठा है। जय, हां जय सनातन जय इत्यादि-साखी. ३५, १ + २।

ख. १ करिन्थ १५, १७. जो खीष्ट नहीं जी उठा है, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है, तुम अबलों अपने पापोंमें पड़े हो। धूल मैं हूं और मट्टीमें इत्यादि साखी. ३५, ३ + ४। २ निर्णय।

ग. १ करिन्थ १५, ५७. ईश्वरका धन्यवाद होय, जो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे हमें जयवन्त करता है। अब मैं अछूतूं और नाशमान इत्यादि-साखी. ३५, ५-७। ४ भाग ४।

५, ग. जी उठे हुए यीशुका दूसरी स्त्रियोंको दिखाई देना। जब वे दूसरी स्त्रियां (याकूबकी माता मरियम और सलोमी) शिष्योंको दूतकी बात सुनानेको जाती थीं, देखो, यीशु उनसे आ मिला और कहा, "कल्याण हो"। और उन्होंने निकट आ उसके पांव पकड़के उसको प्रणाम किया। तब यीशुने उनसे कहा, "मत डरो, जाओ मेरे भाइयोंसे कह दो कि वे गलीलको जावें, और वहां वे मुझे देखेंगे"।

६, ग. कबरके पहरुए। ज्यों स्त्रियां जाती थीं, त्योंही पहरुओंमेंसे कोई २ नगरमें आये और सब कुछ, जो हुआ था, प्रधान याजकोंसे कह दिया।

तब प्रधान याजकोंने प्राचीनोंके संग आपसमें विचार कर योद्धाओंको बहुत रुपैये देके कहा, "तुम यह कहो, कि रातको, जब हम सोये थे, तब उसके शिष्य आके उसे चुरा ले गये। जो यह बात अध्यक्षके सुननेमें आवे, तो हम उसको समझाके तुमको बचा लेंगे"। सो पहरुओंने रुपैये लेके, जैसे सिखाये गये थे, वैस ही किया

ग. १ पितर ३, १०+११. जो जीवनकी प्रीति रखने और अच्छे दिन देखने चाहे, सो अपनी जीभको बुराईसे और अपने होठोंको छलकी बातें करनेसे रोके। वह बुराईसे फिर जावे और भलाई करे। वह मिलापको चाहे और उसकी चेष्टा करे।
तू अपनी दया यीशु खीष्ट इत्यादि-साक्षी. ९३, १। ३+९ आज्ञा॥

---

४८. यीशुका इम्माऊको जाते हुए दो शिष्योंको दर्शन देना।

(लूक २४)

१, ख. यीशुका उन दो शिष्योंसे भेंट होना। उसी दिन यीशुके शिष्योंमेंसे दो जन इम्माऊ नाम एक गांवको जाते थे। और वे इन सब बातों पर, जो हुई थीं, आपसमें बातचीत करते थे। तब यीशु आपही निकट आके उनके संग हो लिया। परन्तु उनकी दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्होंने उसको नहीं चीन्हा।

२, ख. शिष्योंका कहना। यीशुने उनसे कहा, "यह क्या बातें हैं, जिनपर तुम चलते हुए आपसमें बातें करते और उदास होते हो"। तब एकने जिसका नाम क्लियोपा था, उत्तर देके कहा, "क्या केवल तूही यिरूशलीममें डेरा करके वे बातें, जो उसमें इन दिनोंमें हुई हैं, नहीं जानता है"? उसने कहा, "कौनसी बातें"। उन्होंने कहा, "यीशु नासरीके विषयमें, जो भविष्यद्वक्ता और ईश्वरके और सब लोगोंके आगे काममें और वचनमें शक्तिमान पुरुष था। क्योंकर हमारे प्रधानयाजकों और अध्यक्षोंने उसे वधके योग्य ठहराके क्रूशपर घात किया है। हमें आशा थी कि वही है, जो इसरायलका उद्धार करेगा। परन्तु जबसे यह हुआ, तबसे आज तीसरा दिन है। और हमोंमेंसे कितनी स्त्रियोंने भी हमें विस्मित किया है। वे भोरको कबरपर गईं, पर उसकी

लोथ न पाके फिर आके बोलीं कि हमने स्वर्ग दूतोंका दर्शन पाया है, जो कहते हैं कि वह जीता है। तब हमारे संगियोंमेंसे कितने जन कबरपर गये, और जैसा स्त्रियोंने कहा, तैसाही पाया, परन्तु उसको न देखा"।

३, ख. यीशुका शिष्योंको डांटना और सिखाना। तब यीशुने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धि, और भविष्यद्वक्ताओंकी सब बातोंपर विश्वास करनेमें मन्दमति लोगो। क्या अवश्य न था कि खीष्ट यह दुःख उठाके अपने ऐश्वर्य्यमें प्रवेश करे"। और उसने मूसासे और सब भविष्यद्वक्ताओंसे आरम्भ कर सारे धर्म्मपुस्तकमें अपने विषयमेंकी बातोंका अर्थ उन्होंको बताया।

४, ख. फिर पहिचानना। इतनेमें वे उस गांवके पास पहुंचे, जहां वे जाते थे। और यीशुने ऐसा किया, जैसा कि आगे जाता है। परन्तु उन्होंने यह कहके उसको रोका कि "हमारे संग रहिये, क्योंकि सांझ हो चली, और दिन ढल गया है"। तब वह उनके संग रहनेको भीतर गया। जब वह उनके संग भोजनपर बैठा, तब उसने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के उनको दिया। तब उनकी दृष्टि खुल गई, और उन्होंने उसको चीन्हा। और यीशु उनसे अदृश्य हो गया। तब उन्होंने आपसमें कहा, "जब वह मार्गमें हमसे बात करता था और धर्म्मपुस्तकका अर्थ हमें बताता था, तब क्या हमारा मन हममें न तपता था"।

५, ख. यिरूशलीमको लौटना। वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीमको लौट गये और ११ शिष्योंको एकट्ठे हुए और यह कहते हुए पाया कि "निश्चय प्रभु जी उठा है और शीमोनको दिखाई दिया है"। तब उन दोनोंने कह सुनाया कि मार्गमें क्या हुआ था, और यीशु क्योंकर रोटी तोड़नेमें उनसे पहचाना गया।

ख. मत्ती २८, २०. देखो मैं जगतके अन्तलों सब दिन तुम्हारे संग हूं। यह रसत्रीपदका कर्त्ता है इत्यादि-साक्षी. ३०, ५+६। २. निर्णय।

ग. योहन ५, ३९. धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ो, क्योंकि तुम समझते हो, कि उसमें अनन्तजीवन हमें मिलता है, और वही है, जो मेरे विषयमें साक्षी देता है।
पराजीत वैरीसे क्या डर इत्यादि-साक्षी. ३६, ४॥

४९. यीशुका यिरूशलीममें शिष्योंको दर्शन देना।

(मार्क १६. लूक २४. योहन २०.)

१, ख. यीशुका जी उठनेके दिनकी सांझको शिष्योंको दर्शन देना। उस दिनको सांझ होते हुए (जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे, तहां द्वार यहूदियोंके डरके मारे बन्द होते हुए) यीशु आया और बीचमें खड़ा होके उनसे कहा, "तुम्हारा कल्याण होवे"। परन्तु उन्होंने व्याकुल और भयमान हो जाके समझा कि हम प्रेतको देखते हैं। तब यीशुने उनसे कहा, "क्यों व्याकुल हो, और तुम्हारे मनमें सन्देह क्यों उत्पन्न होता है। मेरे हाथ और मेरे पांव देखो, कि मैं आपही हूं"। तब शिष्य लोग प्रभुको देखके आनन्दित हुए। परन्तु जब वे आनन्दके मारे अब तक प्रतीति नहीं करते थे, तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम्हारे पास कुछ भोजन है" ? उन्होंने उसको कुछ भूनी मछली और मधुका छत्ता दिया। उसने लेके उनके साम्ने खाया और उनके अविश्वासपर उलहना दिया, इस लिये कि जिन्होंने उसे जी उठे हुए देखा था, उन लोगोंकी उन्होंने प्रतीति न किई। और उसने कहा, "यूं लिखा है, और इसी रीतिसे अवश्य था कि खीष्ट दुःख उठावे, तीसरे दिन मृतकोंमेंसे जी उठे, और सब देशोंके लोगोंमें उसके नामसे पश्चात्तापकी और पापमोचनकी कथा सुनाई जावे। तुम्हारा कल्याण होवे : जैसे पिताने मुझे भेजा है, तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं" यह कहके उसने फूंक दिया और उनसे कहा, "पवित्रआत्मा लेओ। जिन्होंके पाप तुम क्षमा करो, वे उनके लिये क्षमा किये जाते हैं, जिन्होंके तुम रखो, वे रखे हुए हैं"।

२, ख. अविश्वासी थोमाका विश्वासी हो जाना। जब यीशु आया, तब थोमा उनके संग नहीं था। सो दूसरे शिष्योंने उससे कहा, "हमने प्रभुको देखा"। उसने कहा, "जो मैं उसके हाथोंमें कीलोंका चिन्ह न देखूं, कीलोंके चिन्हमें अपनी उंगली न डालूं और उसके पंजरमें अपना हाथ न डालूं तो मैं विश्वास न करूंगा"। — आठ दिनके पीछे शिष्य लोग फिर घरके भीतर थे, और थोमा उनके संग था। तब द्वार बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके कहा, "तुम्हारा कल्याण होवे"। तब उसने थोमासे कहा, "अपनी

उंगली यहां लाके मेरे हाथोंको देख और अपना हाथ लाके मेरे पंजरमें डाल और अविश्वासी नहीं, परन्तु बिश्वासी हो"। थोमाने उत्तर दिया कि "हे मेरे प्रभु और हे मेरे ईश्वर"। यीशुने उससे कहा, "हे थोमा, तूने मुझे देखा है, इस लिये बिश्वास किया है। धन्य वे हैं, जो बिन देखे बिश्वास करें"।

ख. मत्ती १८, २०. जहां दो अथवा तीन मेरे नामपर एकट्ठे होवें, तहां मैं उनके बीचमें हूं।
हे बीर सदा सुभट बलवान इत्यादि-साक्षी. ३१, ३। २. निर्णय।

ग. फिलिप्पी ४, ७. ईश्वरकी शान्ति, जो समस्त ज्ञानसे ऊर्द्ध है खीष्ट यीशुमें तुम लोगोंके हृदय और तुम लोगोंके मनकी रक्षा करेगी। इस लिये अब हम आनन्दमय इत्यादि-साक्षी. ३६, ५+६॥

---

५०. यीशुका गलीलमें शिष्योंको दर्शन देना।

(योहन २१. मत्ती २८. मार्क १६)

१, ग. यीशुका तिबरिया समुद्रके तीरपर शिष्योंको दर्शन देना। इसके पीछे यीशुने अपने तईं तिबरिया समुद्रके तीरपर शिष्योंको इस रीतिसे दिखाया। पितर, थोमा, नथनेल, याकूब, योहन और दो दूसरे शिष्य मछली पकड़नेको गये, परन्तु उस रातको कुछ नहीं पकड़ा। भोर होते हुए यीशु तीर पर खड़ा हुआ। पर शिष्य लोग नहीं जानते थे, कि यीशु है। तब यीशुने उनसे कहा, "हे लड़को, क्या तुम्हारे पास कुछ खानेको है"? उन्होंने उत्तर दिया कि "नहीं"। उसने कहा, "नावकी दहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे"। सो उन्होंने डाला, और अब मछलियोंके झुण्डके कारण वे उसे खींच न सके। तब वह शिष्य, जिसे यीशु प्यार करता था, पितरसे बोला, "यह तो प्रभु है"। पितर यह सुनके समुद्रमें कूद पड़ा। परन्तु दूसरे शिष्य लोग नावपर मछलियोंका जाल घसीटते हुए चले आये। जब वे तीरपर उतरे, तब कोयलेकी आग धरी हुई, मछली उसपर रखी हुई और रोटी देखी। यीशुने उनसे कहा, "जो मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं, उनमेंसे ले आके भोजन करो"।

२, ग. पितरसे यीशुकी बातचीत। भोजन करनेके पीछे यीशुने पितरसे कहा, "हे यूनसके पुत्र शीमोन, क्या तू मुझे इन्होंसे अधिक प्यार करता

है"? वह बोला, "हां प्रभु, आप जानते हैं, कि मैं आपको प्यार करता हूं"; उसने उससे कहा, "मेरे मेम्नोंको चरा"। यीशुने दूसरी बेर उससे कहा, "हे यूनसके पुत्र शिमोन, क्या तू मुझे प्यार करता है"? वह बोला, "हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं"; उसने उससे कहा, "मेरी भेड़ोंकी रखवाली कर"। यीशुने तीसरी बेर उससे कहा, "हे यूनसके पुत्र शिमोन, क्या तू मुझे प्यार करता है"? तब पितर उदास होके बोला, "हे प्रभु, आप सब कुछ जानते हैं, आप जानते हैं, कि मैं आपको प्यार करता हूं"; यीशुने उससे कहा, "मेरी भेड़ोंको चरा। मैं तुझसे सच २ कहता हूं, जब तू जवान था, तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था, तहां जाता था। परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तब अपने हाथ फैलावेगा, और दूसरा तेरी कमर बांधके, जहां तू न चाहे, तहां तुझे ले जायगा"। यह बातसे उसने पता दिया कि पितर कैसी मृत्युसे ईश्वरकी महिमा प्रगट करेगा।

ग. १ योहन ४, १६. ईश्वर प्रेम है, और जो प्रेममें रहता है, सो ईश्वरमें रहता है, और ईश्वर उसमें ।
प्रभुमें ठाकुर डाल इत्यादि-भाषा. ८६, २ । १. आज्ञा ।

३, ख. बपतिस्माका निरूपण। ग्यारह शिष्य गालीलमें उस पर्वत पर गये, जो यीशुने उनको बताया था; और उन्होंने उसको देखके प्रणाम किया। पर यीशुने उन पास आके कहा, "स्वर्गमें और पृथिवीपर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है; इस लिये तुम जाके सब देशोंके लोगोंको शिष्य करके उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्माके नामसे बपतिस्मा देओ; और उन्हें सब बातें, जो मैंने तुम्हें आज्ञा किई हैं, पालन करनेको सिखाओ। और देखो, मैं जगतके अन्तलों सब दिन तुम्हारे संग हूं। जो विश्वास करे और बपतिस्मा लेवे, सो त्राण पावेगा। परन्तु जो विश्वास न करे सो दण्डके योग्य ठहराया जायगा"।

---

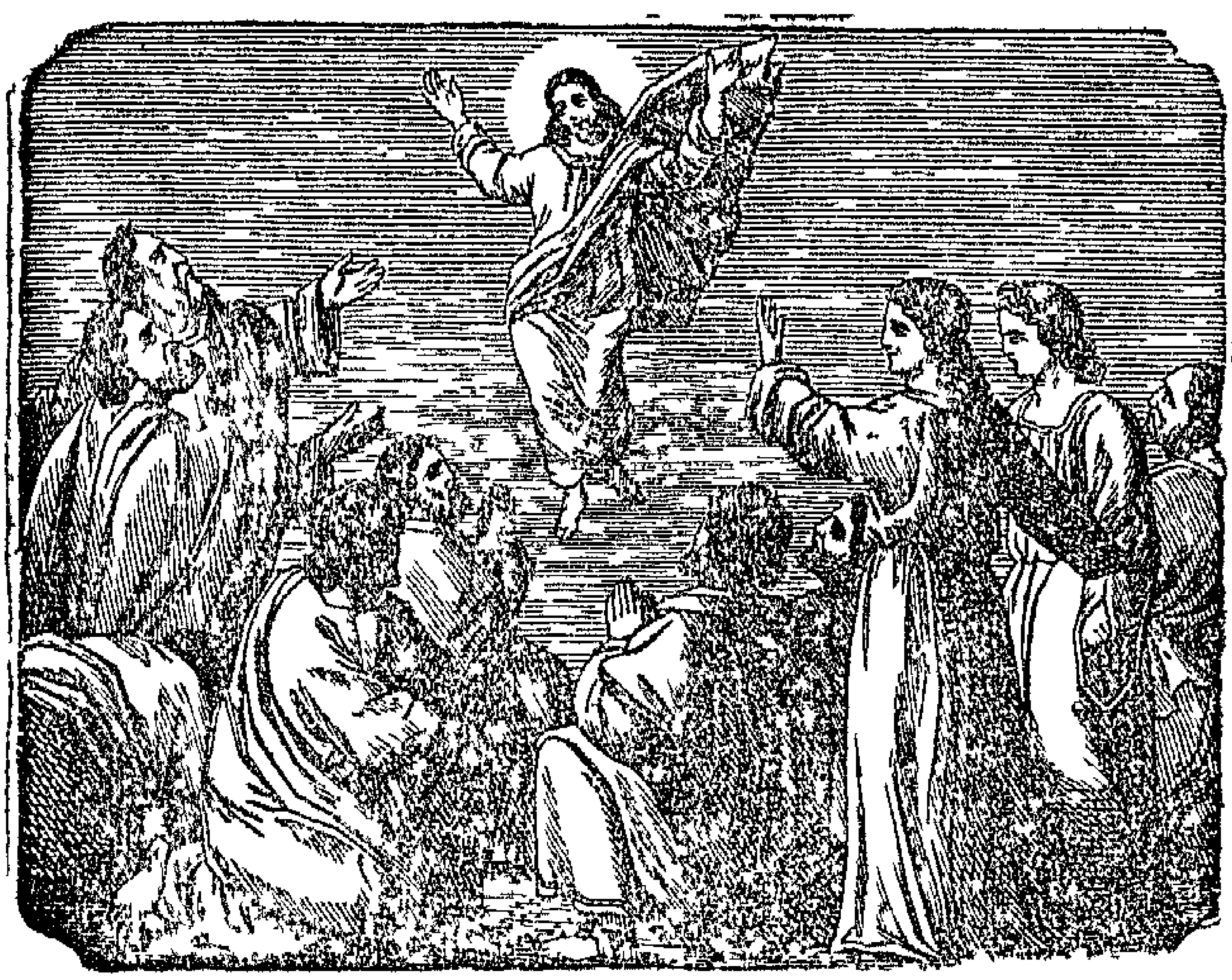
५१. यीशुका स्वर्गपर चढ़ना ।

(मार्क १६. लूक २४ प्रेरित १)

१, ख. बिदा होनेवाले यीशुकी आज्ञा और प्रतिज्ञा। शिष्य लोग ४० दिनलों यीशुको देखा करते थे; और वह ईश्वरके राज्यके विषयमें उनसे

बातें करता था। जब वह पीछली बेर उनके संग एकट्ठा हुआ, तब उन्हें आज्ञा दिई कि "यिरूशलीमको मत छोड़ जाओ, परन्तु पिताकी प्रतिज्ञाकी बाट जोहते रहो। क्योंकि योहनने तो जलसे बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े दिनोंके पीछे तुम्हें पवित्र आत्मासे बपतिस्मा दिया जायगा; और तुम पृथिवीके अन्तलौं मेरे साक्षी होओगे"।

२, ख. यीशुका स्वर्गपर चढ़ जाना और उसके फिर आनेकी प्रतिज्ञा। तब यीशु उन्हें बाहर ले जाके बैथनियाके निकट जैतून पर्वतपर चढ़ा और अपने हाथ उठाके उन्हें आशीष दिई। उन्हें आशीष देते हुए और शिष्योंके देखते हुए वह ऊपर उठाया गया, और मेघने उसे उनकी दृष्टिसे छिपा लिया। ज्योंही वे उसके जाते हुए स्वर्गकी ओर ताकते रहे, त्योंही, देखो, दो पुरुष उजले वस्त्र पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये और कहा, "हे गलीली लोगो, तुम क्यों स्वर्गकी ओर देखते हुए खड़े हो? यही यीशु जो तुम्हारे पाससे स्वर्गपर उठा लिया गया है, जिस रीतिसे तुमने उसे स्वर्गको जाते देखा है, उसी रीतिसे आवेगा"।



३, ख. शिष्योंका विश्वासयुक्त आनन्द। तब शिष्य लोग उसको प्रणाम कर बड़े आनन्दसे यिरूशलीमको लौट गये और नित्य मन्दिरमें ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद किया करते थे।

ख. प्रेरित ४, १२. यीशुको छोड़ किसी दूसरेसे त्राण नहीं है, क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है, जो मनुष्योंके बीचमें दिया गया है, जिससे हमें त्राण पाना होगा।
स्वर्गपर यीशु चढ़ गया है इत्यादि-साखी. ३९, १-५। २ निर्णय—स्वर्गपर चढ़ गया इत्यादि।

ग. फ़िलिप्पी २, ९-११. इस कारण ईश्वरने यीशुको बहुत ऊंचा भी किया और उसको वह नाम दिया, जो सब नामोंसे ऊंचा है। इस लिये कि जो स्वर्गमें, और जो पृथिवीपर, और जो पृथिवीके नीचे हैं, उन सभोंका हर एक घुटना यीशुके नामसे झुकाया जाय और हर एक जीभसे मान लिया जाय, कि यीशु खीष्टही प्रभु है जिस्सें ईश्वर पिताका गुणानुवाद होवे।
हे महायाजक कृपामय इत्यादि-साखी. ४०, ४॥

५२, पवित्रआत्माका उंडेला जाना।

(प्रेरित १+२.)

१, ख. मत्तथियाहका प्रेरित ठहराया जाना। यीशुके स्वर्गपर चढ़नेके पीछे शिष्य लोग यिरूशलीममें एक चित्त होके प्रार्थना और बिन्तीमें लगे रहते थे। उन दिनोंमें पितरने उनके बीचमें खड़ा होके कहा कि "यहूदा तो अपनी सेवकाईसे पतित हुआ है; इस लिये उचित हैं कि हम उसको प्रेरिताईके अधिकारपर एक दूसरेको ठहरावें, जो हमारे साथ यीशुके जी उठनेका साखी होवे"। तब उन्होंने उन मनुष्योंमेंसे, जो यीशुके बपतिस्मा लेनेसे लेके उसके स्वर्गपर चढ़ने तक उसके साथ रहे थे, दो जनोंको खड़ा किया और प्रार्थना करके कहा कि "हे प्रभु, सभोंके अन्तर्यामी, इन दोनोंमेंसे एकको, जिसे तूने चुना है, ठहरा दे"। तिसपर उन्होंने चिट्ठियां डालीं; चिट्ठी मत्तथियाहके नामपर निकली, और वह ११ प्रेरितोंके संग गिना गया।

२, ख. शिष्योंका पवित्र आत्माको पाना। जब पेन्तिकोष्ट पर्ब्बका दिन आ पहुंचा, तब यीशुके शिष्य सब एक चित्त होकर एकट्ठे हुए थे। और अचांचक, प्रबल बयारके चलनेकासा, स्वर्गसे एक शब्द हुआ, जिससे सारा घर जहां वे बैठे थे, भर गया; और आग कीसी जीभें, अलगर होती हुईं, दिखाई देके हर एक पर ठहर गईं; तब वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए और जैसे आत्माने उन्हें बुलवाया तैसे आन २ बोलियां बोलने लगे।—

यिरूशलीममें भक्त यहूदी लोग वास करते थे, जो स्वर्गके नीचेके हर एक देशसे आये थे। इस शब्दके होनेपर बहुतसे एकट्ठे हुए और घबरा गये; क्योंकि उन्होंने उनको हर एक अपनीही भाषामें बोलते हुए सुना। और वे सब विस्मित और अचंभित हो आपसमें कहने लगे, "देखो, ये सब, जो बोलते हैं, क्या गलीली लोग नहीं हैं? फिर हम क्योंकर हर एक अपने२ जन्म देशकी भाषामें उन्हें ईश्वरके महा कार्य्योंकी बात बोलते हुए सुनते हैं"। सो वे सब विस्मित हो दुबधामें पड़े, और एक दूसरेसे कहने लगा, "इसका अर्थ क्या है"? परन्तु दूसरोंने ठट्ठेमें कहा, "वे नई मदिरासे छकाछक हुए हैं"।

३, ख. पितरका पहिला उपदेश। तब पितरने ११ शिष्योंके संग खड़ा होके ऊंचे शब्दसे कहा, "हे यहूदियो, ये तो मतवाले नहीं हैं, जैसा तुम समझते हो; परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्तासे कही गई, कि ईश्वर कहता है, पीछले दिनोंमें मैं सब मनुष्योंपर अपना आत्मा उंडेलूंगा। हे इस्रायली लोगो, यह बातें सुनो, यीशु नासरी एक मनुष्य, जिसका प्रमाण ईश्वरसे आश्चर्य कर्म्मों और अद्भुत चिन्होंके द्वारा तुम्हें दिया गया है, उसीको तुमने लिया और अधर्म्मियोंके हाथोंके द्वारा क्रूशपर ठोंकके मार डाला; उसीको ईश्वरने जिला उठाया; इस बातके हम सब साक्षी हैं। सो ईश्वरके दहिने हाथ ऊंच पद प्राप्त करके उसने यह, जो तुम अब देखते और सुनते हो, उंडेल दिया है। सो इस्रायलका सारा घराना निश्चय जाने कि इस यीशुको ईश्वरने प्रभु और ख्रीष्ट ठहराया है"। तब सुननेहारोंके मन छिद गये, और वे बोले, "हे भाइयो, हम क्या करें"। पितरने कहा, "पश्चात्ताप करो, और हर एक जन यीशु ख्रीष्टके नामसे बपतिस्मा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होवे, और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे"।

४, ख. यिरूशलीममेंकी पहिली ख्रस्तानी मण्डली। तब जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया। और उस दिन ३००० जनके अटकल शिष्योंमें मिल गये। वे प्रेरितोंके उपदेशमें, संगतिमें, रोटी तोड़नेमें और प्रार्थनामें लगे रहते थे; वे धन सम्पत्तिको बेचके, जैसा जिसको प्रयोजन होता था, वैसा सभोंमें बांट देते थे; वे प्रतिदिन मन्दिरमें एक चित्त होके

लगे रहते और ईश्वरकी स्तुति करते थे ; सब लोगोंका उनपर अनुग्रह था और प्रभु त्राण पानेहारोंको प्रतिदिन मण्डलीमें मिलाता था ।

ख　योहन १६, १३. जब सत्यताका आत्मा आवेगा, तब तुम्हें सारी सच्चाईलों मार्ग बतावेगा ।
　　हे पावन आत्मा उतर आ इत्यादि साक्षी. ४३, १ + २ । ३. निर्णय ॥

ग.　रोमी ८, १४-१६. जितने लोग ईश्वरके आत्माके चलाये चलते हैं, वे ही ईश्वरके पुत्र हैं । क्योंकि तुमने दासत्वका आत्मा नहीं पाया है, कि फिर भयमान होओ, परन्तु लेपालकपनका आत्मा पाया है, जिससे हम हे अब्बा, अर्थात हे पिता पुकारते हैं । आत्मा आपही हमारे आत्माके संग साक्षी देता है, कि हम ईश्वरके सन्तान हैं ।
　　परमेश्वर प्रभु धर्मात्मा इत्यादि-साक्षी. ४१, १-३ । ४ भाग ॥

---

५३. पितरसे एक लंगड़ेका चंगा हो जाना ।

(प्रेरित ३ + ४.)

१, ख. **चंगा हो जाना ।** एक दिन प्रार्थनाके समयमें पितर और योहन मन्दिरको जाते थे । और लोग किसी मनुष्यको, जो अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था, प्रतिदिन मन्दिरके द्वारपर रख देते थे, कि वह मन्दिरमें जाने-हारोंसे भीख मांगे । उस मनुष्यने पितर और योहनको देखके उनसे भीख मांगी ; पितरने कहा, "चांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह, जो मेरे पास है, मैं तुझे देता हूं, यीशु खीष्टके नामसे उठ और चल" ; तब उसने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया ; और वह मनुष्य तुरन्त खड़ा हुआ, फिरने लगा, और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ उनके संग मन्दिरमें प्रवेश किया । और सब अचंभित हुए ।

२, ग. **पितरका दूसरा उपदेश ।** तब पितरने कहा, "हे इस्रायली लोगो, तुम क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी और क्यों ऐसा ताकते हो, कि जैसा हमने अपनी ही शक्ति अथवा भक्तिसे इसको चलनेका सामर्थ्य दिया होता । हमारे पितरोंके ईश्वरने अपने सेवक यीशुकी महिमा प्रगट किई, जिसे तुमने पकड़वाके घात किया । परन्तु वह जीवनका कर्त्ता है । और ईश्वरने उसे मृतकोंमेंसे उठाया । इस बातके हम साक्षी हैं । और उसके नामहीने इस मनुष्यको विश्वासके द्वारा सामर्थ्य देके चंगा किया । और अब हे भाइयो,

मैं जानता हूं कि तुम्होंने यह काम अज्ञानतासे किया; इस लिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जावें"। पितरका उपदेश सुनके ५००० मनुष्यके अटकल विश्वासी हुए

ग. योहन १६, २३. यीशुने कहा, "मैं तुमसे सच २ कहता हूं, जो कुछ तुम मेरे नामसे पितासे मांगोगे, वह तुमको देगा"।
कैन तुमको यीशु मेरे त्राणी इत्यादि-साक्षी. ३, ५। २. निर्णय १.

३, ग. पितर और योहनका बन्दीगृहमें डाला जाना और प्रधानोंके आगे साक्षी देना। परन्तु याजक लोगों और मन्दिरके अध्यक्षने पितर और योहनको पकड़के बन्दीगृहमें रखा। बिहान हुए लोगोंके प्रधानोंने एकट्ठे होके उन्होंसे पूछा, "तुमने यह काम किस सामर्थ्यसे अथवा किस नामसे किया"? तब पितरने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके कहा, "हे लोगोंके प्रधानो जानिये कि यीशु खीष्ट नासरीके नामसे, जिसे आप लोगोंने क्रूशपर घात किया, और जिसे ईश्वरने मृतकोंमेंसे उठाया, यह मनुष्य आप लोगोंके आगे चंगा खड़ा है। यही यीशु वह पत्थर है, जिसे आप थवइयोंने तुच्छ जाना, जो कोनेका सिरा हुआ है। किसी दूसरेसे त्राण नहीं है, क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है, जो मनुष्योंके बीचमें दिया गया हैं, जिससे हमें त्राण पाना होगा"। प्रधानोंने पितर और योहनका साहस देखके अचंभा किया और उनको आज्ञा दिई कि "यीशुके नामके विषय कुछ भी मत सिखाओ"। परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि "आपही विचार कीजिये, क्या उचित है कि हम ईश्वरसे अधिक आपको मानें। जो हमने देखा और सुना है, उसको न कहना, हमसे नहीं हो सकता है"। तब प्रधानोंने धमकी देके उन्हें लोगोंके कारण छोड़ दिया।

ग. १ कोरिन्थ ३, ११. जो नेव पड़ी है, अर्थात यीशु खीष्ट, उसे छोड़के दूसरी नेव कोई नहीं डाल सकता है।
मैं आत्मासे सम्भाला जाता इत्यादि-साक्षी. ३, ४। २. निर्णय ॥

---

५४. अननियाह और सफीरा।

(प्रेरित ५.)

१, ग. पहिली खृस्तानी मण्डलीकी दशा। विश्वासियोंका एक मन और एक जीव था, और उन्होंकी सब सम्पत्ति साझेकी थी। जो २ लोग

भूमि अथवा घरोंके अधिकारी थे, सो उन्हें बेचके उनका दाम लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखते थे । और जैसा प्रयोजन होता था, तैसा हर एकको बांटा जाता था ।

२, ग. अननियाहके कपटका दण्ड । परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्यने भूमि बेचके दाममेंसे कुछ रख छोड़ा, जो उसकी स्त्री सफीरा भी जानती थी, और कुछ लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखा । परन्तु पितरने कहा, "हे अननियाह, शैतानने क्यों तेरे मनमें यह मत दिया है कि तू पवित्र आत्मासे झूठ बोले और भूमिके दाममेंसे कुछ रख छोड़े । यदि तू अपनी भूमि न बेचता, तो भला होता । तू मनुष्योंसे नहीं परन्तु ईश्वरसे झूठ बोला है" । अननियाह यह बात सुनतेही गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिया । तब उन्होंने उसे लपेटा और बाहर ले जाके गाड़ा ।

३, ग. सफीराके झूठ बोलनेका दण्ड । पहर एकके पीछे उसकी स्त्री यह, जो हुआ था, न जानके भीतर आई । पितरने उससे कहा, "क्या तुमने वह भूमि इतनेहीमें बेची" ? वह बोली, "हां इतनेमें" । पितरने कहा, "यह क्या है कि तुम दोनों परमेश्वरके आत्माकी परीक्षा करनेको एक मत हुए । देख, तेरे स्वामीके गाड़नेहारे द्वारपर हैं, और वे तुझे भी बाहर ले जायेंगे" । तब वह तुरन्त उसके पांवोंके पास गिर पड़ी और प्राण छोड़ दिया । और उन्होंने भीतर आ उसे बाहर ले जाके उसके स्वामीके पास गाड़ा । और सारी मण्डलीको बड़ा भय हुआ ।

ग. याकूब १, १४-१५. हर कोई, जब अपनीही अभिलाषासे खींचा और फुसलाया जाता है, तब परीक्षामें पड़ता है । फिर अभिलाषाको जब गर्भ रहता है, तब वह कुक्रिया जनती है, और कुक्रिया जब समाप्त होती, तब मृत्युको उत्पन्न करती है ।
संसारके आचार और व्यवहारको त्याग इत्यादि-साक्षी. ७३, ५ ।
१ + ३ आज्ञा । ३. निर्णय — एकही पवित्र खीष्टानी कलीशा, पवित्रों की संगत इत्यादि ॥

---

५५. प्रेरित लोग महासभाके आगे ।

(प्रेरित ५.)

१, ग. मनुष्योंकी आज्ञासे अधिक ईश्वरकी आज्ञाको मानना उचित है । प्रेरितोंके हाथोंसे बहुत चिन्ह और अद्भुत काम किये जाते थे ।

और बहुत लोग बिश्वास करके प्रभुसे मिल जाते थे । तब महायाजक डाहसे भर गया और प्रेरितोंको पकड़के बन्दीगृहमें रखा । परन्तु परमेश्वरके एक दूत ने रातको बन्दीगृहका द्वार खोलके उन्हें बाहर लाके कहा कि "जाके मन्दिरमें जीवनकी बातें कहो" । यह सुनके वे भोरको मन्दिरमें प्रवेश करके उपदेश करने लगे । तब किसीने आके महायाजकको संदेश दिया कि "देखिये, वे मनुष्य, जिनको आपने बन्दीगृहमें रखा, मन्दिरमें खड़े हुए उपदेश देते हैं" । तब अध्यक्षने प्यादोंके संग जाके उन्हें ले आके महासभामें खड़ा किया । और महायाजकने उनसे कहा, "क्या हमने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न दिई, कि इस नामके विषयमें उपदेश मत करो" ? उन्होंने उत्तर दिया कि "मनुष्योंकी आज्ञासे अधिक ईश्वरकी आज्ञाको मानना उचित है । हमारे पितरोंके ईश्वरने यीशुको, जिसे आप लोगोंने काठपर लटकाके घात किया, जिला उठाया और उसको कर्त्ता औ त्राताका ऊंच पद दिया है"; यह सुननेसे उनको तीरसा लग गया, और वे उन्हें मार डालनेका विचार करने लगे ।

२, ग. गमलियेलका मंत्र । परन्तु सभामें गमलियेल नाम एक फरीशीने, जो सब लोगोंमें मर्य्यादिक था, खड़ा होके प्रेरितोंको थोड़ी बेर बाहर करनेकी आज्ञा दिई और कहा, "हे इसरायली मनुष्यो, इन मनुष्योंको जाने दो, क्योंकि यह विचार अथवा यह काम यदि मनुष्योंकी ओरसे होय, तो लोप हो जायगा, परन्तु यदि ईश्वरसे है, तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो" । तब उन्होंने उसकी बात मानी और प्रेरितोंको बुलाके उन्हें कोड़े मारके छोड़ दिया । और प्रेरित इस बातसे कि हम यीशुके नामके लिये निन्दित होनेके योग्य गिने गये आनन्द करते हुए चले गये और प्रतिदिन मन्दिर और घरोंमें यीशु खीष्टका सुसमाचार सुनानेमें लगे रहे ।

ग. मत्ती १०, ३२+३३. जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिताके आगे मान लेऊंगा । परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे, उससे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिताके आगे मुकरूंगा ।
परमेश्वर है एक दृढ़ पहाड़ इत्यादि-साखी. ९२, १ । १. आज्ञा । २. निर्णय ॥

५६. स्तिफान।

(प्रेरित ६ + ७.)

१, ग. स्तिफानका विश्वास और सामर्थ्य। जब शिष्य बहुत होने लगे, तब उन्होंने ७ कंगाल पालकोंको चुन लिया। उनके बीचमें स्तिफान था, जो विश्वास और पवित्र आत्माके सामर्थ्यसे परिपूर्ण होके बड़े २ अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगोंके बीचमें करता था।

२, ग. स्तिफानपर दोष लगाया जाना। तब कितने बैरी उठके स्तिफानसे बिवाद करने लगे, परन्तु उस ज्ञानका और उस आत्माका, जिस करके वह बात करता था, साम्ना नहीं कर सकते थे,। तब वे लोगों और प्राचीनोंको उस्काके उसे पकड़के महा सभामें लाये और झूठे साक्षियोंको खड़ा किया, जो बोले, "हमने इसको मूसाके और ईश्वरके बिरोधमें निन्दाकी बातें बोलते सुना है"। (सब लोगोंने, जो सभामें बैठे थे, स्तिफानकी ओर ताकके उसका मुंह स्वर्ग दूतके मुंहके ऐसा देखा)।

३, ग. स्तिफानका उपदेश। महायाजकने उससे कहा, "क्या ये बातें सच हैं"? तब स्तिफान वर्णन करने लगा कि ईश्वरने पुराने नियममें हमारे पितृोंको अद्भुत रीतिसे चलाके नित्य २ उनपर अपनी बड़ी दया प्रगट किई। तौभी उन्होंने अपने कठोर मन और पापोंसे उसको बेर २ उदास और क्रोधित किया। अन्तमें उसने कहा, "हे कठोर लोगो, तुम सदा पवित्र आत्माका साम्ना करते हो, जैसा तुम्हारे पितृोंने, तैसा तुम भी। तुम्हारे पितृोंने भविष्यद्वक्ताओं को सताके मार डाला, जिन्होंने इस धर्म्मी जनके आनेका आगेसे संदेश दिया। जिसके तुम अब पकड़वानेहारे और हत्यारे हुए हो"। यह बातें सुनतेही उनके मनको तीर सा लग गया, और वे स्तिफानपर दांत पीसने लगे। परन्तु उस ने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो स्वर्गकी ओर ताकके ईश्वरकी महिमाको देखके कहा, "देखो मैं स्वर्गको खुले और मनुष्यके पुत्रको ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखता हूं"।

४, ग. स्तिफानका पत्थरवाह किया जाना। तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान बन्द किये और उसे नगरके बाहर निकालके पत्थरवाह

किया । परन्तु स्तिफान यह कहके प्रार्थना करता था कि "हे प्रभु यीशु, मेरे आत्माको ग्रहण कर" । और घुटने टेकके उसने बड़े शब्दसे पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उनपर मत लगा" । और यह कहके सो गया । स्तिफानके झूठे साक्षियोंने उसपर पहिले पत्थर फेंकनेके लिये अपने कपड़े शावल नाम एक जवानके पांव पास उतार रखे, जो उसके मारे जानेमें सम्मति देता था ।

ग. मत्ती ५, ११ + १२. धन्य तुम हो, जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरोध सब प्रकार की बुरी बात कहें ।
जो वचन है हमारे साथ इत्यादि-साक्षी. ९२, ४ । ३. ६ + ९ आज्ञा ५ विन्ती ॥

---

५७. कूश देशका प्रधान ।

(प्रेरित ८.)

१, ग. मण्डलीका उपद्रवसे फैल जाना । उस समय यिरूशलीममें की मण्डलीपर बड़ा उपद्रव हुआ, विशेष करके शावलके द्वारा, जो घर २ घुसके विश्वासी पुरुषों और स्त्रियोंको पकड़के बन्दीगृहमें डालता था । तब वे प्रेरितोंको छोड़ यहूदिया और शोमीरोनमें तितर बितर हुए । जो तितर बितर हुए, सो सुसमाचार प्रचार करते हुए फिरा किये । और इस रीतिसे फिलिपने, जो कंगाल पालकोंमेंसे एक था, शोमीरोनके एक नगरमें जाके खीष्टका समाचार सुनाया । वहांके लोगोंने सुननेको एक चित्त होके मन लगाया और विश्वास करके बपतिस्मा लिया ।

२, ग. प्रधानका मन फिराना । परन्तु परमेश्वरके एक दूतने फिलिप से कहा, "उठके दक्षिणको उस मार्गपर जा, जो यिरूशलीमसे अज्जा नगरको जाता है" । वह उठके गया और देखो, कूश देशका एक मनुष्य, जो रानी कंदाकीका एक प्रधान और अध्यक्ष था, यिरूशलीमको भजन करनेको आया था । और वह लौटके अपने रथपर बैठा हुआ यशायाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक पढ़ता था । फिलिपने यह सुनके कहा, "क्या आप, जो पढ़ते हैं, उसे बूझते हैं" ? उसने कहा, "यदि कोई मुझे न बतावे, तो मैं कैसे बूझ सकूं",

और फिलिपसे बिन्ती किई कि "चढ़के मेरे संग बैठिये"। धर्म्मपुस्तकका अध्याय, जो वह पढ़ता था, यही था कि वह भेड़की नाईं बध होनेको पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारेके साम्ने अबोल है, तैसा उसने अपना मुंह न खोला। इसपर प्रधानने फिलिपसे कहा, "मैं आपसे बिन्ती करता हूं, भविष्यद्वक्ता यह बात किसके विषयमें कहता है"। तब फिलिपने अपना मुंह खोलके और धर्म्मपुस्तकके इस बचनसे आरम्भ करके यीशुका सुसमाचार सुनाया।

३, ग. प्रधानका बपतिस्मा लेना। मार्गमें जाते २ वे किसी पानीके पास पहुंचे, और प्रधानने कहा, "देखिये, जल है, बपतिस्मा लेनेमें मुझे क्या रोक है"? फिलिपने कहा, "जो आप सारे मनसे बिश्वास करते हैं, तो हो सकता है"। उसने उत्तर दिया, "मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु खीष्ट ईश्वरका पुत्र है"। तब उसने रथ खड़ा करनेकी आज्ञा दिई। वे दोनों जलमें उतरे, और फिलिपने उसको बपतिस्मा दिया। जब वे जलमेंसे ऊपर आये, तब परमेश्वरका आत्मा फिलिपको ले गया। और प्रधान अपने मार्गपर आनन्द करता हुआ चला गया।

ग. २ तिम: ३, १५-१७. बालकपनसे धर्म्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है, जो बिश्वासके द्वारा, जो खीष्ट यीशुमें है, तुझे त्राण निमित्त बुद्धिमान कर सकता है। सारा धर्म्मपुस्तक ईश्वरकी प्रेरणासे रचा गया और उपदेशके लिये और समझानेके लिये और सुधारनेके लिये और धर्म्मकी शिक्षाके लिये फलदाई है, जिस्तें ईश्वरका जन सिद्ध, अर्थात हर एक उत्तम कर्म्मके लिये सिद्ध किया हुआ होय।
अनुग्रहका एक लक्षण इत्यादि-साक्षी. ४४, ५-३। ४. भाग॥

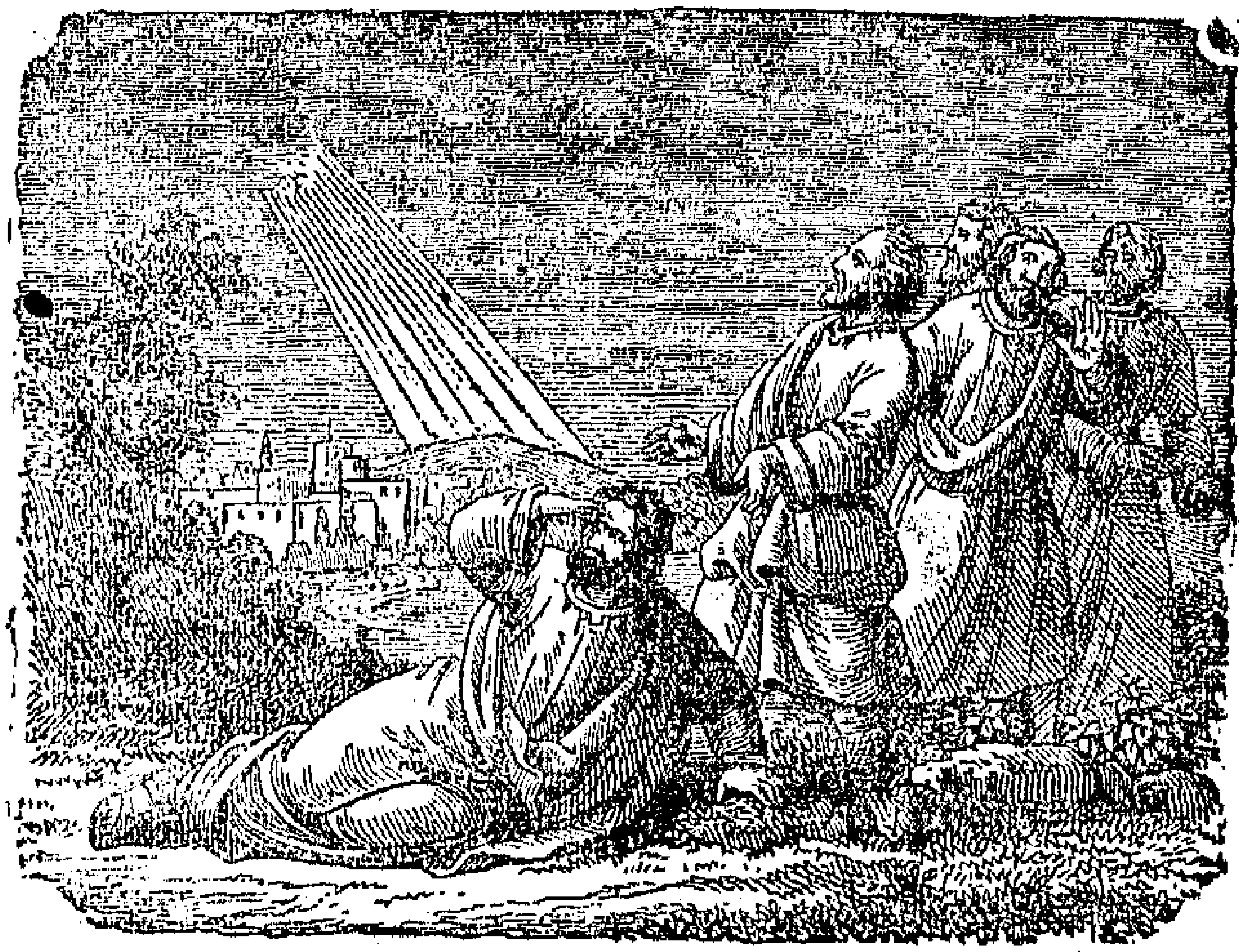
---

५८. पावलका मन फिराना।

(प्रेरित ९.)

१, ख. प्रभु यीशुका पावलको दर्शन देना। शावलकी प्रभुके शिष्योंको धमकाने और घात करनेकी सांस फूल रही थी। उसने महायाजकके पास जाके उससे अधिकार पाया, कि दमेशक नगरके सब बिश्वासियोंको पकड़के बांधे हुए यिरूशलीमको ले आवे। परन्तु जाते हुए दमेशकके निकट पहुंचे,

अचांचक स्वर्गसे एक जोति उसको चारों ओर चमकी। तब वह भूमिपर गिरा



और यह शब्द सुना कि "हे शावल, हे शावल, तू मुझे क्यों सताता है"? उसने कहा, "हे प्रभु तू कौन है"? प्रभुने कहा, "मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है, पैनोंपर लात मारना तेरे लिये कठिन है"। शावलने कांपित और अचंभित हो कहा, "हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं"। प्रभुने कहा, "उठके नगरमें जा, और तुझसे कहा जायगा, तुझे क्या करना उचित है"। जो मनुष्य शावलके संग जाते थे, सो चुप खड़े थे, क्योंकि वे शब्द तो सुनते पर किसीको नहीं देखते थे। शावल भूमिसे उठके किसीको न देख सका, क्योंकि वह अंधा हो गया। और वे उसका हाथ पकड़के दमेशकमें ले गये। वहां वह ३ दिनलों नहीं देख सकता और न खाता न पीता था।

२, ख. शावलका विश्वासियोंकी संगतिमें ग्रहण किया जाना। दमेशकमें अननियाह नाम एक शिष्य था। उससे प्रभुने दर्शनमें कहा, "हे अननियाह, उठके उस गलीमें जो सीधी कहावती है जा और यहूदाके घरमें तारस नगरके शावल नाम एक मनुष्यको ढूंढ़, क्योंकि वह प्रार्थना करता है"। अननियाहने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैंने सुना है, कि उसने यिरूशलीममें तेरे पवित्र लोगोंसे कितनी बुराई किई है, और यहां उसको, तेरे नामकी सब प्रार्थना करनेहारोंको बांधनेका, अधिकार है"। प्रभुने उससे कहा, "चला

जा, क्योंकि वह अन्यदेशियों और इसरायलके सन्तानोंके आगे मेरा नाम पहुंचानेको मेरा एक चुना हुआ पात्र है"। तब अननियाहने जाके शावलपर हाथ रखा और कहा, "हे भाई शावल, प्रभुने, जिसने मार्गमें तुझको दर्शन दिया, मुझे भेजा है, इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होवे"। और तुरन्त उसकी आंखोंसे छिलकेसे गिर पड़े। वह देखने लगा, उठके बपतिस्मा लिया और भोजन करके बल पाया।

३, ख. मन फिराये हुए शावलका पहिला काम। शावलने कितने दिन दमेशकमेंके शिष्योंके संग होके सभाओंमें यीशुकी कथा सुनाई कि वह ईश्वरका पुत्र है। और सब सुननेहारे विस्मित हो कहने लगे, "क्या यह वह नहीं है, जिसने यिरूशलीममें इस नामकी प्रार्थना करनेहारोंको नाश किया"। — जब बहुत दिन बीत गये, तब यहूदियोंने उसे मार डालनेका आपसमें विचार किया, और वे रात दिन फाटकोंपर पहरा देते थे। परन्तु उनका कुमंत्र शावलको जान पड़ा, और शिष्योंने रातको उसे टोकरेमें लटकाके भीत परसे उतार दिया। जब शावल यिरूशलीममें पहुंचा, तब वह शिष्योंसे मिल जाने चाहता था; परन्तु वे उससे डर जाके उसके शिष्य होनेकी प्रतीति नहीं करते थे; इस लिये बर्णबाने उसे प्रेरितोंके पास लाके उसके मन फिरानेके विषय वर्णन किया, और कि उसने दमेशकमें यीशुके नामसे उपदेश दिया। तब शावल प्रेरितोंके संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशुके नामसे खोलके बात करने लगा।

सो मण्डलियोंको चैन हुआ, वे सुधर जाती थीं, प्रभुके भय और पवित्र आत्माकी शांतिसे चलतीं और बढ़ जाती थीं।

ख. इफिसी ५, १४. हे सोनेहारे, जाग और मृतकोंमेंसे उठ, और खीष्ट तुझे ज्योति देगा।
हाय कि अपने पापका भारा इत्यादि-साक्षी. ६८, ४.

ग. कलसी १, १३ + १४. ईश्वर हमें अन्धकारके वशसे छुड़ाके अपने प्रियतम पुत्रके राज्यमें लाया, जिसमें उसके लोहूके द्वारा हमें उद्धार अर्थात पापमोचन मिलता है।
सुस्थिर हो दुःखित प्राणी इत्यादि-साक्षी. ६१, ६। २. बिन्ती॥

५९. शतपति कर्णीलिय। पितरका बचाया जाना।

(प्रेरित १०-१२.)

१, ग. ईश्वरसे डरनेवाला संसारी। कैसरियामें कर्णीलिय नाम एक शतपति था ; वह अपने सारे घराने समेत ईश्वरसे डरता था। उसने दर्शनमें ईश्वरका एक दूत अपने पास आते देखा, जिसने उससे कहा, "हे कर्णीलिय, तेरी प्रार्थनायें और तेरे दान स्मरणके लिये ईश्वरके आगे पहुंचे हैं। और अब मनुष्योंको याफो नगर भेजके शीमोन पितरको बुला ; वह तुझसे बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे"। तब कर्णीलियने दो सेवकों और एक योद्धाको भेजा।

२, ग. पितरका दर्शनसे शिक्षा पाना। दूसरे दिन जब वे मार्गमें चलते और नगरके निकट पहुंचे, तब पितर दो पहरके निकट प्रार्थना करनेको कोठेपर चढ़ा। वहां उसने दर्शनमें बड़ी चद्दरकी नाईं किसी पात्रको, चार कोनोंसे बांधे हुए और स्वर्गसे पृथिवीकी ओर लटकाये हुए, देखा। उसमें बहुत प्रकारके अपवित्र अशुद्ध पशु थे। और एक शब्दने कहा कि "हे पितर, उठ, मार और खा"। पितरने कहा, "हे प्रभु ऐसा न होवे, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई"। शब्दने कहा कि "जो कुछ ईश्वरने शुद्ध किया है, उसको तू अशुद्ध मत कह"। यह तीन वार हुआ, और वह पात्र फिर स्वर्गपर उठा लिया गया। जब पितर अपने मनमें दुबधा करता था कि यह दर्शन क्या है ; तब वे मनुष्य, जो कर्णीलियकी ओरसे भेजे गये थे, उसके घरकी डेवढ़ीपर खड़े हुए और पूछते थे, "क्या शीमोन पितर यहां पाहुन है"? और आत्माने पितरसे कहा, "तू उठके बेखटके इन लोगोंके संग चला जा, क्योंकि मैंने उन्हें भेजा है"। तब पितरने उन्हें भीतर बुलाके उनकी पहुनाई किई, और दूसरे दिन वह उनके संग कैसरियाको गया।

३, ग. पितर कर्णीलियके घरमें। कर्णीलिय अपने कुटुम्बों और प्रिय मित्रोंको एकट्ठे बुलाके उनकी बाट जोहता था। जब पितर पहुंचा, तब कर्णीलियने उसको अपने दर्शनका समाचार सुनाके अन्तमें कहा कि "आपने अच्छा किया, जो आये हैं ; और अब, जो कुछ ईश्वरने आपको आज्ञा दिई है,

बोले सुननेको हम सब यहां एकट्ठे हुए हैं"। तब पितरने मुंह खोलके कहा, 'मुझे सचमुच बूझ पड़ता है, कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है। परन्तु हर एक देशके लोगोंमें, जो उससे डरता है और धर्म्मके कार्य्य करता है, सो उससे ग्रहण किया जाता है"। इसपर उसने उनको यीशुके दुःख भोग, मृत्यु और फिर जी उठनेका सुसमाचार सुनाके कहा कि "जो कोई उसपर विश्वास करे, सो पापमोचन पावेगा"। वह ये बातें कहताही था कि पवित्रात्मा वचनके सब सुननेहारोंपर पड़ा। और पितरने आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभुके नामसे बपतिस्मा दिया जाय। — जब पितर यिरूशलीमको गया, तब यहूदी विश्वासी लोग उससे बिबाद करने लगे और बोले, "तूने संसारी लोगोंके यहां जाके उनके संग खाया"। पितरने उनको वर्णन किया कि "मैंने दर्शनमें ईश्वरकी ओरसे आज्ञा पाई कि मैं संसारियोंको अपवित्र और अशुद्ध न समझके उनको भी खीष्टका सुसमाचार प्रचार करूं, और जब मैंने ऐसा किया, तब उनपर भी पवित्र आत्मा उंडेला गया"। यह सुनके वे चुप हुए और ईश्वरकी स्तुति करके बोले कि "तब तो ईश्वरने अन्यदेशियोंको भी पश्चात्ताप दान किया है, कि वे जीवें"।

ग. योहन १०, १६. मेरी और भेड़ें हैं, जो इस भेड़शालाकी नहीं हैं, मुझे उनको भी लाना होगा, और वे मेरा शब्द सुनेंगीं, और एक झुंड और एक रखवाला होगा।
धर्म्मके राजा सर्व बिजयी इत्यादि-साक्षी. १०३, १-३। ३. निर्णय।

४, ग. पितरका बन्दीगृहसे बचाया जाना। जब बहुत लोग विश्वास करके प्रभुसे मिल गये, तब हेरोद अग्रिपा राजाने मण्डलीके कई एक जनोंपर हाथ बढ़ाये। उसने योहनके भाई याकूबको खड्गसे मार डाला और पितरको भी वध करनेके लिये पकड़के बन्दीगृहमें डाला। रातको जब पितर दो योद्धाओंके बीचमें दो जंजीरोंसे बांधा हुआ सोता था, और पहरुए द्वारके आगे बन्दीगृहकी रक्षा करते थे, तब परमेश्वरके एक दूतने आके पितरको जगाके कहा, "शीघ्र उठके मेरे पीछे हो ले"। जंजीरें उसके हाथोंसे गिर पड़ीं। और वे निकलके पहिले और दूसरे पहरेमेंसे जाके नगरमें जानेके लोहे फाटक पर पहुंचे, जो आपसे आप उनके लिये खुल गया, और वे एक गलीके अन्तलों

बैठे; वहां दूत पितरके पाससे चला गया। तब पितरको चेत हुआ, और उसने कहा, "अब मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभुने अपना दूत भेजके मुझे हेरोदके हाथसे छुड़ाया है"। और उसने मार्कके घरपर, जहां बहुत लोग एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे, आके डेवढ़ीके द्वारपर खटखटाया। तब एक दासीने आके पितरका शब्द पहचानके आनन्दके मारे द्वार न खोला, परन्तु भीतर दौड़के बताया कि "पितर द्वारपर खड़ा है"; पर उन्होंने प्रतीति न किई। जब पितर खटखटाता रहा, तब वे द्वार खोलके उसे देखके विस्मित हुए। परन्तु उसने हाथसे उन्हें चुप रहनेका सैन करके वर्णन किया कि प्रभुने किस रीतिसे मुझे बन्दीगृहसे छुड़ाया है। — थोड़े दिन पीछे ईश्वरके एक दूतने हेरोदको मारा कि वह कीड़ोंसे खाया गया और प्राण छोड़ दिया। परन्तु ईश्वरका वचन अधिक २ फैलता गया।

ग. गीत ६८, २०. सर्वशक्तिमान हमारी मुक्तिके लिये सर्वसामर्थी है और मृत्युसे छुड़ाना परमेश्वर प्रभुहीका काम है।
मांगी तेरे हर प्रकारके इत्यादि-साखी. ९७, ४। १. निर्णय—सब जोखिमसे बचाता इत्यादि॥

---

६०. पावलकी पहिली प्रचार यात्रा।

(प्रेरित १३+१४.)

१, ग. पावलका कुप्रस टापूके सालामी और पाफो नगरोंमें प्रचार करना। शावल, जो अब अपनेको पावल कहता था, सूरिया देशके अन्तैखिया नगरमें उपदेश करता रहता था। उस नगरमें विश्वासी लोग पहिले खीष्टियान कहलाये। वहांसे पावल और बर्णबा दूसरे देशोंमें सुसमाचार सुनानेको, पवित्र आत्माके चलानेसे भेजे गये। उन्होंने पहिले कुप्रस टापूके सालामी नगरमें जाके ईश्वरका वचन प्रचार किया। तब वे टापूके बीचसे पाफो नगरलों पहुंचे; वहांके सर्जिय पावल नाम प्रधानने उनको अपने पास बुलाके ईश्वरका वचन सुनने चाहा; परन्तु बरयीशु नाम टोन्हा उसका साम्ना करके प्रधानको विश्वास करनेसे बहकाने चाहता था; तब पावलने कहा, "सारे कपट और कुचालसे भरे हुए शैतानके पुत्र, क्या तू प्रभुके सीधे

मार्गोंको टेढ़ा करना न छोड़ेगा ? अब देख, प्रभुका हाथ तुझपर है, और तू किसने समयलों अंधा होगा"। तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उसपर पड़ा, कि वह टटोलने लगा। प्रधानने यह देखके अचम्भित हो विश्वास किया।

ग. १ योहन ३, ८. जो पाप करता है, सो शैतानसे है, क्योंकि शैतान आरम्भसे पाप करता है। ईश्वरका पुत्र इस लिये प्रगट हुआ, कि शैतानके कामोंको लोप करे।
आवे प्रभु तेरा राज्य इत्यादि-साक्षी. १००, १ । २. निर्णय।

२, ग. पावलका पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें प्रचार करना। पावल और बर्णबा पाफोसे जहाज खोलके पंफूलिया देशके पर्गा नगरमें आये, और आगे बढ़के पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पहुंचे। वहां पावलने यीशुके दुःख भोग, मृत्यु और जी उठनेके विषय उपदेश देके अन्तमें कहा, "इस लिये हे भाइयो, जानो कि यीशुके द्वारा पापमोचनकी कथा तुमको सुनाई जाती है। और उसीके हेतुसे हर एक विश्वासी जन निर्दोषी ठहराया जाता है"। अगले विश्रामवार नगरके प्रायः सब लोग ईश्वरका बचन सुननेको एकट्ठे आये। परन्तु यहूदी लोग संसारियोंको देखके डाहसे भर गये और विवाद और निन्दा करते हुए पावलकी बातोंके विरुद्ध बोलने लगे। तब पावल और बर्णबाने कहा, "अवश्य था कि ईश्वरका बचन पहिले तुम्होंसे कहा जाय; परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवनके अयोग्य ठहराते हो, सो देखो, हम अन्यदेशियोंकी ओर फिरते हैं"। तब अन्यदेशी लोगोंने आनन्दित होके विश्वास किया। और प्रभुका बचन उस सारे देशमें फैलने लगा। परन्तु यहूदियोंने पावल और बर्णबा पर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानोंमेंसे निकाल दिया।

ग. इब्रानी १३, १७. अपने प्रधानोंकी मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि जैसे कि लेखा देंगे, तैसे तुम्हारे प्राणोंके लिये चौकी देते हैं, इस लिये कि वे इसको आनन्दसे करें और कहर कहरके नहीं, क्योंकि यह तुम्हारे लिये निष्फल है।

सब हैं भूले भ्रम अधीन इत्यादि-साक्षी. १००, २ । २. निर्णय।

३, ग. पावलका इकोनिया, लुस्त्रा और दर्बी नगरमें प्रचार करना। तब उन्होंने इकोनिया नगरमें जाके प्रचार किया। वहांके बहुत

यहूदियों और यूनानियोंने विश्वास किया। परन्तु न माननेहारे यहूदियोंने उन्हें पत्थरवाह करनेको विचार किया। इस लिये पावल और बर्णबा यह जानके लुकाओनिया देशके लुस्त्रा नगरमें जाके सुसमाचार प्रचार करने लगे। वहां एक मनुष्य था, जो अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा और कभी नहीं चला था। वह पावलको बात करते सुनता था। और जब पावलने उसकी ओर ताकके मालूम किया, कि इसको चंगा किये जानेका विश्वास है, तब बड़े शब्दसे कहा, "अपने पांवोंपर सीधा खड़ा हो"। और वह मनुष्य कूदने और फिरने लगा। लोगोंने यह देखके ऊंचे शब्दसे कहा, "देवगण मनुष्योंके समान होके हमारे पास उतर आये हैं"। और जूपितरका याजक बैलों और फूलके हारोंको लाके लोगोंके संग बलिदान किया चाहता था। परन्तु पावल और बर्णबाने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और पुकारके बोले, "हे मनुष्यो, यह क्यों करते हो, हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ विषयोंसे जीवते ईश्वरकी ओर फिरो"। यह कहनेसे उन्होंने लोगोंको कठिनतासे रोका कि वे उनके आगे बलिदान न करें। परन्तु कितने यहूदियोंने अन्तैखिया और इकोनियासे आके लोगोंको मनाया, पावलको पत्थरवाह किया और यह समझके कि वह मर गया है, उसे नगरके बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब शिष्य लोग उस पास घिर आये, तब उसने उठके नगरमें फिर प्रवेश किया। और दूसरे दिन उसने बर्णबाके संग दर्बीको जाके सुसमाचार सुनाया और बहुतोंको शिष्य किया।

४, ग. **पावलका सूरियाके अन्तैखिया नगरको लौटना।** तिसपर वे लुस्त्रा, इकोनिया और अन्तैखियाको लौटे, और यह उपदेश करते हुए कि "विश्वासमें बने रहो, और कि हमें बड़े क्लेशसे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना होगा", शिष्योंके मनको स्थिर करते गये। और उन्होंने हर एक मण्डलीमें प्राचीनोंको ठहराया। पिसिदियासे होके वे पंफूलियामें आये, और पर्गामें वचन सुनाके अत्तालिया नगरको गये। वहांसे वे जहाजपर अन्तैखियाको चले, जहांसे वे उस कामके लिये, जो उन्होंने पूरा किया था, भेजे गये थे। वहां पहुंचके उन्होंने मण्डलीको एकट्ठी करके बताया कि ईश्वरने हमारे साथ कैसे

बड़े कार्य्य किये और कि उसने अन्यदेशियोंके लिये विश्वासका द्वार खोल दिया है ।

ग. रोमी १, १६. मैं खीष्टके सुसमाचारसे नहीं लजाता हूं, इस लिये कि हर एक विश्वास करनेहारेके लिये वह त्राणके निमित्त ईश्वरका सामर्थ्य है ।
तेरे प्रण हैं अविनीत इत्यादि-वाणी. १००, ३ । २. बिन्ती ॥

---

६१. पावलकी दूसरी प्रचार यात्रा ।

(प्रेरित १६-१८.)

१, ग. पावलका एशिया मैनोरकी मण्डलियोंको देखके त्रोआमें पहुंचना । उसके पीछे पावलने सीलाको चुन लिया और उसके संग अन्तिखियासे निकलके मण्डलियोंको स्थिर करता हुआ एशिया मैनोरके उन नगरोंमें फिरा, जिनमें उसने पहिले ईश्वरका वचन प्रचार किया ; लुस्त्रामें उसने तिमोथिय नाम एक शिष्यको पाया, जो भाइयोंके बीचमें अपनी सुचालचलन से प्रसिद्ध था । उसीको पावल अपना सहायक बनाके साथ ले गया । वे नगर २ जाते हुए त्रोआमें पहुंचे । वहां पावलने दर्शनमें एक माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ देखा, जिसने उससे बिन्ती करके कहा, कि "उस पार आके हमारा उपकार कीजिये" ।

२, ग. पावलका फिलिपी नगरमें प्रचार करना । इस दर्शनसे निश्चय हो कि प्रभु हमको माकिदोनियामें सुसमाचार सुनानेके लिये बुलाता है, पावल और उसके संगी माकिदोनियाकी राजधानी फिलिपीमें जाके प्रचार करने लगे । वहां लुदिया नाम एक बैजनी वस्त्र बेचनेहारी स्त्री थी, जो ईश्वर का उपासना किया करती थी । उसका मन प्रभुने खोला, कि वह पावलकी बातोंपर चित्त लगावे ; और उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया । तब कुछ दिनके पीछे पावलने एक आगमवक्ता भूतसे ग्रसित दासीको चंगा किया, तब उस दासीके स्वामियोंने नगरके अध्यक्षोंको उस्काया कि उन्होंने पावल और सीलाके कपड़े फाड़े और उन्हें बहुत. घायल करके बन्दीगृहमें डाला ।

आधी रातको पावल और सीला प्रार्थना करते हुए ईश्वरका भजन गाते थे । तब अचानक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृहकी नेवें हिलीं, सब द्वार खुल गये और सभोंके बंधन खुल पड़े । बन्दीगृहके रक्षकने यह देखके खड्ग खींचा और अपनेको मार डालने चाहा, क्योंकि उसने समझा कि बंधुवे भाग गये हैं । परन्तु पावलने पुकारके कहा, "अपनेको कुछ दुःख न देना, क्योंकि हम सब यहां हैं" । तब रक्षकने कम्पित होके पावल और सीलाके पाँव पकड़के कहा, "हे प्रभुओ, त्राण पानेको मुझे क्या करना होगा" ? उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु ख्रीष्टपर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा" । और वे उसको और उसके घरके सब लोगोंको प्रभुका वचन सुनाने लगे । तब रक्षकने उसी रातको अपने सब लोगोंके साथ बपतिस्मा लिया, पावल और सीलाके घावोंको धोया, उन्हें अपने घरमें लाके उनके आगे भोजन रखा और अपने सारे घराने समेत ईश्वरपर विश्वास करनेसे आनन्दित हुआ । बिहान हुए अध्यक्ष लोग यह सुनके कि पावल और सीला रोमी हैं, डर गये, क्योंकि उन्होंने उनको विचारके बिना लोगोंके आगे मारा और बन्दीगृहमें डाला । इस लिये वे आपही आके उनको बन्दीगृहसे बाहर लाये ।

३, ग. पावलका थेसलोनिका और बिरैया नगरोंमें प्रचार करना । पावल और सीलाने वहांसे निकलके थेसलोनिका नगरमें आके प्रचार किया । और बहुत लोग ईश्वरका वचन मानके उनसे मिल गये । परन्तु अविश्वासी यहूदियोंने डाह करके धूम मचाके यह कहा कि "ये लोग, जिन्होंने जगतको उलटा पुलटा किया है, यहां भी आये हैं और यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा राजा है, कैसरकी आज्ञाओंके विरुद्ध करते हैं" । तब पावल और सीलाने बिरैया नगरको जाके प्रचार किया । वहांके लोगोंने वचनको ग्रहण किया । और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यूंही हैं कि नहीं । और उनमेंसे बहुतोंने विश्वास किया । परन्तु थेसलोनिकाके यहूदी लोग वहां भी आके लोगोंको उस्काने लगे ; इस लिये भाई लोग पावलको बिदा करके आथीनी नगर तक लाये ।

अ. १ योहन १, ७. यीशु ख्रीष्टका लोहू हमें सब पापसे शुद्ध करता है । चहूं दिशके द्वीप और देश इत्यादि-साखी. १००, ४ । १ निर्णय—सब जोखिमसे बचाता इत्यादि । ४ भाग ।

ग. रोमी ५, १. जब कि हम बिश्वाससे धर्म्मी ठहराये गये हैं, तो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारा हमें ईश्वरसे मिलाप है ।
हे ईश्वर तेरा नाम इत्यादि-साखी. १०१, १+२ । ४ भाग ।

४, ग. पावलका आथीनी नगरमें प्रचार करना । आथीनीमें पावलने प्रतिदिन सभाके घर और चौकमें प्रचार किया । तब ज्ञानियोंमेंसे कितने उससे विवाद करने लगे और बोले, "यह बकवादी क्या कहने चाहता है, वह दूसरे देवताओंका प्रचारक देख पड़ता है" । और उन्होंने उसे अरेयो-पागा नाम स्थानपर लाके कहा, "क्या हम जान सकते कि यह नया उपदेश क्या है" ? तब पावलने अरेयोपागके बीचमें खड़ा होके कहा, "मैं आप लोगों



को बड़े देवपूजक देखता हूं । और मैंने फिरते हुए यहां एक वेदी भी पाई, जिसपर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वरको । सो जिस ईश्वरको आप लोग बिन जाने पूजते हैं, उसको कथा मैं सुनाता हूं । ईश्वर, जिसने जगत और सब कुछ, जो उसमें है, बनाया, सो हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें वास नहीं करता है । और न उसको किसी वस्तुका प्रयोजन है कि वह मनुष्योंके

'हाथोंकी सेवा लेवे, क्योंकि वह आपही सभोंको जीवन, स्वास और सब कुछ देता है। वह हममेंसे किसीसे दूर नहीं है, क्योंकि हम उसीसे जीते, फिरते और होते हैं। जैसे आप लोगोंके यहांके कितने कवियोंने भी कहा है कि हम तो उसके वंश हैं। सो जो हम ईश्वरके वंश हैं, तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने, रूपे अथवा पत्थरके (अर्थात मनुष्यकी कारीगरी और कल्पनाकी गढ़ी हुई वस्तुके) समान है, हमें उचित नहीं है। ईश्वर अज्ञानताके समयोंकी आनाकानी करके अभी सर्वत्र सब मनुष्योंको पश्चात्ताप करनेकी आज्ञा देता है क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्यके द्वारा, जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाके नियुक्त किया है, धर्मसे जगतका न्याय करेगा"। मृतकोंके जी उठनेकी बात सुनके कितने ठट्ठा करने लगे, परन्तु कितनोंने भी उससे मिल जाके विश्वास किया।

५, ग. पावलका करिन्थ नगरमें प्रचार करना और अन्तैखियाको लौटना। इसके पीछे पावल करिन्थ नगरमें आया। वहां वह अकूला नाम एक यहूदी और उसकी स्त्री प्रिस्कीलाको पाके उनके यहां गया। और इस लिये कि पावल और उनका एकही उद्यम था, अर्थात तम्बू बनाना, उसने उनके यहां रहके कमाया; परन्तु हर एक विश्रामवार उसने सभाके घरमें उपदेश दिया। जब बहुतेरे विरोध और निन्दा करने लगे, तब उसने कपड़े फाड़के उनसे कहा, "तुम्हारा लोहू तुम्हारेही सिरपर होवे, मैं निर्दोषी हूं, अबसे मैं अन्यदेशियोंके पास जाऊंगा"। परन्तु प्रभुने रातको दर्शनके द्वारा पावलसे कहा, "मत डर, परन्तु बात कर और चुप मत रह, क्योंकि मैं तेरे संग हूं कि कोई तुझे दुःख न देवे"। तब वह ईश्वरका वचन सिखाते हुए डेढ़ बरस वहां रहा। और बहुत लोगोंने विश्वास करके बपतिस्मा लिया। उसके पीछे वह भाइयोंसे बिदा होके जहाजपर चढ़ा और इफिस, कैसरिया और यिरूशलीमको होके अन्तैखियाको लौट गया।

ग. रोमी १, १९+२०. ईश्वरके विषयका ज्ञान अन्यदेशियोंमें प्रगट है क्योंकि ईश्वरने उनपर प्रगट किया। क्योंकि जगतकी सृष्टिसे उसके अदृश्य गुण, अर्थात उसके सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं, क्योंकि वे उसके कार्य्योंसे पहचाने जाते हैं, यहां लों कि वे मनुष्य निरुत्तर हैं।

अब यीशुका सन्देश इत्यादि-साखी. १०१, ३+४ । ३. निर्णय ॥

६२. पावलकी तीसरी प्रचार यात्रा ।

(प्रेरित १९-२१.)

१, ग. पावलका इफिस नगरमें प्रचार करना । फिर कुछ दिन रहके वह अन्तेखियासे निकलके एशिया मैनोरकी मण्डलियोंको स्थिर करता हुआ फिरा और इफिसमें आया । वहां उसने दो बरस रहके प्रतिदिन सभाके घरमें उपदेश दिया । और पराक्रमसे प्रभुका वचन फैला और प्रबल हुआ । इफिसमें अर्त्तिमी देवीका एक प्रसिद्ध मन्दिर था । सोनार लोग उस मन्दिरकी चांदीकी मूर्त्ति बनाके बहुत लाभसे बेचते थे । अब पावल मूर्त्तिपूजाके विरुद्ध उपदेश देता था, और इस रीतिसे उनकी आमदनीके घटनेका डर था । इस लिये वे बड़ा हुल्लड़ मचाने लगे । दीमीत्रिय नाम एक सोनारने अपने संगी कारीगरोंको एकट्ठे करके उनसे कहा, "तुम जानते हो कि इस कामसे हमोंकी सम्पत्ति प्राप्त होती है, और तुम देखते और सुनते हो कि इस पावलने यह कहके कि जो हाथोंसे बनाये जाते, सो ईश्वर नहीं है, आसियाके बहुत लोगोंको समझाके भरमाया है । इस रीतिसे हमोंको केवल यह डर नहीं है कि हमारा उद्यम निन्दित हो जाय, परन्तु यह भी कि बड़ी देवी अर्त्तिमीका मन्दिर तुच्छ समझा जाय" । वे यह सुनके क्रोधसे भर गये और दो घड़ीसे अटकल चिलाये, "इफिसियोंकी अर्त्तिमीकी जय" । इससे सारे नगरमें बड़ी गड़बड़ाहट हुई । पावलने लोगोंके बीच जाने चाहा, परन्तु शिष्योंने उसको जाने न दिया । जब हुल्लड़ थम गया, तब पावल शिष्योंको अपने पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जानेको चल निकला । उस सारे देशमें फिरते उपदेश देके वह युनान देशमें आया ।

ग. योहन ४, २४. ईश्वर आत्मा है, और अवश्य है, कि उसका भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाईसे भजन करें ।
प्रभु यीशु अपने राज्यका इत्यादि-खाको. १०२, १+२ । २ आज्ञा ।

२, ग. पावलका मिलीतमें इफिसके प्राचीनोंसे विदा होना । युनान देशमें ३ मास रहके पावल जहाजपर चढ़ा, जिसने यिरूशलीमको जाके पेन्तीकोष्ट पर्ब्ब करे । जल यात्रामें उसने मिलीत नगरसे इफिस भेजके मण्डली के प्राचीनोंको बुलाया । जब वे उस पास आये, तब उसने उनसे कहा, "मैं

यिरूशलीमको जाता हूं और जानता हूं कि वहां बन्धन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं । परन्तु मैं किसी बातकी चिन्ता नहीं करता हूं । मैं जानता हूं कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे । सो अपने विषयमें और सारे झुंडके विषयमें, जिसके बीचमें पवित्र आत्माने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं, सचेत रहो कि तुम ईश्वरकी मण्डलीकी ठीक रीतिसे चरवाही करो, जिसे उसने अपने लोहूसे मोल लिया है । और अब हे भाइयो, मैं तुम्हें ईश्वरको सौंप देता हूं" । यह बातें कहके उसने अपने घुटने टेकके उन सभोंके संग प्रार्थना किई । और वे सब बहुत रोये और उसके गलेमें लिपटके उसे चूमने लगे । वे सबसे अधिक उस बातसे शोक करते थे, जो उसने कही थी कि "तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे" । तब उन्होंने उसे जहाज लों पहुंचाया ।

ग. मत्ती १६, २५. यीशुने कहा, जो कोई अपना प्राण बचाने चाहै, सो उसे खोवेगा । परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे, सो उसे पावेगा ।
मुक्ति दायक समाचारको इत्यादि-साखी. १०२, ३ + ४ । १. आत्मा । २. विन्ती ॥

---

६२. पावल बन्धुवाईमें ।

(प्रेरित २१-२८.)

१, ग. पावलका यिरूशलीममें पकड़ा जाके कैसरियामें पहुंचाया जाना । पावल यिरूशलीममें पहुंचके मन्दिरमें गया । वहां एशियाके यहूदियोंने उसको देखके लोगोंको उस्काया और पुकारा, "इसराएली लोगो, सहायता करो, यही वह मनुष्य है, जो व्यवस्थाके विरुद्ध हर स्थानमें उपदेश देता है" । तब उन्होंने पावलको पकड़के मार डालने चाहा । परन्तु सहस्रपतिने आके उसे उनके हाथोंसे बचाया और दो जंजीरोंसे बांध करके पूछा, "यह कौन है और क्या किया है" ? जब वह हुल्लड़के मारे निश्चयतासे कुछ नहीं जान सका, तब उसको गढ़में ले जाने और कोड़े मारनेकी आज्ञा किई । पावलने कहा, "क्या रोमी मनुष्यको, जो दण्डके योग्य नहीं ठहराया गया है, कोड़े मारना तुम्हें उचित है" ? सहस्रपति यह सुनके कि वह रोमी है, और चैन

उसे बांधा है, डर गया और दूसरे दिन उसको बन्धनोंसे खोलके यहूदियोंकी सभाके आगे खड़ा किया, जिस्तें निश्चय जाने कि वे उसपर क्या दोष लगाते हैं। जब पावलने सभाके आगे कहा कि "मैं फरीशी हूं और मृतकोंके जी उठनेकी आशाके विषयमें मेरा विचार किया जाता है," तब फरीशियों और सदूकियोंमें विवाद होने लगा, और सभा विभिन्न हुई। जब बहुत धूम और झगड़ा हुआ, तब सहस्रपति डरने लगा कि क्या जाने पावल उनसे फाड़ा जाय। इस लिये उसने पल्टनको आज्ञा दिई कि "जाके उसको उनके बीचमें से छीनके गढ़में लाओ"। और पीछे जब सहस्रपतिने सुनने पाया कि ४० यहूदियोंने यह प्रण बांधा है कि "जबलों हम पावलको मार न डालें, तब लों यदि कुछ खावें अथवा पीवें, तो हमको धिक्कार होवे," तब उसने दो शतपतियोंको बुलाके उनसे कहा कि "४७० योद्धाओंको लेके पावलको कैसरियाके फीलिक्स अध्यक्षके पास बचाके ले जाओ"। उन्होंने इस आज्ञाके अनुसार पावलको पहुंचाया। परन्तु फीलिक्सने दो बरस तक उसको बन्दीगृहमें रहने दिया।

ग. याकूब १, १२. जो मनुष्य परीक्षामें स्थिर रहता है, सो धन्य है, क्योंकि वह खरा निकलके जीवनका मुकुट पावेगा। जिसकी प्रतिज्ञा प्रभुने उन्हें, जो उसको प्यार करते हैं, दिई है।
परमेश्वर है एक दृढ़ पहाड़ इत्यादि-साखी. ९२, १। ९. आज्ञा। ७. बिन्ती।

२, ग. पावल फीष्ट और अग्रिपाके आगे। फीलिक्सके पीछे फीष्ट अध्यक्ष हुआ। उसने यहूदियोंका मन रखनेकी इच्छा कर पावलसे कहा, "क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां मेरे आगे इन बातोंके विषयमें विचार किया जायगा"। (यहूदियोंने फीष्टकी बिन्ती किई कि पावलको यिरूशलीममें भेजिये, जिस्तें वहां उसका विचार किया जावे। उनकी इच्छा थी कि यदि भेजे, तो हम रस्तामें उसको मार डालेंगे) पावलने उत्तर दिया, "यहूदियोंका मैंने कुछ अपराध नहीं किया है, क्योंकि जिन बातोंसे वे मुझपर दोष लगाते हैं, उनमें से कोई बात नहीं ठहरती है, इस लिये कोई मुझे उन्होंके हाथ भी नहीं सौंप दे सकता है, मैं कैसरकी दोहाई देता हूं"। तब फीष्टने कहा, "तूने कैसरकी दोहाई दिई है, तू कैसरके पास जायगा"। जब कितने दिन बीत गये, तब

अग्रिपा राजा फीष्टको नमस्कार करनेके लिये कैसरियामें आया। फीष्टने उसको पावलकी कथा सुनाई। तब अग्रिपाने कहा, "मैं आप भी उस मनुष्यकी सुनने से प्रसन्न होता"। फीष्टने कहा, "आप कल उसको सुनेंगे"। सो दूसरे दिन पावल राजाके आगे बुलाया गया। अग्रिपाने उससे कहा, "तुझे अपने विषयमें बोलनेकी आज्ञा दिई जाती है"। तब पावलने ख्रीष्टके दुःख भोग और जी उठने, अपने मन फिराने, फिरते हुए उपदेश देने और निदान मन्दिरमें पकड़े जानेके विषयमें वर्णन किया। यह सुनके फीष्टने बड़े शब्दसे कहा, "हे पावल तू बौड़हा है, बहुत विद्या तुझे बौड़हा करती है"। पर अग्रिपाने कहा, "तू थोड़ेमें मुझे ख्रीष्टियान होनेको मनाता है," और अलगमें उसने फीष्टसे कहा, "जो यह मनुष्य कैसरकी दोहाई न दिये होता, तो छोड़ा जा सकता"।

३, ग. जल यात्रामें जहाजका टूट जाना। रोम जानेके लिये पावल दूसरे बन्धुवोंके साथ एक शतपतिके हाथ सौंपा गया। और उन्होंने जहाज पर चढ़के खोल दिया। समुद्रपर बड़ी आंधी बहने लगी और अन्तमें इतनी प्रचण्ड हुई कि उसके बच जानेका कुछ आशा न था। तब पावलने जहाजके लोगोंके बीचमें खड़ा होके उनसे कहा, "हे मनुष्यो, ईश्वरका एक दूत इसी रातको मेरे निकट खड़ा हुआ और कहा, हे पावल, तुझे कैसरके आगे खड़ा होना अवश्य है। और देख, ईश्वरने सभोंको, जो तेरे संग जल यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। इस लिये हे मनुष्यो, ढाढ़स बांधो, क्योंकि तुममेंसे किसी के सिरसे एक बाल न गिरेगा"। तब उन सभोंने ढाढ़स बांधके भोजन किया, क्योंकि पहिले डरके मारे बहुत उपवास किया। और उन्होंने जहाजको मलिता (मलता) टापूपर टिकाया कि जहाजका अगला भाग बालूमें गड़ गया और हिल न सका, परन्तु पीछला भाग लहरोंकी बरियाईसे टूट गया। तब योद्धा-ओंका यह परामर्श था कि बन्धुवोंको मार डालें। ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागें। परन्तु शतपतिने पावलको बचानेकी इच्छासे उन्हें उस मतसे रोका, और जो पैर सकते थे, उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके तीरपर निकल चलें, और दूसरोंको कि कोई तख्तोंपर और कोई जहाजमेंकी वस्तुओंपर निकल जायें। इस रीतिसे सब कोई तीरपर निकले।

४, ग. पावल मलता टापूपर। टापूके निवासियोंने उनको बहुत प्रेमसे ग्रहण किया और मेंह और जाड़के कारण उनके लिये बड़ी आग सुलगाई। जब पावलने लकड़ी बटोरके आगपर रखी, तब एक सांपने आंचसे निकलके उसका हाथ धर लिया। टापूके लोगोंने यह देखके कहा, "निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है, क्योंकि जोभी समुद्रसे बच गया, तौभी दण्डदायक उसे जीते रहने नहीं देता है"। परन्तु पावलने सांपको आगमें झटक दिया और कुछ दुःख न पाया। उन्होंने समझा कि वह अचांचक मरके गिर पड़ेगा। परन्तु जब देरी तक देखते रहे कि उसको कुछ हानि नहीं हुई, तब उनका विचार दूसरा हुआ, और उन्होंने कहा, "यह तो देवता है"। पावलने उस टापूके प्रधानके पिताको और दूसरे रोगियोंको चंगा किया।

५, ग. पावल रोममें। तीन मासके पीछे वे एक दूसरे जहाजपर चढ़के चल निकले और रोम नगरको पहुंचे। वहां पावलको एक योद्धाके संग जो उसकी रक्षा करता था, अकेला रहनेकी आज्ञा हुई। और वह दो बरस भर अपने भाड़के घरमें रहके सभोंको, जो उस पास आते थे, ग्रहण किया। और बिना रोकटोक वह बड़े साहसके साथ प्रभु यीशु ख्रीष्टके विषयकी बातें सिखाता रहा।

ग. गलाती ५, २२-२४. आत्माका फल यह है, प्रेम आनन्द, मिलाप, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम। कोई व्यवस्था ऐसे २ कामोंके विरुद्ध नहीं है। जो ख्रीष्टके लोग हैं, उन्होंने शरीरको उसके रागों और अभिलाषों समेत क्रूशपर चढ़ाया है।
सुस्थिर जो दुःखित प्राणी इत्यादि-साखी. ६७, ६. ७+९।
१. निर्णय — सब जोखिमसे बचाता॥

जोड़ पत्र।

१, ग. प्रेरित पावल, पितर याकूब और योहनकी पीछली दशा। रोममें दो बरस रहनेके पीछे पावलकी क्या दशा हुई, सो हम निश्चयतासे नहीं जानते। पर परम्परागत बात यह है कि उसने छुट्टी पाके एक चौथी प्रचार यात्रा किई, जिसमें वह स्पेन देश तक पहुंचा, तब फिर पकड़ा जाके

और बन्धुवा होके रोममें पहुंचाया गया। उस समयमें रोमका कैसर नेरो था, जो इतना क्रूर था, कि उसने अपनी माता, पत्नी, और गुरुको घात करवाया। बहुत घरोंको जलते हुए देखनेसे मैं खुश होऊं, अपने मनमें कहके उसने रोम नगरका एक बड़ा अंश फूंक दिया। जब निवासी लोग इस बातके कारण बहुत असन्तुष्ट हुए, तब उसने दोष अपने परसे खीष्टानोंपर लगाके कहा कि "इन्होंने आग लगाई है"। इस लिये खीष्टानोंपर भारी उपद्रव होने लगा। वैरियोंने उनको जंगली पशुओंके चमड़ोंमें लपेटके कुत्तोंके आगे फेंका, उनके सारे देहमें अलकतरा लगाके उन्हें कैसरके बगानोंमें गाड़े हुए खूटोंसे बांधा और आग लगाई जिस्तें वे मशालोंके समान रातको उंजालमय करें। उस उपद्रवमें पावलभी खड्गसे मार डाला गया। —पितरके विषयमें कहा जाता है कि वह सुसमाचार सुनाते हुए बाबुल देशलों पहुंचा और पीछे रोम नगरको गया। जहां वह कैसर नेरोकी आज्ञासे उलटा, (सिर पृथिवीकी ओर और पांव आकाशकी ओर) क्रूशपर चढ़ाया जाके मर गया। —उस समय प्रभुके भाई याकूबने भी, जो यिरूशलीममें की मण्डलीका प्रधान था, अपनी मृत्युसे सुसमाचारपर छाप दिई। महा सभाने उसको मन्दिरके कलशपर चढ़ाया, जिस्तें नीचे गिरा देवें। परन्तु उसने घुटने टेकके बिन्ती किई कि "हे परमेश्वर पिता उनपर दयाल हो, क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं"। याजकोंमेंसे एकने यह सुनके कहा, "उसको छोड़ देओ, क्योंकि वह तुम्हारे लिये बिन्ती करता है"। परन्तु उन्होंने न मानके उसको नीचे गिरा दिया और वह मर गया। —प्रभुका प्रिय शिष्य योहन पावलकी मृत्युके पीछे अधिक करके इफिसमें रहा। जिस स्थानमेंसे उसने एशिया माइनोरकी मण्डलियोंके लिये चिट्ठी किई। जब कैसर डोमिशियानके समयमें (८१-९६) खीष्टानोंपर फिर उपद्रव हुआ, तब योहन भी पकड़ा जाके रोममें पहुंचाया परन्तु मार न डाला गया। पीछे उन्होंने उसको पत्मो नाम एक जंगली टापूमें भेजा, जहां उसने दर्शन देखके अपना प्रकाशितवाक्य लिखा। डोमिशियानकी मृत्युके पीछे वह फिर छुट्टी पाके इफिसमें गया और बहुत समय तक पैत्रिक ज्वलनसे सुसमाचारको प्रचार किया। जब वह इतना बूढ़ा हो गया कि चल भी नहीं सका, तब वह गिर्जामें पहुंचाया गया और नित्य यह बात दोहराई कि "हे

बालको, आपसमें प्रेम करो"। योहन यिरूशलीमके नष्ट होनेसे पीछे तक जीया। और कहा जाता है कि प्रेरितोंमेंसे केवल वही मार्त्तुर न हुआ, पर साधारण मृत्युसे मर गया।

२, ग. ७० ईस्वीमें यिरूशलीमका नष्ट होना। यहूदियोंने रोमियोंकी प्रभुतासे अप्रसन्न होके ६६ ईस्वीमें बड़ा उलगुलान किया और अपने देशमें रहते हुए रोमियोंको नष्ट किया। उस उलगुलानको मिटानेके लिये वेसपासियान नाम एक रोमी सेनापति बड़ी सेना लेके गलीलिनामें भेजा गया। थोड़े समयमें वह समूचे देशको अपने वशमें करके यिरूशलीम तक पहुंचा। तब वह रोमका कैसर ठहराया गया, और सेनाको अपने पुत्र तितुसके हाथ सौंपके रोमको लौटा। जिस स्थानमें यीशु ३७ बरस पहिले खड़ा होके यिरूशलीमपर रोया, उसी स्थानमें तितुसने अपनी छावनी लगाके नगरको, जब २५००००० यहूदी निस्तार पर्ब्ब करनेके लिये एकट्ठे हुए थे, घेर लिया। और इस रीतिसे प्रभुकी बात पूरी हुई, "वे दिन तुझपर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझ पर मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक रखेंगे और तुझको और तुझमें तेरे बालकोंको मिट्टीमें मिलावेंगे और तुझमें पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे"। यिरूशलीमके लिये दयाका समय बीत गया था। तितुसने बड़े प्रेमसे यहूदियोंको समझाया कि "अपनेको हमारे हाथमें सौंप देओ, तब हम तुमको जीने देंगे और तुम्हारे मन्दिर और नगरको नष्ट नहीं करेंगे"। परन्तु यहूदियोंने दयाकी ऐसी बातोंको तुच्छ जानके समझा कि हम तो ईश्वरके चुने हुए लोग हैं, ईश्वर निश्चय हमको बचावेगा और बहुत आशा है कि मसीह अभी आके हमको रोमियोंसे उद्धार देगा। जब प्रेमकी बातोंने कुछ गुण नहीं किया, तब तितुसने क्रूरतासे उनको नम्र करनेकी चेष्टा किई, अर्थात उसने यहूदियोंको पकड़के दिन २ नगरके साम्ने ५०० जनोंको क्रूशोंपर चढ़ाया। पर इससे भी कुछ लाभ नहीं हुआ, क्योंकि यहूदी लोग अपनी कठोरतामें ठहर गये। — थोड़े समयमें नगरके खानेकी सब वस्तु सिरा गई। और इतना भारी अकाल पड़ा कि निवासी लोग चमड़ा और मैला, हां मनुष्यका मांसभी खाने लगे। भूख और मरीसे बहुत लोग मर गये। इसको छोड़ नगरमें तीन

झुंड हुए, जो एक दूसरेसे लड़ने लगे। इस प्रकारसे इतने मनुष्य मारे गये, कि उनके लोहूसे एक छोटा तलाव बन गया। ६००००० लोथें भीतोंपरसे बाहर फेंकी गईं "यही दण्ड देनेके दिन थे"। क्योंकि उन्होंने कहा कि "उसका लोहू हमपर और हमारे सन्तानोंपर होवे"।—अन्तमें तितुसने भीतोंको गिराया, नगरको फूंक दिया और बचे हुए यहूदियोंको आधेको मार डाला और आधेको बन्धुआईमें ले गया। इस रीतिसे वे सब देशोंमें छिन्न भिन्न किये गये। "धोखा मत खाओ, ईश्वरसे ठट्ठा नहीं किया जाता है, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, उसको लवेगा भी"॥